कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 372, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | मंगलवार 07 फरवरी 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

बदल रहा है भारत का ऊर्जा क्षेत्रः पीएम

नई दिल्लीः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को विश्वभर के निवेशकों से भारत के ऊर्जा क्षेत्र में निवेश करने की अपील की। उन्होंने कहा कि भविष्य की दुनिया में ऊर्जा क्षेत्र का बड़ा रोल रहने वाला है और भारत ऊर्जा के नए संसाधनों के विकास और ऊर्जा परिवर्तन में सबसे मजबूत आवाज बनकर उभरा है। प्रधानमंत्री वर्तमान में कर्नाटक के एक दिवसीय दौरे पर हैं। आज उन्होंने बेंगलुरु में भारत ऊर्जा सप्ताह-2023 का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में दुनियाभर के 30 से अधिक मंत्रियों की उपस्थिति रही। इस दौरान 30 हजार प्रतिनिधि, 1 हजार प्रदर्शनकर्ता और 500 वक्ता भारत के ऊर्जा भविष्य की चुनौतियां और अवसर पर चर्चा करेंगे। कार्यक्रम के दौरान, प्रधानमंत्री वैश्विक तेल व गैस संस्थानों के सीईओ के साथ गोलमेज संवाद करेंगे। प्रधानमंत्री ने कहा कि विभिन्न चुनौतियों के बावजूद भारत वर्तमान में विश्व में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बना हुआ है। एक स्थिर सरकार, निरंतर रिफॉर्म और सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण के जरिए हमने कई चुनौतियों को पार किया है। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने कहा कि 2014 के बाद से भारत की हरित ऊर्जा को लेकर प्रतिबद्धता और प्रयास दोनों को दुनिया ने देखा है। बीते 9 वर्षों में अक्षय ऊर्जा की क्षमता को 70 से 170 गिरावट किया गया है। सोलर ऊर्जा क्षमता को 20 गुना बढ़ाया गया है। पवन ऊर्जा की क्षमता में भारत चौथे नंबर पर है और इस दशक के अंत तक 50 प्रतिशत गैर जीवाश्म ईंधन क्षमता का लक्ष्य लेकर चल रहा हैं। अब हम 20 प्रतिशत एथेनॉल ब्लेंडिंग के लक्ष्य की तरफ बढ़ रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज भारत में ऊर्जा परिवर्तन को लेकर बड़े स्तर पर प्रयास चल रहे हैं। यह अध्ययन का विषय है। इसके दो पहलु हैं। पहला अक्षय ऊर्जा स्रोतों को अपनाना और दूसरा ऊर्जा संरक्षण के प्रभावी तरीकों को अपनाना। प्रधानमंत्री ने ऊर्जा क्षेत्र में भारत की रणनीति के 4 प्रमुख कार्यक्षेत्र बताए। उन्होंने कहा कि भारत अपना घरेलू उत्पादन बढ़ाने की दिशा में प्रयास कर रहा है। वितरण और विकेंद्रीकरण को बढ़ा रहा है। बायोफ्यूल, इथेनॉल और कंप्रेस्ड बायोगैस तथा सोलर ऊर्जा जैसे वैकल्पिक ऊर्जा साधनों का विस्तार कर रहा है। वहीं इलेक्ट्रिक बिजली से चलने वाले वाहनों और हाइड्रोजन के जरिए कार्बन उत्सर्जन को कम कर रहा है।

इस दौरान प्रधानमंत्री ने इंडियन ऑयल इंडोर सौलर कुकिंग प्रणाली के ट्विन टॉप मॉडल का लोकार्पण किया। यह घर के भीतर सौर ऊर्जा से खाना पकाने का क्रांतिकारी समाधान है। जो सूर्य ऊर्जा के साथ-साथ सहायक ऊर्जा स्रोतों से भी काम करता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि सोलर कुकटॉप भारत में ग्रीन एंड क्लीन कुकिंग को एक नया आयाम देने जा रहा है।

एशिया की सबसे बड़ी हेलीकॉप्टर फैक्ट्री देश को समर्पित

बेंगलुरुः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कर्नाटक की अपनी यात्रा के दौरान सोमवार को तुमकुरु में हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के हेलीकॉप्टर कारखाने को देश को समर्पित किया। पीएम मोदी ने इस दौरान तुमकुरु में ही लाइट यूटिलिटी हेलीकॉप्टर का भी अनावरण किया। इस मौके पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और सीएम बसवराज बोम्मई मौजूद रहे।

विश्व के लिए डिफेंस मैन्युफैक्च रिंग का केंद्र होगी भारत भूमिः इस दौरान रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि आने वाले समय में भारत भूमि विश्व के लिए डिफेंस मैन्युफैक्च रिंग का केंद्र होगी। इसकी शुरुआत हो चुकी है, आज का ये समारोह इसका एक बड़ा प्रमाण है। ये रक्षा क्षेत्र में भारत की आत्म निर्भरता की यात्रा में एक मील का पत्थर है। उन्होंने इस दौरान कहा कि कर्नाटक का मतलब विकास, शांति और समृद्धि और भारत का भविष्य है।

शुरु में होगा लाइट यूटिलिटी हेलीकॉप्टर का उत्पादन

615 एकड़ में फैली ग्रीनफील्ड हेलीकॉप्टर फैक्ट्री भारत की सबसे बड़ी हेलीकॉप्टर निर्माण सुविधा है। रक्षा मंत्रालय ने शनिवार को कहा था कि शुरू में यह कारखाना प्रति वर्ष करीब 30 हेलीकॉप्टरों का उत्पादन करेगा।

हालांकि बाद चरणबद्ध तरीके से इसके उत्पादन को 60 और फिर 90 प्रति वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है। ग्रीनफील्ड हेलीकॉप्टर फैक्ट्री एशिया की सबसे बड़ी हेलीकॉप्टर निर्माण सुविधा है, जो शुरूआती दिनों में लाइट यूटिलिटी हेलीकॉप्टर का उत्पादन करेगी। मालूम हो कि एलयूएच स्वदेशी रूप से डिजाइन और विकसित 3-टन क्लास, सिंगल-इंजन मल्टीपरपज यूटिलिटी हेलीकॉप्टर है। लाइट कॉम्बैट हेलीकॉप्टर और इंडियन मल्टीरोल हेलीकॉप्टर के निर्माण के साथ-साथ भविष्य में , , सिविल और मरम्मत जैसे कार्यों से इस कारखाने का विस्तार किया जा सकता है। रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि भविष्य में इस फैक्ट्री से सिविल एलयूएच के संभावित निर्यात की भी आपूर्ती की जाएगी। यह सुविधा भारत को हेलीकॉप्टरों की अपनी संपूर्ण आवश्यकता को स्वदेशी रूप से पूरा करने में सक्षम बनाएगी और भारत में हेलीकॉप्टर डिजाइन, विकास और निर्माण में आत्मनिर्भरता का गौरव प्राप्त करेगी।

अडानी मुद्दे पर संसद में चर्चा से बच रही है सरकार : राहुल गांधी

नई दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष व लोकसभा सांसद राहुल गांधी ने कहा कि अडानी समूह पर लगे आरोपों पर संसद में चर्चा होनी चाहिए। यह हजारों करोड़ का घोटाला है लेकिन केन्द्र सरकार इस मुद्दे पर चर्चा नहीं होने दे रही है। राहुल ने सोमवार को मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि सच को सामने लाने के लिए अडानी समूह पर लगे आरोपों पर चर्चा होनी चाहिए। इसलिए वह सरकार से अनुरोध करते है कि मामले पर संसद में चर्चा होने दें। उन्होंने कहा कि वह दो-तीन वर्षों से कहते आ रहे हैं कि यह सरकार हम दो हमारे दो की नीति पर काम कर रही है। उल्लेखनीय है कि हिंडनबर्ग ने अपने रिपोर्ट में अडानी समूह पर धोखाधड़ी का आरोप लगाया है। हिंडनबर्ग ने अडानी समूह पर मार्केट में हेरफेर और अकाउंट में धोखाधड़ी का आरोप लगाया है। इस आरोप के बाद अडानी ग्रुप के शेयरों में भारी गिरावट आई है।

विपक्ष इस मुद्दे पर न्यायिक जांच और संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) गठित करने की मांग कर रहा है। विपक्ष का कहना है कि भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) ने अडानी समूह में निवेश किया है। अडानी समूह को सरकारी बैंकों ने बड़े पैमाने पर लोन दे रखा है। इस लिए बड़ी संख्या में लोग प्रभावित हो सकते हैं। ऐसे में जन हित में संसद में इस मुद्दे पर चर्चा होना चाहिए।

जासूसी गुब्बारा गिराने पर चीन-अमेरिका में तनातनी

वाशिंगटन/बीजिंगः अमेरिकी आकाश में चीन के जासूसी गुब्बारों के भ्रमण से उपजा तनाव थमने का नाम नहीं ले रहा है। गुब्बारा मार गिराए जाने के बाद चीन ने अमेरिका को अंजाम भुगतने की चेतावनी दे डाली है। बीते शुक्रवार को अमेरिकी रक्षा मंत्रालय पेंटागन ने अमेरिकी आकाश में चीन के एक जासूसी गुब्बारे के उड़ान भरने की बात कही थी। शनिवार को लैटिन अमेरिका के आकाश में एक अन्य चीनी जासूसी गुब्बारे के उड़ान भरने की बात सामने आई थी। माना जा रहा था ।

छह देशों में तबाहीः तुर्किये में दोबारा भूकंप के झटके

डेढ़ हजार से ज्यादा की मौत, तुर्किये में आपातकाल की घोषणा, सीरिया में गहराया संकट

अंकारा/दमिश्कः छह देशों तुर्किये, सीरिया, लेबनान, इजराइल, साइप्रस व फिलिस्तीन में सोमवार को आए भूकंप के बाद स्थितियां जानलेवा हो गयीं हैं। सुबह रिक्टर पैमाने पर आये 7.8 तीव्रता के भूकंप से लोग संभल भी नहीं पाए थे कि शाम को पुनः आए 7.5 तीव्रता के भूकंप ने तबाही मचा दी है। इस कारण डेढ़ हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो गयी और हजारों लोग जख्मी हुए हैं। तुर्किये सरकार ने देश में आपातकाल का ऐलान कर दिया है। इस बीच, यूनाइटेड स्टेट्स जियोलॉजिकल सर्वे (यूएसजीएस) ने मृतकों की संख्या दस हजार के पार पहुंचने का दावा किया है। तुर्किये के सात प्रांतों में 284 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है और ढाई हजार से अधिक घायलों का

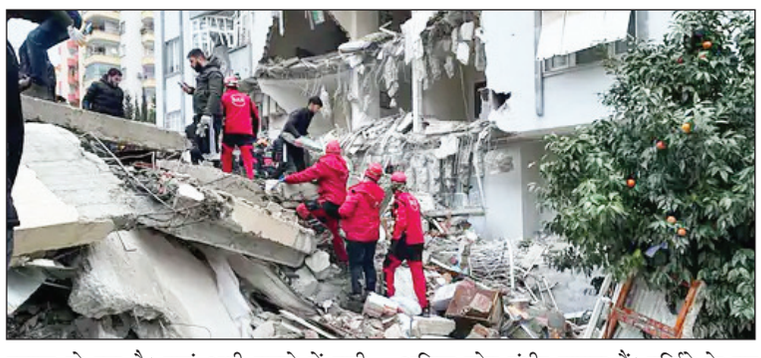

इलाज हो रहा है। यहां अभी मलबे में बड़ी संख्या में लोगों के दबे होने की उम्मीद जताई गयी है। इसी तरह सीरिया में 320 लोगों के मरने की पुष्टि हो चुकी है और सात सौ से अधिक लोग गंभीर घायल हैं। तुर्किये के गृह मंत्री सुलेमान शोयलू ने कहा कि भूकंप का बड़ा असर देश के 10 शहरों, कहमानमारश, हैटे, गाज़िएनटेप, ओस्मानिये, अदियामान, सनलिउर्फा, मलेटिया, अदाना, दियारबाकिएर और किलिस पर पड़ा है। इनके अलावा राजधानी अंकारा, नूरदगी, दियारबाकिर भी प्रभावित रहे। सीरिया की राजधानी दमिश्क, अलेप्पो, लटाकिया, हामा और टार्टस में भूकंप के कारण भीषण तबाही हुई है। इन शहरों में बड़ी संख्या में इमारतें जमींदोज हो गयी हैं। सीरियाई ऑब्जरवेटरी फॉर ह्यूमन राइट्स ने कहा है कि सीरिया में भूकंप से 320 लोगों की जान गई है। सरियाई राष्ट्रपति बशर अल-असद ने इस मसले पर आपातकालीन बैठक बुलाकर स्थितियों की समीक्षा की है। यूनाइटेड स्टेट्स जियोलॉजिकल सर्वे के मुताबिक, 7.8 तीव्रता के भूकंप के बाद 18 बार झटके महसूस किये गए। इनकी तीव्रता चार से ज्यादा थी।

सीएम योगी ने मेट्रो टनल निर्माण कार्य का शुभारंभ किया

आगराः जनपद में सोमवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मेट्रो टनल निर्माण कार्य का शुभारंभ करने पहुंचे। मथुरा से खेरिया एयरपोर्ट के रास्ते आगरा पहुंचे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का पार्टी नेताओं ने भव्य स्वागत किया। यहां से वे आगरा किला के सामने रामलीला मैदान में पहुंचे। जहां उन्होंने मेट्रो लॉन्चिंग शाफ्ट पर पहुंचकर रिंग सेगमेंट पर हस्ताक्षर किये। इसके बाद पूजा-अर्चना कर बटन दबाकर मेट्रो टनल निर्माण कार्य का शुभारंभ किया गया।

मेट्रो टनल कार्य का शुभारंभ कर मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश मेट्रो कॉरपोरेशन के समय से छह

माह पूर्व पूर्वी कॉरिडोर के कार्य को दिसंबर 2023 तक संपन्न होने की आशा की। उन्होंने कहा कि उप्र मेट्रो कॉरपोरेशन पर्यावरण के सभी मानकों को ध्यान में रखते हुए काम कर रही है। आज टनल के निर्माण कार्य के तहत काम आने वाली टनल बोरिंग मशीनों (टीबीएम) को गंगा और यमुना का नाम दिया गया है। आगरा मेट्रो के भूमिगत भाग में अप एवं डाउन ट्रैक के लिए दो समानांतर सुरंगों का निर्माण किया जाना है। पहली टीबीएम के तहत ताजमहल तक टनल बनाई जानी है। जिसके लिए आपातकाल की स्थिति में टीबीएम को निकाले जाने के लिए शाहजहां गार्डन में मिड शाफ्ट बनाई जा रही है। दूसरी तरफ टीबीएम से आरबीएस कॉलेज मेट्रो स्टेशन से जामा मस्जिद स्टेशन के पास तक टनल बनाई जानी है। आज शुभारंभ होने वाली टीबीएम रोजाना करीबन 10 से 12 मीटर तक टनल निर्माण का कार्य करेगी।

उपेंद्र कुशवाहा को जदयू से बड़ा झटका

पटनाः बिहार की राजनीति में उपेंद्र कुशवाहा को लेकर मचे घमासान के बीच जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह ने उपेंद्र कुशवाहा को लेकर बड़ा दावा किया है। ललन सिंह ने जदयू संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा को लेकर कहा है कि वे पार्टी में किसी पद पर नहीं हैं। विदित हो कि कुशवाहा ने अभी तक जदयू के संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष पद से न तो इस्तीफा दिया है और न ही उन्हें हटाए जाने की औपचारिक घोषणा हुई है। इस बीच ललन सिंह के दावे के बाद उन्हें पार्टी से निकाले जाने की अटकलें तेज हो

गई है। बता दें कि इससे पहले सोमवार को नीतीश कुमार ने बांका में उपेंद्र कुशवाहा को लेकर कहा कि भाजपा के कहने पर जदयू संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा बयानबाजी कर रहे हैं। उन्हें नेता हमने बनाया है। विधायक, विधान पार्षद से लेकर राज्यसभा सदस्य तक बनाया।

भारत ने स्वदेशी लड़ाकू विमान और विमान वाहक जहाज का एक साथ अनूठा प्रदर्शन किया

रचा इतिहासः एलसीए नेवी की आईएनएस विक्रांत पर कराई लैंडिंग

नई दिल्ली। भारतीय नौसेना ने सोमवार को 'आत्मनिर्भर भारत' की दिशा में एक और ऐतिहासिक मील का पत्थर हासिल किया। नौसेना के पायलटों ने भारत में निर्मित एयरक्राफ्ट कैरियर आईएनएस विक्रांत पर स्वदेशी हल्के लड़ाकू विमान 'एलसीए नेवी' को सफलतापूर्वक लैंड किया। स्वदेश में ही निर्मित लड़ाकू विमान और विमान वाहक जहाज को डिजाइन, विकसित और संचालित करके भारत ने अपनी क्षमता का एक साथ अनूठा प्रदर्शन किया है। आईएनएस विक्रांत का निर्माण केरल में भारतीय नौसेना के कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड में किया गया है। हल्के लड़ाकू विमान 'एलसीए नेवी' को हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड

(एचएएल) ने बनाया है। इस एयरक्राफ्ट कैरियर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2 सितंबर, 2022 को नौसेना में कमीशन किया था। नौसेना के इस पोत को समुद्र पर चलता एक एयरफोर्स स्टेशन कहा जा सकता है। आईएनएस विक्रांत देश की आत्मनिर्भरता का सबसे बड़ा सबूत है। इस विमानवाहक पोत पर 1600 क्रू तैनात है। इस पोत की डिजाइन वारशिप डिजाइन ब्यूरो ने तैयार की है। इसका वजन 45,000 टन और अधिकतम स्पीड 28 नॉट है। विक्रांत में करीब 2,200 कंपार्टमेंट हैं।

आईएनएस विक्रांत और एलसीए की डिजाइन से लेकर इसे विकसित, निर्माण और संचालित करने तक का कार्य भारत में ही किया जाना भारत की टेक्नोलॉजी और युद्ध क्षमता को प्रदर्शित करता है। लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट को वायु सेना में 'तेजस' के नाम से कमीशन किया गया है। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है।

अडाणी विवादः सदन में फिर संग्राम

संसद के दोनों सदनों की कार्यवाही मंगलवार तक के लिए स्थगित

नई दिल्लीः संसद के दोनों सदनों की कार्यवाही सोमवार को विपक्ष के अडानी मुद्दे पर चर्चा की मांग को लेकर किए जा रहे हंगामे की वजह से मंगलवार तक के लिए स्थगित कर दी गई। संसद के दोनों सदनों की कार्यवाही पहले दो बजे और फिर दिनभर के लिए स्थगित की गई। लोकसभा में संसदीय कार्यमंत्री प्रह्लाद जोशी ने विपक्ष से अपील करते हुए कहा कि परंपरा रही है कि राष्ट्रपति के अभिभाषण के बाद सबसे पहले धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा की जाए। विपक्ष को यह परंपरा बनाए रखनी

चाहिए। वे अपने विषयों को भी अभिभाषण पर चर्चा के दौरान उठा सकते हैं। सदन का समय अमूल्य है और इसे नुकसान नहीं पहुंचाना चाहिए। इसके बाद भी हंगामा नहीं रुकने पर पीठासीन अधिकारी ने कार्यवाही को दिनभर के लिए स्थगित कर दिया। दूसरी ओर राज्यसभा में सभापति जगदीप धनखड़ ने भी सांसदों से यही अपील की। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है ।

खबर संक्षेप

अवैध देशी तमंचा व कारतूस के साथ धराया

सिरसा। थाना मेजा पुलिस द्वारा अवैध देशी तमंचा व कारतूस के साथ एक को गिरफ्तार किया गया। बता दें कि सोमवार को कोतवाल ज्ञानेश्वर मिश्र के नेतृत्व मे चौकी प्रभारी सिरसा जगदीश कुमार ने हमराही पुलिस कर्मियों के साथ मुखबिर की सूचना पर अभियुक्त सर्वेश सिंह पुत्र भगवती सिंह निवासी खानपुर थाना मेजा को थाना क्षेत्र के बेदौली मार्ग प्रवेश द्वार से गिरफ्तार कर कब्जे से एक अवैध देशी तमन्चा 315 बोर व दो जिन्दा कारतूस 315 बोर बरामद किया गया।

नव दिवसीय श्री राम कथा का आयोजन बुधवार से

सहसों। क्षेत्र के हेतापट्टी गांव में मुख्य अजमान श्रीमती अवधराजी देवी के संयोजन में नव दिवसीय संगीतमय श्री राम कथा का शुभारंभ 8 फरवरी बुधवार से 17 फरवरी शुक्रवार तक चलेगी। जिसमें कथावाचक श्री श्री 108 स्वामी श्री राम हृदय दास जिज्ञासु महाराज रामायण कुटी चित्रकूट धाम के मुखारविंद अमृतमयी वाणी से श्रवण कराया जाएगा। तत्पश्चात कथा के समापन पर महाप्रसाद वितरण एवं भंडारे का आयोजन किया गया है। उक्त आशय की जानकारी राम कथा के आयोजक समाजसेवी एवं भाजपा नेता चन्द्रभान सिंह ने दी।

बुल्डोजर लगा कर दबंगो ने मकान को किया जमीनदोज, मुकदमा दर्ज

मऊआइमा के ग्राम बांका जलालपुर में रात 12 बजे दबंगों ने की हरकत

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। दबंगों ने मध्य रात्रि को बुल्डोजर लगा कर रिहायशी पक्का मकान को जिसमें तमाम गृहस्थी का सामान था। धराशायी कर दिए। सुबह भुक्भोगी ने मऊआइमा थाने में पांच दबंगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम बांकाजलालपुर निवासी मोहम्मद इस्तियाक पुत्र मोहम्मद याकूब का कहना है कि उनके पास दो मकान है। पहले वाला पक्का मकान छोटा पडने पर परिवार बडे वाले मकान में निवास करने लगा। जिसमें तमाम गृहस्थी का सामान था। उक्त मकान को लेकर गांव के भू माफियाओं कि नीयम ठीक नहीं थी। इस्तियाक के मुताबिक इत्तेफाक से उस रात्रि उसमें कोई सोया नहीं था। बीती रात भू माफिया प्रवृति के गांव के दबंगों ने मध्य रात्रि में बुल्डोजर से पूरा पक्का मकान ध्वस्त कर दिए। सुबह पूछने पर हाथों में असलहा लेकर यह धमकी दिए कि यदि इस मकान की ओर देखोगे तो गोली मार देंगें। मोहम्मद इस्तियाक ने मऊआइमा थाने में बांका जलालपुर निवासी महारानीदीन, अशोक कुमार, संजय कुमार, वीरेंद्र कुमार, अर्जुन के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

सरकारी अनाज गोदाम में सेंधमारी लाखों रुपये का अनाज चोरी

मऊआइमा। मऊआइमा के ग्राम जमखुरी में स्थित सरकारी अनाज की गोदाम कि छत में सेंधमारी और शटर टेढा करके चोरों ने गेहूँ ,चीनी की बोरी और इलेक्ट्रॉनिक काटा ,बीस किलो से लेकर दो किलों तक बटखरा ,सरकारी अभिलेख आदि लगभग दो लाख की चोरी करने में सफल रहे। विपरण सहारक अधिकारी ने अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम जमखुरी स्थित खादय एंव रसद विभाग द्वारा मोहम्मद फारूक के बने हुए मकान को. भाडे पर लेकर खाधान्न संग्रह करके पूरे विकास खंड के कोटेदारों को अनाज वितरण के लिए दिया जाता है। बताते हैं कि बीती रात चोरों ने गोदाम में रखा 139 बोरी गेहूँ , 18 बोरी चीनी ,इलेक्ट्रॉनिक काटा ,बीस किलो से लेकर दो किलो तक बटखरा एंव आफिस में रखे तमाम अभिलेखों सहित अन्य सामान लगभग दो लाख की चोरी कर ले गए। सुबह मकान मालिक के पुत्र मोहम्मद आशिक ने चोरी की घटना की जानकारी अधिकारियों को दी। मौके पर पहुंचे खाधान्न संग्रह के सहायक अधिकारी अमित कुमार सिंह ने चोरी का जायजा लेकर मऊआइमा थाने में अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। पुलिस चोरी की जांच करने में जुटी हुई है। अभी तक जांच में कर्मचारियों की मिलीभगत की बात कही जा रही है।

दक्ष प्रजापति उत्थान समिति ने दी श्रद्धांजली

घूरपुर। सोमवार को दक्ष प्रजापति उत्थान समिति उत्तर प्रदेश द्वारा पंचायती धर्मशाला में संरक्षक भोलानाथ प्रजापति के निधन के पश्चात प्रदेश अध्यक्ष राम आसरे प्रजापति के अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें उपस्थित श्री राम जानकी मंदिर के पुजारी महाराज ईश्वर दास जी, प्रदेश उपाध्यक्ष केशव लाल प्रजापति, महामंत्री दिनेश प्रजापति, संगठन मंत्री रोशन लाल प्रजापति, जिला अध्यक्ष रमाशंकर प्रजापति, जिला उपाध्यक्ष दिलीप प्रजापति, रामपाल प्रजापति, जवाहर लाल प्रजापति, परशुराम प्रजापति, संतोष प्रजापति, तथा प्रजापति समाज के सैकड़ों लोग उपस्थित होकर संरक्षक भोलानाथ प्रजापति के चित्र पर श्रद्धा सुमन समर्पित किया इसके पश्चात 2 मिनट के मौन रहकर सभी ने उनकी आत्मा की शांति एवं परिवार वालों को सहन शक्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना किया। उपस्थित सभी ने महान आत्मा के प्रति शोक संवेदना व्यक्त किया।

कन्त नाहीं आए सखि,वसन्त ऋतु आय गै...

संगम तीरे बिखरे अवधी कविता के लोकरंग

करछना। माघ मेला परिक्षेत्र के अरैल तट स्थित इंण्डियन रेडक्रॉस सोसाइटी के पण्डाल में सोसाइटी एवं अखिल भारतीय अवधी समाज द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में पंहुचे कवियों ने संगम तीरे अवधी कविताओं का लोकरंग बिखेरे। मंच संचालन के दौरान लोकभाषा के चर्चित कवि अशोक बेशरम ने बसंती परिवेश का वर्णन करते हुए कहा-फूले बनवेली,अठखेली करै कंजकली,मंजरी में कोयल मधुर गीत गायगै।संत सरसाइगै,दिगंत नभ छाए सखि,कंत नहीं आए री,वसंत ऋतु आय गै। कवि संतोष शुक्ला समर्थ में अवधी पद में लोक जीवन की व्यस्तता को कुछ इस प्रकार उजागर किया-रात दिना कै धावन धूपन,केहिसे बिपति सुनाई।समरथ हम एकलउता बेटवा,रोइ करी चहि गाई,केशव कहां कहां हम धाई। दिल्ली से आए कवि मनोज कसान ने भाग्य रेखाओं के परिवेश में भविष्य की चाहत में भटकते मन की व्यथा कुछ इस प्रकार उकेरी-बात हमारि खरी उतरै,बचवा यहिं बेरी बिधायक होई। शैलेंद्र जय के गीत गजलों में बसी वसन्त की अलौकिक छवि श्रोताओं द्वारा खूब सराही गई तो वहीं कानपुर के ओमप्रकाश शुक्ल के वासन्ती दोहों में बोनी बानी के लोकरंग ने खूब समां बांधी। इसके अलावा अन्य कवियों ने भी अपनी रचनाओं में सामाजिक विकृतियों और वर्तमान में राजनैतिक विसंगतियों पर कटाक्ष करते हुए लोगों को जी भर गुदगुदाया। अध्यक्षता कर रहे राष्ट्रपति पदक से सम्मानित डॉ ओमशंकर मिश्र ने अवधी के लालित्य और रागात्मकता पर प्रकाश डालते हुए इसे संजोए रखने पर बल दिया। आयोजकों द्वारा कार्यक्रम के उपरान्त सभी कवियों को उपहार भेंट कर सारस्वत सम्मान किया गया। इस मौके पर बड़ी संख्या में स्थानीय श्रद्धालु एवं श्रोता मौजूद रहे।

चेयरमैन के साथ-साथ ईओ की भी कुर्सी खाली, वेतन के भी लाले

शंकरगढ़। नगर पंचायत शंकरगढ़ में चेयरमैन और ईओ की कुर्सी खाली होने से स्थानीय कर्मचारियों को वेतन के भी लाले पड़ गए हैं। विकास कार्यों की बात तो दूर की कौड़ी, कस्बे में साफ-सफाई का कार्य भी नहीं हो रहा है। चौतरफा गंदगी का अंबार लगा हुआ है।चेयरमैन की कुर्सी तो तभी भरेगी, जब नगर निकाय का चुनाव होगा, लेकिन ईओ की कुर्सी खाली होने से स्थानीय कर्मचारियों को पिछले दो माह से वेतन नहीं सका है। बताते चलें कि नगर पंचायत शंकरगढ़ के चेयरमैन का कार्यकाल चार जनवरी को समाप्त हो गया। जबकि यहां तैनात अधिशासी अधिकारी 12 जनवरी को पदोन्नति हो गए और उन्हे अन्यत्र भेज दिया गया है। ऐसे में दोनों पद जनवरी माह से खाली चल रहे हैं। बताया जाता है कि दोनों मुख्य पदों के खाली होने से नगर पंचायत प्रशासन की व्यवस्था चरमरा गई है। वैसे तो चेयरमैन की कुर्सी खाली होने पर यहां का कार्यभार प्रशासक के जिम्मे है, लेकिन ईओ के न होने से प्रशासनिक कार्य भी नहीं हो पा रहे हैं। स्थानीय सफाई कर्मियों ने बताया कि उन्हे दो माह से वेतन नहीं मिला है, जिससे उनके समक्ष भुखमरी का संकट खड़ा हो गया है। हालात यहां तक बिगड़ गए हैं कि वह किसी भी समय हड़ताल पर भी जा सकते हैं। वहीं, कार्यालय में बात करने

पर पता चला कि बिजली, रखरखाव आदि कार्य पूरी तरह प्रभावित है। आम जनता भी अपने कार्यों को लेकर नगर पंचायत कार्यालय का चक्कर लगाकर परेशान हो रही है, लेकिन आम जनता से जुड़े कोई भी कार्य नहीं हो रहे हैं। जन्म-मृत्यु प्रमाणपत्र बनवाने के लिए भी लोगों को एड़ी-चोटी का जोर लगाना पड़ रहा है।

एसटीएफ ने यूपी-एमपी की सीमा से गांजा तस्कर को दबोचा

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। छत्तीसगढ़ से गांजा की खेप लेकर प्रयागराज आ रहे गांजा तस्कर को एसटीएफ ने यूपी-एमपी की सीमा पर ही दबोच लिया। इस दौरान एक तस्कर भागने में सफल रहा। एसटीएफ और स्थानीय पुलिस की टीम ने कार से 45 लाख रुपये कीमत का गांजा बरामद किया है। यह जानकारी देते हुए एसटीएफ उपनिरीक्षक वेद प्रकाश पांडेय ने बताया कि पांच फरवरी की शाम एसटीएफ प्रयागराज की फील्ड यूनिट ने क्षेत्र के भारत गैस एजेंसी, नारीबारी के समीप घेराबंदी की और सटीक मुखबिरी के आधार पर गैस एजेंसी के पास कार को रोककर तस्कर को दबोच लिया गया।

एसटीएफ के हत्थे चढ़े अभियुक्त राजकिशोर मिश्र उर्फ बब्बू पुत्र शिवकुमार मिश्र (निवासी रक्सराई, सराय अकिल, कौशांबी, हाल पता बोधघाट, जगदलपुर, बस्तर, छत्तीसगढ़) ने बताया कि उसके साथ एक बाइक सवार भी चल रहा था, जो पुलिस को देख मौके से भागने में कामयाब रहा। पुलिस टीम ने कार की तलाशी ली, जिसमें कार की डिक्की में 90 किलो गांजा बरामद हुआ है। अभियुक्त ने बताया कि यह गांजा रोहित त्रिपाठी उर्फ पट्टर पुत्र स्व. इंद्रपाल त्रिपाठी (निवासी कनैली, प्रयागराज) का है। जबकि उसके साथ सचिन उपाध्याय (निवासी कनैली), जो मौके से फरार हुआ है, वह भी उसके साथ छत्तीसगढ़ से बाइक के द्वारा आगे-आगे आ रहा था। पुलिस सचिन और रोहित की गिरफ्तारी का प्रयास कर रही है। अभियुक्त के खिलाफ शंकरगढ़ पुलिस ने सुसंगत धाराओं में केस दर्ज कर लिया है। इस गिरफ्तारी में एसटीएफ के सीओ नवेंदु कुमार के साथ उपनिरीक्षक वेद प्रकाश पांडेय,मु.आरक्षी संजय सिंह,अश्विनी सिंह,राजेश कुमार,रोहित सिंह आदि अपनी टीम के साथ शामिल थे, जबकि शंकरगढ़ थाने की पुलिस फोर्स में एसओ मनोज कुमार सिंह, नारीबारी एसआई संतोष कुमार सिंह, कांस्टेबल रामजीत यादव आदि शामिल रहे।

छत्तीसगढ़ से 45 लाख का लाया जा रहा था गांजा, एक अभियुक्त फरार

न्यूज झरोखा

गोदाम के बाहर खड़े ट्रक का तिरपाल काटकर ढाई लाख मूल्य की 40 पेटी शराब चोरी

प्रयागराज। कर्नलगंज में गोदाम के बाहर खड़े ट्रक से 2.5 लाख की शराब चोरी होने का मामला सामने आया है। चोरों ने ट्रक में लगे तिरपाल के पर्दे को काटकर 40 पेटी शराब उड़ा दी। पुलिस अज्ञात में एफआईआर दर्ज कर जांच में जुटी है। खास बात यह है कि एफआईआर घटना के 10 दिन बाद दर्ज की गई। ड्राइवर रामजी निवासी बघौली हरदोई ने बताया कि 23 जनवरी को वह शराब लदा ट्रक लेकर चला और 25 जनवरी की रात प्रयागराज पहुंचा।शराब मनमोहन पार्क के पास शिवरामदास गुलाटी मार्ग पर विजयलक्ष्मी जायसवाल के गोदाम पर अनलोड होनी थी। उसने बताया कि रात ज्यादा होने के चलते गोदाम के बाहर ही ट्रक खड़ा करके वह भीतर ही सो गया। सुबह छह बजे के करीब नींद खुलने पर वह नीचे उतरा तो पर्दा कटा देख उसके होश उड़ गए। पता चला कि 40 पेटी शराब गायब है। क्लीनर ने बताया कि उसकी भी आंख लग गई थी। उसने सूचना दी तो 112 नंबर पुलिस पहुंची और जांच पड़ताल के बाद उसे थाने जाकर शिकायत करने को कहा।बताया कि वह थाने पहुंचा तो पुलिस ने जांच के बाद रिपोर्ट दर्ज करने की बात कहते हुए टरका दिया। उधर ड्राइवर के सूचना देने पर हरदोई से ट्रक मालिक धीरज गुप्ता भी आ गए। उन्होंने थाने पर लिखित शिकायत की। जांच पड़ताल के बाद पुलिस ने शनिवार को रिपोर्ट दर्ज की। इंस्पेक्टर राममोहन राय का कहना है कि घटना संदिग्ध लग रही है। जिस वक्त पेटियां चुराई गईं, ड्राइवर व क्लीनर ट्रक में ही मौजूद थे, लेकिन उनका कहना है कि वह सो रहे थे। रिपोर्ट दर्ज कर जांच पड़ताल की जा रही है।

संघ प्रमुख का जाति विशेष पर टिप्पणी संविधान विरोधी : पिंटू चौबे

कोरांव। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत के द्वारा एक कार्यक्रम में दिए गए जाति विशेष पर अमर्यादित टिप्पणी को लेकर जाति विशेष के लोगों में आक्रोश बढ़ता जा रहा है जिसके फलस्वरुप लोग गली कूचे चौराहे पर अपने अपने ढंग से विरोध दर्शा रहे हैं इसी क्रम में नगर पंचायत कोरांव में अरुण कुमार चतुर्वेदी उर्फ पिंटू चौबे जिला पंचायत सदस्य प्रयागराज ने संघ प्रमुख के बयान को लेकर कड़ी निंदा करते हुए कहा कि जिस प्रकार से कुछ जाति विशेष के लोगों को खुश करने के लिए ब्राह्मण समाज पर गैरजिम्मेदाराना बयान दिया है उससे यह साफ स्पष्ट होता है कि मोहन भागवत भी अंग्रेजों के नक्शे कदम पर चलने का कार्य कर रहे हैं जैसे अंग्रेजों ने फूट डालो और राज करो का तरीका अपनाया था ठीक उसी प्रकार संघ प्रमुख भी वही कार्य कर रहे है। जबकि जाति प्रमाण पत्र संविधान के अंतर्गत तहसीलों से सक्षम अधिकारी के द्वारा जारी किया जाता है न की किसी जाति विशेष के द्वारा इसके बावजूद इस तरह का बयान सार्वजनिक रूप से देना संविधान के विरुद्ध है पिंटू चौबे ने चेतावनी देते हुए कहा की अगर संघ प्रमुख अपने बयान को लेकर सार्वजनिक रूप से माफी नही मांगते है तो मोहन भागवत का पुतला फूक विरोध दर्ज कराते हुए बड़ा आंदोलन किया जाएगा। उक्त मौके पर उपस्थित चर्चित किसान नेता राजेश पांडे ने संघ प्रमुख के बचकाना बयान पर कड़ी निंदा करते हुए बड़ा आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा और आरएसएस दोनों संगठनों का कार्य हमेशा से धार्मिक और जातीय उन्माद को बढ़ावा देने का रहा है और इनके लोग धर्म के नाम पर जाति के नाम पर भाषा के नाम पर जनता को बाटने और लड़ाने का कार्य किया है लेकिन देश की जनता जागरुक हो कर संविधान पर भरोसा जता रही है और ऐसे लोगों के राजनैतिक मंसूबों को कभी कामयाब नही होने देगी निश्चित रूप होने वाली 2024के लोकसभा चुनाव मे भाजपा को उखाड़ फेंकने का कार्य करेगी।

गरीब बेहाल अधिकारी मालामाल पैसा नही तो आवास नहीं

लालापुर। क्षेत्र के मझियारी आमद चायल निवासी बच्चन देवी का नाम प्रधानमंत्री आवास योजना का रजिस्ट्रेशन नंबर यू पी 137258705 है इनसे सचिव मनोज कुमार द्वारा पैसा माँगा गया घूंस ना मिलने के कारण इनका नाम काट दिया गया। बाद मे जब बच्चन देवी के पुत्र दीपक सिंह ने इस विषय की जाँच की तो पता चला की उनको अपात्र बनाने के लिए कागजी कार्यवाही मे दिखाया गया की उनके पास पक्का मकान है जबकि बच्चन देवी आज भी जिस मकान मे रहती हैं उसकी स्थिति बहुत ही जर्जर है। लेकिन सभी सम्बंधित अधिकारी इस विषय पर मौन हैं। बच्चन देवी के पुत्र दीपक सिंह ने बताया की उन्होंने डीएम,सीडिओ,एसडीएम, बीडीओ सभी को इस बारे मे प्रार्थना पत्र भी दिया कार्यवाही के नाम पर सचिव मनोज कुमार को कारण बताओ नोटिस भी जारी किया गया लेकिन मनोज कुमार ने सारी नोटिसो को नजरअंदाज कर दिया। आखिर ऐसे गैरकानूनी कार्य करने के बाद सचिव का बचे रहना स्पष्ट रूप से दशार्ता हैं की कुछ बड़े अधिकारियो की जानकारी मे ही ये अवैध वसूली का कार्य फल फूल रहा है। दीपक सिंह के अनुसार सचिव द्वारा उनसे कहा गया गया की प्रधान के कहने पर बिना जाँच किये ही सारे कार्य कर दिए जाते हैं। सचिव मनोज कुमार और कम्प्यूटर ऑपरेटर सुनील तथा प्रधान की मिलीभगत के कारण ही सारे गलत कार्य किये जाते हैं लेकिन सम्बंधित अधिकारियों की चुप्पी जाँच का विषय बनी हुई है।

धरवारा के लोगों ने ध्रुव सिंह को न्याय दिलाने के लिए निकाला कैंडल मार्च

ध्रुव के हत्यारे जिंदा घूम रहे हैं प्रशासन मौन नहीं मिल रहा ध्रुव को न्याय

अखंड भारत संदेश

करछना। घर का चिराग खो कर परिजनों का रो रो कर हुआ बुरा हाल न्याय के लिए दर-दर भटक रहे परिजन गांव समाज के लोगों एवं परिजनों ने ध्रुव के हत्यारों की गिरफ्तारी के लिए निकाला कैंडल मार्च मौन हुई पुलिस प्रशासन से लगाई न्याय की गुहार थाना करछना के धरवारा गांव निवासी ध्रुव सिंह की विगत 30 जनवरी को कोहडार घाट में राड से मार मार के हत्या कर दी गई थी अभी तक उस मामले में ध्रुव सिंह को न्याय नहीं मिल पाया है जिसको लेकर धरवारा बघेडा संपर्क मार्ग से कोहरार घाट पुलिस चौकी तक कैंडल मार्च निकाला गया जिसमे प्रधान प्रतिनिधि विरू सिंह,जी एस एकेडमी धरवारा के प्रबंधक विनय सिंह मां सेवा संस्थान के अध्यक्ष विनायक पंडित अर्जुन सिंह पवन सिंह आशीष सिंह गोरेलाल तिवारी संदीप सिंह सतेंद्र सिंह अनिकेत सिंह के साथ-साथ हजारों की तादाद में ग्रामीण एवं परिजनों ने कैंडल मार्च निकालकर ध्रुव मर्डर केस में न्याय के लिए प्रशासन से गुहार लगाई अब देखना यह है कि क्या ध्रुव सिंह को न्याय कब मिलेगा क्या ध्रुव सिंह के हत्यारे सलाखों के अंदर जाएंगे? कि पुलिस की आंख में धूल झोंक कर कब तक बचेंगे।

नवीन मंडी समिति के पास सड़क पर फैली गिट्टियां दुर्घटना को दे रही दावत!

सिरसा। विकासखंड उरुवा के मेजा रोड स्थित नवीन सब्जी मंडी स्थल सिरसा में अव्यवस्थाओं का भरमार है जिसके चलते व्यापारियों किसानों को काफी दिक्कतें हो रही लेकिन समस्याओं का निदान नहीं किया जा रहा । नवीन मंडी स्थल में बनी सड़क अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रही सड़क पर केवल गिट्टियां ही बची हुई हैं जिससे मंडी में खरीदारी करने वाले पहुंच रहे किसान तथा व्यापारियों को काफी दिक्कत हो रही व्यापारियों का कहना है कि सड़क पर निकली गिट्टियां जब कोई चार पहिया वाहन निकलता है तो उससे छिटक कर गिट्टियां उन्हें घायल कर देती है सड़क पर निकली गिट्टियों से बड़ी दुर्घटना होने का खतरा बना रहता है। व्यापारियों ने कहा कि सबसे ज्यादा दिक्कत तो उन्हें बरसात में होती है उस वक्त सड़क पर एक कदम चलना भी मुश्किल हो जाता है लेकिन मंडी समिति की तरफ से कोई भी व्यवस्था दुरुस्त नहीं है जिससे उन्हें काफी दिक्कतें हो रही।

मंगल भवन अमंगल हारी, द्रबहु सो दशरथ अजिर बिहारी

जंघई। मयार्दा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम के गुणों का बखान करने वाली श्री रामचरित मानस का पाठ अनंत काल से होता चला आ रहा है। जीवन की मंगल कामना के लिए किया जाने वाला यह पाठ अत्यंत ही शुभ फलदायक है। जीवन की किसी भी शुभ शुरूआत के लिए लोग अखण्ड रामायण का पाठ करवाते हैं। चनेथू बजरंगपुरम हनुमान मंदिर प्रांगण में राजेंद्र शुक्ल मालिक, नागेंद्र शुक्ल, नागेश बबलू शुक्ला द्वारा अखण्ड रामायण पाठ एवं नव चंडी पाठ, महाप्रसाद का आयोजन किया गया।इस अवसर पर आचार्य नित्यानंद शुक्ल, आचार्य धरणीधर शुक्ल, आचार्य मनमोहन पांडेय, आचार्य भानू मिश्र, सूर्यमणि शुक्ल, इंजीनियर घनश्याम पांडेय, डॉ टीएन दुबे, हरिश्चंद्र दुबे, चंदू तिवारी, रतन मिश्र, बाबुलनाथ शुक्ल, कृष्ण मोहन शुक्ल, अजय पांडेय, अरुण शुक्ल, संगम शुक्ल, कपिल देव शुक्ल, लल्लू शुक्ला, संतोष शुक्ला, विनय शुक्ल, रामनयन शुक्ल, कृष्णराज शुक्ला, पवन शुक्ला, डिंपल शुक्ला, संदीप शुक्ल, दीपक शुक्ल, खुशियाल शुक्ल, धीरज शुक्ल, गोलू शुक्ल, अंजीश, शिवांश, पार्थ, अनमोल, देवांश सहित तमाम भक्तगण मौजूद रहे।

गंगा मे बढ़ते प्रदूषण एवं रोकथाम के विभिन्न उपायों पर हुई चर्चा

अखंड भारत संदेश

नैनी। गंगा में बढ़ते प्रदूषण एवं उसके रोकथाम के लिए विभिन्न विषयों पर आयोजित गंगा महासभा प्रयागराज की बैठक पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार बंधारोड स्थित मदन वाटिका मे सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष भगवती प्रसाद पाण्डेय एवं संचालन गजेन्द्र प्रताप सिंह ने किया बैठक को सम्बोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि प्रदेश महामंत्री देवेन्द्र तिवारी ने कहाकि गंगा स्वच्छता को लेकर शासन की मंशा पर अधिकारियों की उदासीनता के कारण पानी फिर रहा है तिवारी ने बताया कि गंगा यमुना मे प्रदूषण रोकने हेतु शवदाह गृह का निर्माण, मूर्ति विर्शजन हेतु कृतिम तालाबो का निर्माण कराने, गंगा का व्यवसायीकरण रोकने,अवैध खनन बन्द कराने तथा अनुपयोगी एस टी पी को बन्दकर नई उपयोगी तकनीक का प्रयोग किया जाना जरूरी है बैठक मे मुख्य रुप से उपस्थित परमार्थ आश्रम ऋषिकेश से गंगा नन्दिनी व पावनीजी, एवं महासभा के शक्ति कृष्ण त्रिपाठी, शौभिक सरकार, सुधाकर पाण्डेय, नित्यानन्द वर्मा, नरेन्द्र तिवारी, आशुतोष मिश्रा आदि ने भी विचार व्यक्त किया।

अवैध प्लाटिंग पर चला पीडीए का बुलडोजर

झूंसी। अवैध प्लाटिंग पर लगातार पीडीए की कार्यवाही जारी है। सोमवार को झूंसी में एक बार फिर पीडीए का बुलडोजर गरजा तो अवैध प्लाटरो के साथ नक्सा पास कराये बगैर भवन निर्माण करा रहे भवन स्वामियों में हड़कंप मच गया। सोमवार की दोपहर पीडीए का दस्ता तीन जेसीबी के साथ झूंसी पहुंचा तो अवैध प्लाटिंग के साथ निर्माण करा रहे भवन स्वामियों में अफरा-तफरी का माहौल उत्पन्न हो गया कुछ लोग आनन-फानन में अपने मकान निर्माण का काम रोक दिया। पीडीए ने नारायणदास पुरवा में 55 बीघे में की गई अवैध प्लाटिंग में बने निर्माण को तीन जेसीबी से ढहाया। घंटों चली कार्रवाई के दौरान लोग दूर से देख रहे थे पर कोई भी पास आने का साहस नहीं जुटा सका।

नैनी पुलिस ने स्मैक के साथ दो युवकों को गिरफ्तार किया

नैनी। पुलिस ने 48 पुड़िया स्मैक 19 ग्राम के साथ दो युवको को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने गिरफ्तार हुए युवको से स्मैक के बारे में सघन पूछताछ की और सम्बन्धित मुकदमा दर्ज करने के बाद उन्हें जेल के लिए रवाना किया। एसीपी करछना के पर्वेक्षण में प्रभारी निरीक्षक नैनी बृजेश सिंह के कुशल नेतृत्व में चौकी प्रभारी अरैल परमानंद दरोगा मनोज कुमार सिंह द्वारा मुखबीर की खास सूचना पर थाना क्षेत्र काशीराम कालोनी लोकपुर नहर के पास से 48 पुड़िया कुल वजन 19.00 ग्राम अवैध स्मैक के साथ दो शातिर युवक को गिरफ्तार किया गया गिरफ्तार होने वाले आरोपी मोहम्मद सैफ पुत्र मसूक अहमद निवासी चकदाऊद नगर थाना नैनी प्रयागराज व 2.मोनू यादव उर्फ सोनू यादव पुत्र स्व0 छोटेलाल निवासी चकदाऊद नगर थाना नैनी प्रयागराज के है। प्राप्त सूचना के अनुसार उक्त गिरफ्तारी बरामदगी के सम्बंध में नैनी की पुलिस ने उनके विरुद्ध पंजीकृत कर आगे की विधिक कार्यवाही की।

खबर संक्षेप

जामतारा बनने की राह पर सैदाबाद के कुछ गांव

प्रयागराज। क्षेत्र में साइबर अपराध कुछ वेब सीरीज की तर्ज पर युवाओं द्वारा किए जा रहे है। अन्य कोई धंधा ना होने की वजह से युवाओं का समूह दोबारा वारदातों को अंजाम दे रहा है। यह कहना गलत नहीं होगा कि सैदाबाद के कुछ गांव जामतारा के रूप में विकसित हो रहे है। यदि समय रहते लगाम नहीं लगाई गई तो चोरी से लेकर साइबर क्राइम का बढ़ना तय है।

युवा लगातार घटनाओं को दे रहे अंजाम : क्षेत्र में चोरी की घटना आम बात हो गई है। दो महीनों में चोर लगभग आधा दर्जन चोरी कर चुके है। लेकिन पुलिस किसी भी चोरी का खुलासा करने में नाकाम रही है। सैदाबाद के रमईपुर, बिगहिया गांव के कई युवा लगातार साइबर क्राइम कर रहे है। वहीं संग्राम पट्टी व हकीम पट्टी गांव के कुछ युवा क्षेत्र व बाहर चोरी की घटनाओं में लिप्त है। रमईपुर गांव के युवा लगातार एटीएम ठगी व साइबर क्राइम में लिप्त है। इनके शाही रहन-सहन को देखकर गांव के कई युवा साइबर क्राइम की तरफ आकर्षित हो रहे है। ठगी करने वाले व चोरी के आरोप में अक्सर पकड़े भी जाते है। लेकिन जेल से जमानत पर छूटने के बाद पुनः घटनाओं को अंजाम देने में जुट जाते है। बेरोजगारी के कारण चोरी व साइबर क्राइम में अधिक पैसे होने के कारण युवा लगातार क्षेत्र व दूसरे जिलों में घटनाओं को अंजाम दे रहे है।

अडाणी-हिंडनबर्ग मामले में कांग्रेस का हल्ला बोल

एलआईसी ऑफिस का किया घेराव, जमकर की नारेबाजी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। हिडंनबर्ग रिपोर्ट के बाद अडानी की कंपनियों के शेयरों के दामों में गिरावट और ग्रुप पर वित्तीय फ्रॉड के आरोपों के बीच कांग्रेस ने सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर पार्टी कार्यकताओं ने राष्?ट्र?यापी प्रदर्शन किया। सोमवार को जिला शहर कमेटी के पदाधिकारी और नेताओं ने सिविल लाइंस स्थित एलआईसी के मंडल कार्यालय का घेराव कर ₹हल्ला बोल₹ प्रदर्शन किया। हाथों में अडाणी समूह के खिलाफ लिखी तख्तियां लेकर पहुंचे पार्टी पदाधिकारी और कार्यकताओं ने परिसर के बाहर सड़क पर बैठकर अपना विरोध दर्ज कराते हुए जमकर नारेबाजी की।

सरकार पूंजीपतियों को लाभ पहुंचा रही

कांग्रेसियों के प्रदर्शन की भनक लगते ही एलआईसी परिसर के चारो ओर बड़ी संख्या में पुलिस तैनात कर कार्यालय के मुख्य गेट को बंद कर दिया गया। गंगापार जिलाध्यक्ष सुरेश यादव और यमुनापार जिलाध्यक्ष अरुण तिवारी ने आरोप लगाते हुए कहा की केंद्र सरकार मध्यम वर्ग की कमर तोड़ कर चंद पूंजीपतियों को फायदा पहुंचाने की कोशिश कर रही है। हाल ही में हिंडनबर्ग की रिपोर्ट से अडाणी समूह में भारी वित्तीय अनियमितताएं उजागर हुई।प्रदेश महासचिव मुकुंद तिवारी और विवेकानंद पाठक ने कहा की कहा कि अडानी को सहयोग कर देश का 80 हजार करोड़ रुपए डुबा दिया गया। पूर्व विधायक अनुग्रह नारायण सिंह ने कहा 67 वर्षों में फायदे में चल रही एलआइसी को निजी हाथों में सौंप कर नुकसान झेल रही है। वहीं कई बैंकों का हजारों करोड़ रुपये अडानी की कंपनियों में लगा हुआ है। ऐसी हालत में यदि बैंक दिवालिया हुआ तो देश को नुकसान झेलना होगा। कार्यकार्ताओं ने मामले में उच्च स्तरीय कमेटी गठित कर जांच की मांग की।पूर्व विधायक अनुग्रह नारायण सिंह, शहर अध्यक्ष प्रदीप मिश्रा, सुधाकर तिवारी, संजय तिवारी, हसीब अहमद, जितेश मिश्रा, मो० असलम, सत्या पाण्डेय, राकेश पटेल, जीशान अहमद, मनोज पासी, राकेश श्रीवास्तव, विवेक पाण्डेय, सिद्धनाथ मौर्य, रईस अहमद, दिनेश सोनी, विशाल सोनकर, सुनील यादव, भानू कुशवाहा, नागेंद्र पाण्डेय, मानस शुक्ला, विनय पाण्डेय, सतीश केसरवानी, मो. हसीन, आशा देवी, शीला रावत, रेयाज अहमद, ओमप्रकाश बिंद, अजेंद्र गौड़, शदाब अहमद, सूरज शुक्ला, निशांत रस्तोगी, चमन रावत, सुष्मिता यादव, महेन्द्र सिंह, मो०सलीम समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहें।

स्वर्गीय अभिषेक त्रिपाठी गौरव की मनाई गई जयंती

प्रयागराज। स्वर्गीय अभिषेक त्रिपाठी गौरव की जयंती के उपलक्ष मे गीता निकेतन मंदिर पर पूजा पाठ व भव्य भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें हजारों की संख्या में लोगों को भोजन कराया गया एवं गरीबों को अंग वस्त्र भी दिए गए इस अवसर पर भंडारे का शुभारंभ कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शहर उत्तरी के विधायक हर्षवर्धन बाजपेई जी द्वारा किया गया एवं कार्यक्रम में किन्नर अखाड़ा की महामंडलेश्वर टीना मां भारतीय जनता पार्टी के महानगर अध्यक्ष गणेश केसरवानी

जयंती के उपलक्ष मे गीता निकेतन मंदिर पर पूजा पाठ व भव्य भंडारे का आयोजन

अमित त्रिपाठी बिन्नी विधायक प्रतिनिधि अरुण शुक्ला विक्रांत शुक्ला आशुतोष शुक्ला नवीन सिंह भानु सिंह सिंगरौर आकाश प्रजापति आनंद कुशवाहा व स्वर्गीय अभिषेक त्रिपाठी गौरव के परिवार के सभी सदस्यों सहित सभी ने उनको याद करते हुए उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

त्रिजटा स्नान कर राम नाम की पूंजी लेकर भक्त करेंगे संगम से प्रस्थान

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। माघ मेला, सेक्टर 1 अक्षयवट मार्ग, राम नाम बैंक के शिविर से त्रिजटा स्नान के बाद राम भक्त रामनाम की पूंजी लेकर अपने अपने घरों को प्रस्थान करेंगे। पंडित राजकुमार तिवारी के अनुसार विगत वर्षो की अपेक्षा इस वर्ष काफी भक्तों ने राम नाम लिखकर जमा किया है, परंपरा अनुसार भक्त स्नान करने के बाद रामनाम की पूंजी, गंगाजल एवं संगम की रेणुका लेकर मां त्रिवेणी को प्रणाम कर विदा होंगे।ज्योतिषाचार्य आशुतोष वार्ष्णेय के अनुसार चांद्रमास की गणना में माघी पूर्णिमा पर कल्पवास समाप्त हो जाता है, परंतु कुछ श्रद्धालु प्रतिप्रदा पर घर प्रस्थान और यात्रा नहीं करते, इसलिए वह संगम तट पर रुककर द्वितीया तिथि पर तीन डुबकी लगाकर त्रिजटा स्नान करने के पश्चात पूरे माह में लिखा राम नाम जमा करने के बाद प्रस्थान करते हैं। मान्यता है कि त्रिजटा स्नान करने से कल्पवास का पुण्य बढ़ जाता है। गुंजन वार्ष्णेय के अनुसार पूरे माघ मास में कल्पवास के दौरान जप, तप, पूजा-पाठ में यदि कोई भी त्रुटि हो गई हो तो पूर्णमासी के बाद अतिरिक्त स्नान की परम्परा है, त्रिजटा स्नान के माध्यम से स्नानकर्ता दोषों से मुक्त भी होता है और पूर्ण कल्पवास की मान्यता भी पूरी

करता है। त्रिजटा स्नान गंगा, यमुना व सरस्वती के साथ भगवान शिव व सूर्य को समर्पित माना गया है।

शिष्या से दुष्कर्म मामले में स्वामी चिन्मयानंद को मिली बड़ी राहत, अग्रिम जमानत मंजूर

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सोमवार को पूर्व केंद्रीय गृह राज्य मंत्री स्वामी चिन्मयानंद को बड़ी राहत देते हुए शिष्या से रेप मामले में उनकी अग्रिम जमानत मंजूर कर ली। यह आदेश जस्टिस डीके सिंह ने स्वामी चिन्मयानंद की याचिका पर पारित किया है। कोर्ट ने स्वामी की अग्रिम जमानत अर्जी मंजूर करते हुए उन्हें विवेचना में सहयोग करने का निर्देश दिया है।स्वामी चिन्मयानंद की एक शिष्या ने साल 2011 में स्वामी चिन्मयानंद के खिलाफ शाहजहांपुर कोतवाली में रेप का केस दर्ज कराया था। इस मामले में योगी सरकार ने 2018 में चिन्मयानंद के खिलाफ दर्ज केस को वापस लेने की सिफारिश की थी। निचली अदालत से लेकर हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट ने यूपी सरकार के इस फैसले को खारिज कर

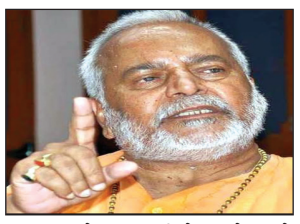

दिया था। केस वापसी के आदेश को कोर्ट ने सही नहीं माना। इसके अलावा स्वामी चिन्मयानंद के खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी हुआ था।गिरफ्तारी से बचने के लिए पूर्व केंद्रीय गृह राज्य मंत्री ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में याचिका दाखिल कर अग्रिम जमानत देने की कोर्ट से मांग की थी। पूर्व मंत्री ने याचिका में गिरफ्तारी से बचने के लिए अपनी बीमारी को आधार बनाया था। कोर्ट ने बीमारी व अन्य आधार पर अग्रिम जमानत मंजूर की। अदालत ने अपने फैसले में स्वामी चिन्मयानंद को विवेचना में सहयोग के निर्देश दिए हैं।

गर्ल्स हाई स्कूल में फेयरवेल पार्टी का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

मिस जीएचएस बनी कृतिका सोनकर, हुई ताजपोशी

प्रयागराज। गर्ल्स हाई स्कूल एवं कॉलेज में 2023 बैच की 12वीं की छात्राओं के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया । कक्षा 12वीं की छात्राओं के लिए विदाई समारोह को भव्य एवं स्मरणीय बनाने के लिए कक्षा 11 की छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ ए लारेंस द्वारा ईश वंदना व श्रीमती एल ग्रीनवुड द्वारा बाईबिल पाठ से हुआ। रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रारंभ विद्यालय की प्रधानाचार्य द्वारा दीप प्रज्वलित कर संपन्न किया गया। इसके पश्चात 11वीं की छात्राओं द्वारा नृत्य की प्रस्तुतियों ने तो सभागार में उपस्थित सभी लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया।

वहीं 2022-23 के लिए मिस जीएचएस का ताज कृतिका सोनकर के सिर सजा। तथा विद्यालय की तरफ से छात्राओं को स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। कार्यक्रम का समापन कॉलेज विभाग की कोऑर्डिनेटर ए लारेंस द्वारा धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

बागेश्वर धाम के बाबा धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री पर अभद्र टिप्पणी

बजरंग दल के कार्यकताओं ने दी तहरीर, कार्रवाई की मांग

प्रयागराज। प्रयागराज में 2 फरवरी को आए मध्य प्रदेश के छतरपुर में बागेश्वर धाम वाले बाबा धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री पर अभद्र टिप्पणी की गई है। इसका एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इसको लेकर बजरंग दल की ओर से कौंधियारा थाने में लिखित तहरीर दी गई है। जिसमें टिप्पणी करने वाले अजय कुमार कुशवाहा पर कार्रवाई की मांग की गई है। **युवक इंस्पेक्टर का बताया जा रहा करीबी** : बागेश्वर धाम वाले बाबा धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री 2 फरवरी को प्रयागराज आए थे। वायरल वीडियो 2 फरवरी के पहले का बताया जा रहा है। बजरंग दल के प्रांत सुरक्षा प्रमुख काशी प्रांत विपिन कुमार गुप्ता की ओर से 6 फरवरी को कौंधियारा थाने में लिखित तहरीर दी है।उन्होंने तहरीर में बताया कि कौंधियारा थाना क्षेत्र के भभोंखर गांव निवासी अजय मोहन कुशवाहा ने सोशल मीडिया पर साधु-संतो और धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री को लात-घूसों से मारने की बात कही है। करीब 41 मिनट के वीडियो में हिंदू देवी-देवताओं पर भी अभद्र टिप्पणी की गई है। जिससे हिंदू समाज के लोगों में आक्रोश व्याप्त है।जिस युवक के खिलाफ शिकायत की गई है। युवक इंस्पेक्टर कौंधियारा का करीबी बताया जा रहा है। इसको लेकर सोशल मीडिया पर एक पोस्ट वायरल हो रही है। अजय मोहन कुशवाहा के खिलाफ बजरंग दल वालों ने शख्त कार्रवाई करने की मांग की गई है। थाना प्रभारी कौंधियारा ने बताया कि तहरीर मिली है। पुलिस जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

एंबुलेंस में कराया गया महिला का सुरक्षित प्रसव

झूंसी। क्षेत्र के नारायणदास पुरवा की एक गर्भवाती महिला ने सोमवार को 108 एम्युलेश में बच्चे को जन्म दिया। रविवार की रात लगभग 11 बजे नारायणदास पुरवा की अनीता को प्रसव पीड़ा शुरू हुई। सूचना पर पहुची एंबुलेंस से अनीता को सीएससी बनी ले जाया जा रहा था रास्ते में प्रसव पीड़ा अधिक होने पर ईएमटी अनुराग कुमार राहुल ने पायलट सुरेश भगत व साथ में मौजूद महिलाओं की मदद से एंबुलेंस में सुनीता का प्रसव कराया। जच्चा बच्चा दोनो स्वास्थ्य है। दोनों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया है।

निपुण लक्ष्य में विशेष योगदान के लिए शिक्षक किए गए सम्मानित, मधेशा को मिला बेस्ट परफॉर्म अवार्ड

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज।बायोवेद संस्थान श्रृंगवेरपुर के सभागार में शत-प्रतिशत निपुण लक्ष्य प्राप्ति हेतु शिक्षकों की अकादमिक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें अच्छा प्रदर्शन करने वाले 14 विद्यालयों के 25 अध्यापकों को मेडल देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में डॉ बीके द्विवेदी कृषि वैज्ञानिक मुख्य अतिथि रहे जबकि डॉक्टर पी सी पांडे श्रृंगी ऋषि फिल्म प्रोडक्शन के चेयरमैन विशेष अतिथि रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ खंड शिक्षा अधिकारी कौड़िहार एवं मुख्य अतिथि के द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इसी समय अर्चना, आराधना चित्रांशी प्रियंका करवरिया, श्रद्धा सिन्हा एवं पूनम चौधरी द्वारा सरस्वती वंदना

प्रस्तुत की गई।आज की गोष्ठी में अच्छा प्रयास करने वाले शिक्षकों को न सिर्फ सम्मानित किया गया बल्कि उनके विचारों को इस उद्देश्य के साथ साझा किया गया कि जो लोग कम अच्छा परफॉर्म कर रहे हैं वह भी नई रणनीतियां अपनाकर और अच्छा कर सकते हैं। कम्पोजिट विद्यालय मधेशा को अपनी तीनों कक्षाओं के 131 छात्रों को सर्वप्रथम निपुण बना लेने के कारण बेस्ट परफॉर्म अवार्ड/ शील्ड प्रदान की गई एवं प्राथमिक विद्यालय करीमुद्दीनपुर, जगदीशपुर खंदरौली एवं मीरजहांपुर के साथ 10 अन्य विद्यालयों को सम्मानित किया गया । बेस्ट परफॉर्मर सम्मान पाने वाले शिक्षकों में श्री सुधीर कुमार निषाद, ललिता वर्मा, सुमन देवी, निशा मोर्या सुनीता सिंह, आशा, सहाना बेगम, निराशा देवी के साथ कुल 25 अध्यापकों को सम्मानित किया गया। करीमुद्दीनपुर मधेशा एवं खिजिरपुर की शिक्षामित्र क्रमशः सविता कोली, नीतू वर्मा एवं उषा देवी को विशेष प्रोत्साहन दिया गया। एके-डमी गोष्ठी का संचालन खंड शिक्षा अधिकारी ओम प्रकाश मिश्रा, ए आर पी जय सिंह ,प्रभा शंकर शर्मा, विष्णु मिश्रा, अवनीश सिंह एवं अजमल अमीन अंसारी के द्वारा किया गाया । कार्यक्रम में मुख्य रूप से राधे कृष्ण, बालेंद्र पांडे, रामलाल प्रजापति, राजेश शुक्ला, विनीत यादव, अमित जायसवाल के साथ-साथ लगभग 260 अध्यापक उपस्थित रहे, ए आर पी प्रभा शंकर शर्मा द्वारा निपुण लक्ष्य की शपथ दिलाने के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

लोक अदालत के समझौता अवार्ड का एक पृष्ठ बदलने पर कोर्ट गंभीर

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने राष्ट्रीय लोक अदालत में समझौते के अवार्ड के बाद मसौदे का एक पृष्ठ बदलने को गंभीरता से लिया और समझौता अवार्ड पर रोक लगा दी तथा जमीन की यथास्थिति कायम रखने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने विपक्षियों से चार हफ्ते में याचिका पर जवाब मांगा है। याचिका की अगली सुनवाई 14 मार्च को होगी। कोर्ट ने जिला जज मऊ को लोक अदालत की पत्रावली अपनी अभिरक्षा में लेकर इन हाउस इंक्वायरी कर रिकॉर्ड सहित सील कवर रिपोर्ट पेश करने का निर्देश दिया है।यह आदेश न्यायमूर्ति अजित कुमार ने उमाशंकर पांडेय की याचिका पर दिया है। याची की ओर से कहा गया कि दोनों पक्षों के बीच लोक अदालत में जमीन को लेकर दोनों पक्षों के हस्ताक्षर से समझौता हुआ। इसके बाद समझौते का एक पृष्ठ बदल दिया गया। जिस पर पक्षकारों के हस्ताक्षर नहीं हैं। याची ने अवार्ड आदेश वापस लेने की अर्जी दी, जिसे खारिज कर दिया गया। पुनरीक्षण अर्जी भी खारिज कर दी तो यह याचिका दायर की गई। कोर्ट ने जिला जज से सीलबंद रिपोर्ट मांगी है।

आज से नहीं चलेंगी 40 अनफिट बसें

प्रयागराज के ग्रामीण क्षेत्रों में होता था इन बसों का संचालन, यात्रियों को होगी असुविधा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। यात्रियों की सहूलियत के लिए चलने वाली 40 बसें आज सोमवार से नहीं चलेंगी। ये बसें गांव के लोगों के लिए छोटे रूट पर दौड़ रही थीं। इन बसों का संचालन महानगर बस सेवा-2009 के तहत किया गया था। आरटीओ की ओर से इन बसों को अनफिट कर दिया गया है।ये बसें ग्रामीण क्षेत्रों में 27 रूटों पर संचालित हो रही थीं। फिटनेस प्रमाण पत्र नहीं मिलने की वजह से परिवहन विभाग ने बसों को अभी संचालित न करने का निर्णय लिया है। रोडवेज के अधिकारियों के मुताबिक, इलेक्ट्रिक बसों के अलावा अन्य बसों को उन रूटों पर चलाया जाएगा ताकि यात्रियों को असुविधा न होने पाए। बता दें कि पिछले वर्ष भी महानगर बस सेवा की 27 बसों को

आरटीओ ने अनफिट करते हुए इसका संचालन रोक दिया था।

गंगापार और यमुनापार में दौड़ती हैं बसें : जिन बसों के संचालन पर आज से रोक लगाई गई है वह गंगापार और यमुनापार की रूटों पर दौड़ती हैं। फाफामऊ, सोरांव, मऊआइमा, प्रतापपुर, फूलपुर, लालगोपालगंज, शंकरगढ़, नैनी, करछना, घूरपुर समेत अन्य रूटों पर प्रतिदिन इन 40 बसों का संचालन अभी तक हो रहा था। इससे ग्रामीण क्षेत्रों से जुड़े यात्रियों को काफी सुविधा भी थी लेकिन विभाग की लापरवाही के चलते इन्हें फिटनेस घोषित कर दिया गया है। अब प्राइवेट डग्गामार वाहनों की रफ्तार और बढ़ जाएगी, विवश होकर यात्रियों को इन प्राइवेट वाहनों से ही सफर करना होगा।

तीन दिवसीय वॉलीबाल प्रतियोगिता 10 फरवरी से कोसड़ाखुर्द में

मांडा। विकास खंड मांडा के अंतर्गत गांव कोसड़ाखुर्द में तीन दिवसीय वॉलीबाल प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। विदित हो कि विगत 50 वर्षों से उपरौध वालीबाल क्लब के सौजन्य से अनवरत प्रत्येक वर्ष आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिता इस वर्ष " गोल्डन जुबली " के रूप में संपन्न होगी। उक्त आशय की जानकारी देते हुए डिस्ट्रिक्ट वॉलीबाल एसोसिएशन,प्रयागराज के महासचिव आर.पी.शुक्ला ने बताया कि आगामी 10, 11 व 12 फरवरी 2023 को स्थानीय हाटा बाजार के निकट स्थित कोसड़ाखुर्द के पावर हाउस वाले खेल मैदान पर तीन दिवसीय वालीबाल प्रतियोगिता संपन्न होगी। प्रतियोगिता जिला वॉलीबाल संघ से संबद्ध एवं मान्यता प्राप्त है। श्री शुक्ला ने जिले की समस्त टीमों के खिलाड़ियों एवं निर्णायकों से अपील की है कि वे उपरोक्त निर्धारित तिथि को समय से पहुंचकर आयोजन को सफल बनावें। प्रतियोगिता में भाग लेने की इच्छुक टीमें आयोजक मंडल के सदस्य कुंवर बहादुर सिंह, पन्नालाल एडवोकेट एवं कमल बहादुर सिंह से संपर्क कर सकती हैं।

होटल में युवती के साथ सामूहिक दुष्कर्म, पति भी था दोस्तों के साथ शामिल, तीन गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कोतवाली के चौक में 25 वर्षीय युवती से सामूहिक दुष्कर्म के मामले में महिला का पति भी शामिल था। उसके ही कहने पर उसके दोस्त रेहान ने नौकरी के बहाने युवती को होटल में ले गया था। जहां तमंचा दिखाकर उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किया गया। पुलिस ने तीनों को गिरफ्तार कर लिया है।बेनीगंज निवासी युवती ने चार फरवरी को एक नामजद समेत तीन पर सामूहिक दुष्कर्म का मामला दर्ज कराया था। जांच में जुटी पुलिस ने नामजद आरोपी रेहान व पीड़िता के पति टिंकू अग्रहरि निवासी शाहगंज को हिरासत में ले लिया था। एसीपी कोतवाली सत्येंद्र प्रसाद तिवारी ने पूछताछ शुरू की तो दोनों ने जुर्म कबूल करते हुए घटना में शामिल अपने एक साथी मंगरू का नाम बताया, जिसके बाद उसे भी गिरफ्तार कर लिया गया।

व्हाट्सएप चैट के जरिए आया संपर्क में : पूछताछ में रेहान ने पुलिस को बताया कि उसे पीड़िता के पति टिंकू ने मोबाइल नंबर दिया था। इसके बाद उसने युवती से व्हाट्सएप पर चैट शुरू की और फिर नौकरी दिलाने के बहाने उससे बातें करने लगा। करीब 20 दिनों से यह सिलसिला चल रहा था और इसी दौरान युवती ने उससे मुसीबत में होने की बात कहकर 20 हजार रुपये मांगे। योजना के मुताबिक, शनिवार को फोन कर उसने युवती को बुलाया। इसके बाद सिविल लाइंस से उसे उसकी ही स्कूटी से लेकर लोकनाथ चौराहे के पास स्थित होटल में बहाने से ले गया। वहां दोनों अन्य आरोपी पहले से मौजूद थे जिसके बाद असलहा दिखाकर उससे सामूहिक दुष्कर्म किया। एसीपी ने बताया कि तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। उन्हें मंगलवार को कोर्ट में पेश किया जाएगा।

लिव इन रिलेशनशिप में रह रहीं लड़कियों को धमकी पर एसपी को कार्रवाई का निर्देश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने परिवार द्वारा दो लड़कियों के लिव इन रिलेशनशिप (सहमति संबंध) में हस्तक्षेप करने पर रोक की मांग को लेकर दाखिल याचिका पर एसपी, संभल को नियमानुसार कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने कहा कि पिता व भाइयों द्वारा दी जा रही जान से मारने की धमकी का परीक्षण कर कार्रवाई की जाए। यह आदेश न्यायमूर्ति एम सी त्रिपाठी तथा न्यायमूर्ति अजीत सिंह की खंडपीठ ने एक युवती व अन्य की याचिका को निस्तारित करते हुए दिया है। याची की ओर से कहा गया कि याची समान लिंग की है और उसके साथ रह रही है। यह उनके परिवार को पसंद नहीं है। धमकी दे रहे हैं।सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि जो विवाह नहीं कर सकते उस जोड़े को भी एक साथ रहने का अधिकार है। कोर्ट का दायित्व है कि वह नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करे। याचियों ने एसपी संभल से मदद मांगी, प्रत्यावेदन दिया है। मामले में सुल्तान मिर्जा केस का हवाला दिया गया। सरकारी वकील ने कहा कि एसपी को याचियों की विचाराधीन शिकायत पर कार्रवाई करने का आदेश दिया जाए।

आरोपी के खिलाफ मारपीट व धमकी का केस

लालगंज, प्रतापगढ़। रंजिशन मारपीट तथा तोड़फोड़ को लेकर उदयपुर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया है। उदयपुर थाना के पूरे तेजा राकी निवासी चद्रभान सिंह के पुत्र सुशील कुमार सिह ने पुलिस को दी गयी तहरीर में कहा है कि पांच फरवरी को रात नौ बजे पूरे तेजा गांव के माता बदल सिंह के पुत्र दिनेश उर्फ बबलू ने उसे रंजिशन गाली देते हुए मारापीटा। विरोध करने पर आरोपी ने घर में सामने लगे बल्ब को तोड़ दिया। शोर मचाने पर आरोपी पीड़ित को जांनलेवा धमकी देते चला गया। तहरीर के आधार पर पुलिस ने सोमवार को आरोपी के खिलाफ मारपीट तथा गाली गलौज व तोड़फोड़ व धमकी का केस दर्ज किया गया है।

एलआईसी आफिस के सामने कांग्रेसियों ने किया प्रदर्शन

अखंड भारत संदेश

गौतम अडानी कांड को लेकर इंदिरा भवन पर हुई बैठक

एलआईसी आफिस के सामने प्रदर्शन करते कांग्रेसी।

प्रतापगढ़। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ. लालजी त्रिपाठी एवं यूथ कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. नीरज त्रिपाठी के संयुक्त तत्वाधान में आज जनपद प्रतापगढ़ में देश में चल रहे गौतम अडानी कांड को लेकर बड़े पैमाने पर कांग्रेस जन के साथ एलआईसी आफिस के सामने नारेबाजी करते हुए विरोध प्रदर्शन किया।

उसके उपरान्त एक बैठक जिला कांग्रेस कार्यालय, इंदिरा भवन, प्रतापगढ़ में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष डॉ लालजी त्रिपाठी एवं संचालन नगर अध्यक्ष इरफान अली ने किया। जिलाध्यक्ष डॉ.लालजी त्रिपाठी ने कहा कि आम भारतीय की कीमत पर अपने करीबी दोस्तों और चुनिंदा अरबपतियों को फायदा पहुंचाने की मोदी सरकार की नीतियों से पूरा देश, खासकर मध्यम वर्ग चिंतित है। मोदी सरकार द्वारा अडानी समूह में एलआईसी और एसबीआई जैसे सरकारी संस्थानों के बेहद जोखिम भरे लेनदेन और निवेश ने भारत के निवेशकों एलआईसी के 29 करोड़ पालिसी धारकों और एसबीआई के 45 करोड़ खाता धारकों पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। यह हिडन बर्ग रिसर्च रिपोर्ट में खुलासा हुआ है। यूथ कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. नीरज त्रिपाठी ने कहा कि गौतम अडानी मुद्दे पर प्रधानमंत्री के जवाब की प्रतीक्षा है और श्री त्रिपाठी ने मांग किया कि सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश या एक संयुक्त संसदीय समिति(जे.पी.सी) के तहत हिंडनबर्ग रिपोर्ट की विस्तार से निष्पक्ष जांच की जाए और एलआईसी एसबीआई एवं अन्य राष्ट्रीयकृत बैंकों के जबरदस्त निवेश पर संसद में चर्चा की जानी चाहिए और निवेशकों की सुरक्षा के लिए उचित कदम उठाए जाने चाहिए। प्रदर्शन में मुख्य रूप से वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ बीके सिंह,पूर्व नगर अध्यक्ष कपिल द्विवेदी, पी.सी.सी सदस्य डॉ.प्रशान्त देव शुक्ला,कांग्रेस सेवादल के जिला अध्यक्ष महेंद्र शुक्ला, कार्यालय प्रभारी, कोषाध्यक्ष वेदांत तिवारी, प्रदेश सोशल मीडिया प्रभारी प्रकाश पांडेय, आशुतोष तिवारी, मकरंद शुक्ला, प्रेम शंकर द्विवेदी, राम रतन तिवारी, मो.दिलशाद, सलमान खान, मोनू मिश्रा, सुनीता सिंह पटेल, राम शिरोमणि वर्मा,अब्दुल रहमान, फतेह बहादुर सिंह, लाल बहादुर, सुभाष तिवारी, त्रिलोकीनाथ विश्वकर्मा, उत्सव भूषण पाल, गोविंद कुमार, बैजनाथ यादव, संदीप त्रिपाठी, गोविंद सरोज, जमाल अहमद, सुधीर तिवारी आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना का उठाएं लाभ

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मुख्य कार्यकारी अधिकारी मत्स्य पालक विकास अभिकरण ने बताया है कि शासन द्वारा नवीन योजना ह्यह्यमुख्यमंत्री मत्स्य सम्पदा योजनाह्लह्ल प्रारम्भ की गयी है, इस योजना में मनरेगा कनवर्जेन्स अथवा पट्टाधारक द्वारा स्वयं अथवा अन्य विभागों के माध्यम से सुधारे गये ग्रामसभा के तालाबों में मत्स्य उत्पादन हेतु प्रथम वर्ष निवेश अथवा मत्स्य बीज बैक स्थापना हेतु स्पॉन, फ्राई, मत्स्य पूरक आहार जलापूर्ति संशाधन, जाल, दवाए आदि के क्रय पर आवेदक को इकाई लागत 4 लाख/ हेक्टेयर पर 40 प्रतिशत अनुदान उपलब्ध कराया जायेगा। मुख्यमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना हेतु दिनांक 07 फरवरी से 16 फरवरी तक आनलाईन आवेदन कर सकते है। योजना में ऐसे सभी पट्टाधारक आवेदन कर सकते है जिनके पट्टे की अवधि न्यूनतम 4 वर्ष अवशेष हो। एक आवेदक को योजनान्तर्गत 2 हेक्टेयर जलक्षेत्र तक ही लाभ अनुमन्य है। मुख्यमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना हेतु विभागीय वेबसाइट पर आनलाइन आवेदन सकते है। योजना का सम्पूर्ण विवरण आवेदन प्रक्रिया, आवेदन के साथ संलग्न किये जाने वाले अभिलेख तथा अन्य जानकारी विभागीय वेबसाईट से अथवा किसी भी कार्य दिवस में कार्यालय मत्स्य पालक विकास अभिकरण कमरा नम्बर 5, विकास भवन से प्राप्त की जा सकती है।

जिले में 31 मार्च तक निषेधाज्ञा लागूः अपर जिला मजिस्ट्रेट

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। 18 फरवरी को महाशिव रात्रि एवं 07/08 मार्च को होली व 30 मार्च को रामनवमी का त्योहार मनाया जायेगा। इसके अतिरिक्त डा0 राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय एवं उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद, सीबीएससी बोर्ड, पालीटेक्निक, आईटीआई आदि विभिन्न परीक्षायें सम्पन्न होनी है।

साथ ही आसन्न नगर निकायों के निर्वाचन के दृष्टिगत त्योहारों पर विशेष सतर्कता बरते जाने व परीक्षाओं को सकुशल, नकलविहीन, शुचिता व निष्पक्षता से सम्पन्न कराने व शांति व्यवस्था, साम्प्रदायिक सद्भाव एवं सौहार्द्रपूर्ण वातावरण बनाये रखने हेतु अपर जिला मजिस्ट्रेट त्रिभुवन विश्वकर्मा ने दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा-144 के अन्तर्गत जनपद में 31 मार्च 2023 तक निषेधाज्ञा लागू कर दिया है। यह आदेश जनपद के सम्पूर्ण क्षेत्र एवं जनपद में निवास करने वाले तथा जनपद की सीमा में प्रवेश करने वाले समस्त व्यक्तियों पर प्रभावी होगा। उन्होंने कहा है कि एक स्थान पर 5 या 5 से अधिक व्यक्तियों का विधि विरूद्ध जमाव प्रतिबन्धित किया जाता है। त्योहार के पावन पर्व पर कोई नई परम्परा नही कायम की जायेगी। कोई भी व्यक्ति किसी सार्वजनिक स्थानों पर रिवाल्वर, पिस्टल, एक नली बन्दुक व दो नली बन्दूक अथवा घातक हथियार यथा चाकू, बल्लम, फरसा, विस्फोटक, ज्वलनशील पदार्थ, तेजाब आदि अथवा लाठी, डंडा, हाकी स्टिक आदि या किसी भी प्रकार का हथियार/शस्त्र लेकर नही चलेगा, न तो उसका प्रयोग करेगा। यह प्रतिबन्ध सरकारी ड्यूटी पर तैनात अधिकारी/कर्मचारी तथ बैंक में लगे हुये सुरक्षा कर्मियों पर लागू नहीं होगा। शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों को उनके सहारे के रूप में लाठी या डंडा लेकर चलने की छूट रहेगी।

किसी भी सार्वजनिक धार्मिक स्थल पर डीजे, गीत-संगीत आदि की आवाज निर्धारित मानकों से अधिक नही होगी व लाउडस्पीकर का प्रयोग किसी भी दशा में इस प्रकार से नही किया जायेगा जिससे विभिन्न सम्प्रदाय के लोगों में उत्तेजना फैलने की सम्भावना हो। कोई भी व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह किसी भी सार्वजनिक, धार्मिक स्थल पर कोई ऐसी जनसभा, रैली या जुलूस का आयोजन नही किया जायेगा और न ही किसी प्रकार की अफवाह फैलायी जायेगी जिससे विभिन्न समुदाय के लोगों में मनमुटाव, वैमनस्यता या घृणा की भावना उत्पन्न हो। कोई भी व्यक्ति, व्यक्तियों का समूह किसी प्रकार की नारेबाजी, उत्तेजना फैलाने वाले या सम्प्रदायिक सद्भाव विगाड़ने वाले प्रचार नहीं करेगा। परीक्षा केन्द्रों के आस-पास 200 मीटर की परिधि में ध्वनि विस्तारक यन्त्रों, ब्लूटूथ एवं आई0टी0 गैजेट्स सहित इसी प्रकार की अन्य इलेक्ट्रानिक डिवाइस का प्रयोग पूर्णतया प्रतिबन्धित रहेगा। कोई भी व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह परीक्षाओं को सकुशल तथा शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष तरीके से सम्पन्न कराये जाने में न तो किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न करेगा और न ही ऐसी कोई कार्यवाही करेगा जिससे कि परीक्षा को सम्पन्न कराये जाने में कोई बाधा उत्पन्न हो एवं उसकी शुचिता व निष्पक्षता पर किसी प्रकार का कोई कुप्रभाव पड़े। कोई भी परीक्षार्थी बिना परीक्षा सम्पन्न हुये सक्षम अधिकारी की अनुमति के बिना परीक्षा कक्ष से बाहर नही जायेगा और न ही उत्तर पुस्तिका बाहर ले जायेगा। परीक्षा की समाप्ति तक किसी भी अभ्यर्थी अथवा प्रश्न पत्र को परीक्षा केन्द्र से बाहर नही जाने दिया जायेगा। इन आदेशों का अथवा इसके किसी भी अंश का उल्लंघन भारतीय दण्ड संहिता की धारा-188 के अन्तर्गत दण्डनीय होगा।

अठेहा ने बाबूगंज को हराकर ट्रॉफी पर किया कब्जा

अखंड भारत संदेश

वालीबाल टूर्नामेंट में प्रतिभाग करते खिलाड़ी।

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्र के कैथौला में हुए एक दिवसीय वॉलीबॉल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। टूर्नामेंट मे लगभग आधा दर्जन टीम ने प्रतिभाग लिया। सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए अठेहा ने बाबूगंज को तीन अंको से शिकस्त देकर ट्रॉफी पर कब्जा कर लिया। अठेहा टीम के सुनील को मैन ऑफ द मैच व बाबूगंज के खिलाड़ी जीशान के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने पर मैन ऑफ द सीरीज घोषित किया गया।विजेता व उपविजेता टीम को समाज सेवी संकठा सिह व प्रवीन सिंह ने पुरस्कार देकर खिलाडियों को सम्मानित किया।कार्यक्रम का संचालन सत्येंद्र सिंह ने किया।शिव पूजन व जगतपाल ने सभी आई टीमों व अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया।

परियावां बाजार को टाउन एरिया घोषित करने की उठी मांग

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। प्रदेश की योगी सरकार इन दिनों बडी आबादी वाले ग्रामीणांचल क्षेत्र में ग्राम पंचायतों को हाई फाई बनाने के लिए नगर पंचायत का दर्जा घोषित कर रही है जिसमें जनपद प्रतापगढ़ में हीरागंज बाजार व डेरवा बाजार को नगर पंचायत का दर्जा दिया गया। जब कि परियावां बाजार को टाउन एरिया का दर्जा दिलाने के किये कुछ माह पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष हरिओम मिश्र व सांसद संगम लाल गुप्ता ने प्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ को 29 अगस्त 22 को प्रार्थना पत्र दिया था। जिसमे परियावां बाजार को नगर पंचायत का दर्जा दिलाने के लिए निवेदन किया है जिसमे ब्लाक कालाकांकर की सबसे बड़ी ग्राम पंचायत परियावां से सटे परसई, गौरी, गुलरहीबाग व मुरस्सापुर के परियावां लवाना सड़क के किनारे बसे भाग को शामिल कर लिया जाय तो परियावां नगर पंचायत का दर्जा की जनसंख्या पर्याप्त हो जाएगी। मांग करने वालो में मुख्य रूप से ब्यापारी विजय कुमार अग्रहरि, गोपाल जी अग्रवाल, गिरिजाशंकर अग्रहरि, सजन लाल अग्रहरि, गनेश अग्रहरि, पप्पू गुप्ता, अर्जुन गुप्ता, आशीष जायसवाल, कमलेश कुमार अग्रवाल, भरत जी अग्रवाल, सोम सोनी, नवीन जायसवाल, बच्चन तिवारी, संतोष कुमार पांडेय, ननके पांडेय, प्रदीप जायसवाल, रिंकू अग्रहरि, सचिन जायसवाल, अनिल अग्रहरि, प्रान अग्रहरि, आदि लोगो ने प्रदेश के मुख्यमंत्री से परियावां बाजार को जल्द नगर पंचायत का दर्जा घोषित करने की मांग की है।

गैंगरेप मामले में एसओ पर एसपी ने बैठाई जांच

प्रतापगढ़। लीलापुर थाना इलाके में छात्र से हुए गैंगरेप के मामले में एसपी ने लीलापुर एसओ सुभाष यादव के खिलाफ जांच बैठाई है। बता दें कि एसओ पर पांच दिनों तक मामले की लीपापोती करने का आरोप है और पीड़िता का मुकदमा दर्ज नहीं किया। पांच दिन बाद एसपी के आदेश पर गैंगरेप का मुकदमा दर्ज हुआ है। मुकदमा दर्ज होने के बाद भी पुलिस अभी तक आरोपियों को गिरफ्तार नहीं कर सकती है। बता दें कि घर के पास खंडहर में दबंगो ने छात्रा को अगवा कर घटना को अंजाम दिया था।

धार्मिक अनुष्ठान को लेकर निकली भव्य कलश यात्रा, मां दुर्गा की उतारी गई भव्य आरती

लालगंज नगर में श्रीराम कथा को लेकर निकली भव्य कलश यात्रा।

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर में सामूहिक श्रीराम कथा तथा श्रीमद्भगवत कथा को लेकर सोमवार को अलग-अलग स्थानों से भव्य कलश यात्रायें निकाली गयी। मनीपुर दीवानी वार्ड बाबा रूद्रेश्वर धाम में सामूहिक श्रीराम कथा के आयोजन को लेकर भव्य कलश यात्रा नगर में निकाली गयी। हरे राम हरे कृष्ण के संकीर्तन में रमी श्रद्वालु महिलायें बड़ी संख्या में सिर पर कलश रखकर बाबा धाम से नेशनल हाइवे के समीप स्थिति बड़ें हनुमान जी मंदिर कलश यात्रा लेकर पहुंची।

अयोध्या धाम से पधारे श्री मानस किंकर जी महाराज व संत महाराज जी के संयोजन में गाजे बाजे व अबीर गुलाल उड़ातें श्रद्वालु इंदिरा चैक होते हुए कथा स्थली पहुंचे। इसके पूर्व संत महात्माओं ने बाबा रूद्रेश्वर का विधि विधान से पूजन अर्चन किया। मॉ दुर्गा की भी भव्य आरती उतारी गयी। कलश यात्रा में चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी तथा क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना के मीडिया प्रभारी ज्ञान प्रकाश शुक्ल भी श्रद्वालुओं की संगत में दिखे।

कलश यात्रा का संयोजन रोशन शुक्ल तथा रमारानी शुक्ला ने किया। कलश यात्रा में संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश, वरिष्ठ अधिवक्ता दयाशंकर पाण्डेय, भाजपा नेता राजेश चन्द्र तिवारी, मुन्ना शुक्ला आदि रहे। इधर चकौड़िया गांव में श्रीमद् भागवत कथा के शुभारम्भ को लेकर भी भव्य कलश यात्रा निकाली गयी। कथा संयोजक पं0 राजकुमार पाण्डेय के संयोजन में कलश यात्रा कथा स्थली से लालगंज होते हुए बाबा घुइसरनाथ धाम पहुंची। सैकड़ों की संख्या में कलश यात्रा में शामिल श्रद्वालु महिलाओं ने बांके बिहारी के चित्र पर पुष्प वर्षा भी की। इस मौके पर वरिष्ठ साहित्यकार विशाल मूर्ति मिश्र, मानस मराल पं0 रामफेर पाण्डेय, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, सुषमा पाण्डेय, अजय पाण्डेय, मालती, लल्ली, आरती, चिंतामणि पाण्डेय आदि रहे। संयोजन विजय व नवीन ने किया।

पूणार्हुति के साथ श्रीराम कथा व शतचंडी महायज्ञ का हुआ समापन

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्र के लखनसेनपुर में चल रही नौ दिवसीय श्रीराम कथा व शतचंडी महायज्ञ का पूणार्हुति के साथ समापन हुआ।

उसके बाद सोमवार को भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। गांव की पौराणिक बुढ़िया माई देवी स्थान पर चल रही नौ दिवसीय कथा को विश्राम दिया गया। आचार्य भार्गव मुनीश जी ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ सभी यजमानों को पूणार्हुति दिलाई। इसी के साथ श्रीराम कथा व शतचंडी महायज्ञ को विराम दिया गया। धार्मिक आयोजन के अंतिम दिवस पर आचार्य भार्गव मुनीश ने रामनाम को सभी मनोरथ पूर्ण करने वाली कामधेनु गाय के समान बताया। पूणार्हुति के बाद प्रसाद का वितरण किया गया। महायज्ञ परिसर में स्थापित कलश को यजमानों ने प्रसाद के रूप में अपने घर ले गए। रविवार को कथा में क्षेत्रीय विधायक ने भी पहुंचकर शतचंडी यज्ञशाला में माथा टेका।

इस दौरान आयोजक अरुण प्रताप सिंह व धर्मेंद्र प्रताप सिंह ने विधायक को सम्मानित किया। गांव के साथ ही दूर-दराज के लोगो ने यज्ञशाला की परिक्रमा की और सभी की सलामती की प्रार्थना की। वही पूरे दिन संगीतमयी श्रीराम संकिर्तन व भडारा चलता रहा। हजारों श्रद्धालुओं ने दोपहर से लेकर आधी रात तक महा-प्रसाद ग्रहण करते हुए दिखाई दिए।इस मौके पर शिवम सिंह,संजय सिंह,रजवंत सिंह,जय सिंह,भल्ले पाण्डेय,विजय पाण्डेय,वायु नंदन मिश्र, रणविजय सिंह, प्रमोद बाबा, शतीश गौड़, अनुभव गौड़, दिनेश सिंह वैध समेत हजारों लोगो ने महाप्रसाद को ग्रहण किया।

शहर की मुख्य सड़कों की सफाई में लगे सौ से अधिक सफाई कर्मी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर पालिका शहर के मुख्य मार्गों की सफाई का कार्य अभियान के रुप में चला रही है। विभिन्न मार्गों की सफाई व घास की कटाई में सोमवार को 100 से ज्यादा सफाई कर्मचारी लगाये गये थे। यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि नगर पालिका के ईओ राम अचल कुरील के निर्देषन में सोमवार को शहर में ट्रेजरी चैराहा से कटरा रोड पर विकास भवन तक, सदर मोड़ से मोती सिंह के चिलबिला स्थित पेट्रोल पम्प तक तथा कम्पनी गार्डेन से लेकर मीरा भवन तक जहां सड़क पर पडे.कूड़े हटाये गये, वहीं सड़कों के किनारे की घास काटी गई। शहर को साफ-सुथरा रखने के लिये नियमित सफाई के अलावा अभियान चलाकर शहर की सफाई कराई जा रही है। सोमवार को जिन मुख्य सड़कों की साफ-सफाई की गई, उसका अपरान्ह में नगर पालिका के ईओ राम अचल कुरील ने निरीक्षण किया। सफाई के इस अभियान में सफाई प्रभारी प्रषांत सिंह, स्वच्छ भारत मिषन के डीसीएम वरुण कुमार सिंह भी सक्रिय रहे। इसके अलावा सरोज चैराहा के निकट कांषीराम कालोनी में विगत एक सप्ताह से ट्रैक्टर, मैजिक, नाला क्लीनिंग मषीन लगाकर सफाई की जा रही है।

सड़क के किनारे की घासों की भी हुई कटाई

सगरा ढलान पर सफाई कार्य का निरीक्षण करते ईओ राम अचल व अन्य

आरपीएफ बैरिक में हुआ पौधरोपण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। स्वच्छ पर्यावरण के मद्देनजर अधिकारियों को निर्देश पर रेलवे सुरक्षा बल की बैरिक में सोमवार को चंदन का पौधा इंस्पेक्टर सीपी मिश्रा ने लगाया। इस मौके पर उन्होंने पेड़ लगाने और पर्यावरण बचाने का आह्वान किया। इस मौके पर सहायक उप निरीक्षक सीपी दूबे, भरत मिश्रा, रोहित, उमेश समेत कई जवान मौजूद थे।

जिला मजिस्ट्रेट ने दो लोगों का निरस्त किया शस्त्र लाइसेंस

प्रतापगढ़। जनपद प्रतापगढ़ के शस्त्र लाइसेंसी जो आपराधिक क्रिया-कलाप में लिप्त होने एवं शस्त्र अनुज्ञा-पत्र की शर्तो का उल्लंघन करने के दोषी पाये गये दो व्यक्तियों के शस्त्र लाइसेंस को जिला मजिस्ट्रेट डा0 नितिन बंसल ने निरस्त कर दिया है। उन्होने थाना हथिगवां ग्राम पुरनेमऊ के राम आसरे यादव पुत्र दुर्गा प्रसाद यादव के शस्त्र एसबीबीएल व थाना आसपुर देवसरा ग्राम करौदहां के खुर्शीद आलम पुत्र कौशर अली के शस्त्र एन0पी0 बोर रिवाल्वर/ पिस्टल को निरस्त कर दिया है।

तमंचे की नोक पर पीड़ित से रंगदारी मांगने की शिकायत

लालगंज, प्रतापगढ़। रंगदारी न देने पर पीड़ित की दुकान में आरोपी द्वारा तमंचे की नोक पर ताला जड़ दिये जाने के आरोप को लेकर पुलिस में पीड़ित ने शिकायत दर्ज करायी है। लालगंज कोतवाली के बाबूराम का पुरवा बेलहा निवासी कृष्ण कुमार यादव पुत्र रामआसरे यादव ने सांगीपुर पुलिस को दी गयी तहरीर में कहा है कि उसने सांगीपुर थाना क्षेत्र के बाबा घुइसरनाथ न्यू बाजार में एक कमरे का बैनामा लिया है। कमरे में वह रिपेयर की दुकान खोल रखी हैं। तहरीर में कहा गया है कि इसी दुकान को लेकर पूरे लक्षिमन का पुरवा के छोटे द्वारा पीड़ित से डेढ़ लाख रुपए रंगदारी मांगी जा रही है। आरोप है कि रंगदारी न देने पर पॉच फरवरी को आरोपी ने पीड़ित के कमरे में देर शाम ताला जड़ दिया। इसके बाद आरोपी ने पीड़ित पर तमंचा सटाकर रंगदारी की मांग की। पीड़ित ने पुलिस में तहरीर देकर जांनमाल की रक्षा की गुहार की है।

बरिया समुद्र में दिखा दस फिट लम्बा अजगर

अखंड भारत संदेश

बांस के पेड़ में लिपटा अजगर सांप

बिहारगंज, प्रतापगढ। अंतू थाना क्षेत्र ग्राम सभा बरिया समुद्र में करीब 10 फीट का लंबा अजगर दिखने से ग्रामीणों में दहशत है। बिहारगंज के समीप बरिया समुद्र गाँव में विशालकाय अजगर देखा गया। ग्रामीणों ने इसकी सूचना वन विभाग को दी जिसे लेकर वन विभाग अभी तक मामले को लेकर सक्रिय नहीं हुआ है। बता दें कि पिछले दिनों भी अजगर दिखने पर वन विभाग की टीम आकर खाली हाथ लौटी थी। वन विभाग की इस लापरवाही से किसी दिन बड़ा हादसा हो सकता है।

ओवरलोड बालू व राखड़ से लदे ट्रको से सड़के हो रही क्षतिग्रस्त

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। एक तरफ प्रदेश के मुख्यमंत्री सड़को को गड्ढा मुक्त करने के लिए सीसी रोड का निर्माण कराने में पानी की तरह पैसा बहा रही है तो दूसरी तरफ बालू व राखड़ से लदे ओवरलोड ट्रके सड़को पर मानक के विपरीत ओवरलोड गिटटी लाद कर सड़क को क्षतिग्रस्त करने में कोई कसर बाकी नही छोड़ रहे है जिसका खामियाजा बाजार के ब्यापारियों व राहगीरों को भुगतना पड़ रहा है। बता दें कि इन दिनों लखनऊ प्रयागराज नेशनल हाइवे से जुड़े जनपद के कौशाम्बी सीमा पर बने गंगापुल से ओवरलोड ट्रकों का संचालन धड़ल्ले से जारी है। जब कि गंगापुल के दोनो तरफ नवाबगंज पुलिस व कौशाम्बी पुलिस की पिकेट डियूटी लगी रहती है फिर भी ट्रकों पर बालू व राखड़, मोरंग व रेलवे की ओवरलोड गिटटी को लादकर सड़क पर फरार्टे के साथ डम्फर दौड़ रहे है जिनको पकड़ना किसी के बस की बात नहीं है।

आरटीआई आनलाइन पोर्टल किया गया विकसित

प्रतापगढ़। अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0)/जनसूचना अधिकारी (राजस्व) त्रिभुवन विश्वकर्मा ने बताया है कि माननीय मुख्यमंत्री द्वारा आर0टी0आई0 आवेदनों/ प्रथम अपीलों की समीक्षा में जनसूचना के आफलाइन आवेदन के स्थान पर आनलाइन आवेदन किये जाने हेतु आर0टी0आई0 आनलाइन पोर्टल आमजन हेतु विकसित किया गया है। उ0प्र0 में सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के अन्तर्गत आवेदनों/प्रथम अपीलों को आनलाइन प्राप्त कर निस्तारित किये जाने हेतु वेबपोर्टल पर विकसित है।

खबर संक्षेप

मां बेटी बेटा को दबंगों ने लात घूसों से पीटा

कौशाम्बी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के बरौला गांव के मजरा खेरवा में रास्ते में लकड़ी गोबर खाद और पशु चारा के लिए चराही बना कर जानवर बांधकर अतिक्रमण करने वाली एक महिला को गांव के सुरेश पटेल के बेटे गब्बर दिलीप आदि लोगों ने मना किया इस बात को लेकर बहस होने लगी। पुलिस को दिए शिकायती प्रार्थना पत्र में गांव की महिला अभिलाषा सोनकर पत्नी अमृतलाल सोनकर का कहना है कि दबंग सुरेश के बेटे गब्बर दिलीप अपने पिता घर की महिलाओं और साथियों के साथ मिलकर लात घूसा से मारा पीटा है महिला का कहना है कि बीच-बचाव करने पहुंची उसकी बेटी कोमल और बेटे रवि करन को भी लात घूसा से दबंगों ने पीटा है मामले की सूचना महिला ने पुलिस को दी है।

चोरी का वांछित अभियुक्त को किया गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना संदीपन घाट पुलिस बल द्वारा 36 घण्टे के अन्दर सफल अनावरण करते हुए अभियोग से सम्बन्धित माल मसरूका एवं अभियुक्त महमूद पुत्र मो० सईद निवासी मनौरी थाना पुरामुफ्ती जनपद प्रयागराज को कोईला चौराहा से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

गांजा के साथ अभियुक्त किया गया गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अवैध मादक पदार्थ की तस्करी के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम मे थाना मंझनपुर पुलिस बल द्वारा अभियुक्त शमीन पुत्र बफासी निवासी आजयनगर थाना मंझनपुर को दानपुर पेट्रोल पंप के पास से 520 ग्राम नाजायज गांजा के साथ गिरफ्तार कर गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पर मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

प्रतिदिन 10 बजे से आमजन की शिकायतों को सुनकर निस्तारित करें अधिकारी : डीएम

अखंड भारत संदेश

डीएम ने की विकास प्राथमिकता कार्यक्रमों की प्रगति की विस्तृत समीक्षा, 14 फरवरी 2023 को 501 जोड़ों का विवाह सम्पन्न कराये जाने का लक्ष्य निर्धारित, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत 14 फरवरी को 501 जोड़ां का विवाह सम्पन्न कराया जायेगा

बैठक को संबोधित करते जिलाधिकारी

बैठक में उपस्थित अधिकारी

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार द्वारा उदयन सभागार में सम्बन्धित अधिकारियों के साथ विकास प्राथमिकता कार्यक्रमों की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने सभी अधिकारियों को आईजीआरएस के अन्तर्गत प्राप्त शिकायतों के निस्तारण में गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने एवं प्रतिदिन आईजीआरएस पोर्टल को चेक करने तथा शिकायतकर्ता से अवश्य सम्पर्क कर शिकायत निस्तारित करने के निर्देश दियें। उन्होंने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाय कि कोई भी शिकायत डिफाल्टर न होने पाये। उन्होंने सभी अधिकारियों को अपने कार्यालय में प्रतिदिन 10 बजे से आमजन की शिकायतों को सुनकर निस्तारित करने तथा शिकायत सुनने का समय सम्बन्धित बोर्ड भी कार्यालय के बाहर लगवाने तथा शिकायत पंजीयन में सभी शिकायतों को अंकित करने के निर्देश दियें। उन्होंने निराश्रित गोवंशों की समीक्षा के दौरान सहभागिता योजना के तहत लक्ष्य आवंटित कर गोवंशों की सुपुर्दगी में तेजी से प्रगति लाने के भी निर्देश दियें। उन्होंने सभी सम्बन्धित अधिकारियों से कहा कि गोद लिए गये विद्यालयों एवं ऑगनबाड़ी केन्द्रां का नियमित रूप से निरीक्षण कर आख्या उपलब्ध करायें। मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी ने श्रम प्रवर्तन अधिकारी को पंजीकृत निर्माण श्रमिकों को विभिन्न योजनाओं के तहत लाभान्वित कराने एवं निर्माण श्रमिकों का अधिक से अधिक पंजीयन कराने के निर्देश दियें। उन्होंने निवेश मित्र एवं झटपट पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों की समीक्षा के दौरान सम्बन्धित अधिकारियों को शिकायतों को समयान्तर्गत निस्तारित करने के निर्देश दिये। बैठक में जिला समाज कल्याण अधिकारी ने बताया कि मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अन्तर्गत दिनांक 14 फरवरी 2023 को 501 जोड़ां का विवाह सम्पन्न कराये जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया हैं। जिला खादी ग्रामोद्योग अधिकारी ने अवगत कराया कि प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत 50 लक्ष्य के सापेक्ष बैकों द्वारा 54 लाभार्थियों के ऋण आवेदनों को स्वीकृत किया गया है एवं मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना के तहत 10 लक्ष्य के सापेक्ष बैकों द्वारा 16 लाभार्थियों के ऋण आवेदनों को स्वीकृत किया गया हैं। जिलाधिकारी द्वारा नई सड़कों का निर्माण/चौड़ीकरण व सुढ़ृढ़ीकरण, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, पशुओं के टीकाकरण की प्रगति, आयुष्मान भारत योजना, दवाओं की उपलब्धता, ऑपरेशन कायाकल्प, हैण्डपम्पों की रिबोर, मनरेगा एवं प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी एवं ग्रामीण की प्रगति की भी विस्तृत समीक्षा की गई बैठक में मुख्य विकास अधिकारी डॉ. रवि किशोर त्रिवेदी, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. सुषेन्द्र कुमार एवं जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी अजीत प्रताप सिंह सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

न्यूज झरोखा

6 दिन बंद रहेगा धुमाई रेलवे फाटक

अझुवा कौशाम्बी। दिल्ली हावड़ा रेलमार्ग में अप लाइन में नई रेलवे पटरी निर्माण की वजह से धुमाई रेलवे गेट न . 32 उ --06 फरवरी से 11 फरवरी तक बंद रहेगा उक्त जानकारी देते हुए रेलकर्मियों ने एक सांकेतिक बोर्ड टांग दिया है रेलकर्मियों ने बताया अभी तक ट्रेनों की रफ्तार 130 किमी प्रति घंटे रफ्तार थी नई पटरियों के बिछ जाने से अधिकतम गति 160 किमी प्रति घंटे हो जाएगी धुमाई रेलवे गेट बंद होने से धुमाई,साखा,बरीपुर पहाड़पुर,पैसा,थोन गुरु का पुरवा,रघुनाथपुर सोंधिया मई सहित दर्जनों गांव आने जाने वाले लोगों को कनवार अंडर पास य अटसराय बाया सिराथू होकर अपने गंतव्य को पहुंचना होगा

पिकप की टक्कर से बाइक सवार घायल, अझुवा चौकी पुलिस ने कब्जे में लिया पिकप वाहन

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली के ससुर खदेरी नदी पुल के पास पिकप की टक्कर से बाइक सवार घायल हो गया,जिसे पिकप चालक ने अस्पताल में भर्ती कराया है।अझुवा चौकी पुलिस ने पिकप वाहन को अपने कब्जे में ले लिया है घटनाक्रम के मुताबिक बड़का उम्र करीब 23 वर्ष पुत्र बागवान निवासी वार्ड नं 2 अम्बेडकर नगर अझुवा मोटरसाइकिल से अपने ससुराल पहाड़पुर जा रहा था राष्ट्रीय राजमार्ग ससुर खदेरी नदी पुल के पहले गलत दिशा से पिकप(चिकेन वाहन)चालक शमीम पुत्र सैफुद्दीन निवासी अलीपुर जीता थाना कड़ा धाम तीव्र गति से अझुवा की तरफ आ रहा था दोनों की आमने सामने जोरदार टक्कर हो गयी जिससे दोनों वाहन छतिग्रस्त हो गए बाइक सवार बड़का घायल हो गया जिसे पिकप ड्राइवर अपने गाड़ी में लाकर अझुवा के निजी अस्पताल में भर्ती कराया वहीं सूचना पर पहुंची अझुवा चौकी पुलिस पिकप वाहन को कब्जे में लेकर जांच पड़ताल में जुट गई है।

ट्रेन हादसे में अधेड़ व्यक्ति की मौत

कोखराज कौशांबी। सांदीपन घाट थाना क्षेत्र के मनोहरगंज भरवारी रेलवे स्टेशन के बीच हावड़ा दिल्ली रेल लाइन पर सोमवार की भोर 4:00 बजे ट्रेन की टक्कर से एक अधेड़ की मौत हो गई है सूचना पाकर सांदीपन घाट थाना पुलिस मौके पर पहुंची है और मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है बताया जाता है कि सांदीपन घाट थाना क्षेत्र के पट्टी परवेजा बाद गांव निवासी मणिलाल उम्र लगभग 50 वर्ष पुत्र गुलदाक की हावड़ा दिल्ली रेल लाइन पर मनोहरगंज भरवारी स्टेशन के बीच डाउन लाइन खंबा नंबर 855 /20--22 के बीच ट्रेन हादसे में टकराने के बाद मौत हुई है सुबह जब ग्रामीण खेतों की ओर जा रहे थे तो रेल लाइन के खंबा के पास शव पड़ा देखा मामले की सूचना ग्रामीणों ने पुलिस को दी है मौके पर स्थानीय मूरतगंज पुलिस चौकी के जवान पहुंचे हैं मृतक की शिनाख्त कराई है और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

मासूम की हत्या कर पानी की टंकी में फेंका शव

अखंड भारत संदेश

देर रात मां के बिस्तर से संदिग्ध हालत में गायब हो गई थी मासूम, मां के सोते वक्त बन्द घर के भीतर बाहरी व्यक्ति के आने पर छूटे तमाम सवाल

कौशाम्बी। जिले के पिपरी थाना क्षेत्र में घर के बाहर रखी पानी की टंकी में मासूम बच्ची का शव मिलने से हड़कंप मच गया,देर रात मां के बिस्तर से संदिग्ध हालत में दो महीने की दुधमुंही मासूम बच्ची गायब हो गई थी,काफी खोजने के बाद बच्ची का शव पानी की टंकी मिलने से कोहराम मच गया।शादी के सोलह साल बाद महिला ने मासूम को जन्म दिया था,जिसके बाद खुशियां घर आई थी,घर परिवार की खुशियां मातम में बदल गई।रहस्यमय घटना को लेकर छानबीन में पुलिस जुट गई है। घटना पिपरी थाना क्षेत्र की है जहा की रहने वाली कविता की शादी सराय अकिल थाना क्षेत्र के तरनी गांव के अवनीश पाल के साथ 16 साल पहले हुई थी,शादी के इतने साल बाद दवा,इलाज और मान मनौती के बाद डेढ़ महीने पहले कविता ने एक मासूम बच्ची को जन्म दिया था,जिसके बाद परिवार में खुशी का माहौल था,देर रात मां के पास सो रही मासूम बच्ची अचानक से गायब हो गई,मां की नींद खुली तो बच्ची नही मिली तो हड़कंप मच गया,मासूम बच्ची के गायब हो जाने की बात पर परिवार और पड़ोस के सभी लोग बच्ची को खोजने लगे,तभी घर के पास में रखी पानी की टंकी को चेक किया गया तो उसमे मासूम का शव उतराते हुए मिला। मां के सोते वक्त घर बन्द रहा होगा तो आखिर घर के भीतर बाहरी ब्यक्ति कैसे आया मासूम की मौत ने तमाम सवाल छोड़ दिए हैं।

पत्नी की फटकार से आहत युवक ने की आत्महत्या

आपत्तिजनक स्थिति में महिला को देखने के बाद युवक ने जीवन लीला समाप्त करने का कर लिया निर्णय

कौशांबी करारी थाना क्षेत्र के सैबसा गांव के एक युवक ने सोमवार को फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर लिया है मामले की जानकारी मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया है मामले की सूचना पुलिस को मिली मौके पर पहुंची पुलिस ने युवक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है जैसे ही युवक के आत्महत्या किए जाने की जानकारी ग्रामीणों को लगी मौके पर ग्रामीणों का मजमा लग गया है। जानकारी के मुताबिक करारी थाना क्षेत्र के सैबसा गांव निवासी राजेंद्र लोध और बिल्ला उम्र लगभग 25 वर्ष पुत्र श्यामलाल की शादी 7 महीने पूर्व मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के भददुरपुर गांव की युवती से हुई थी बताया जाता है कि शादी के बाद से ही युवती ससुराल में नहीं रहना चाहती आए दिन युवती मायके पहुंच जाती है इसी बात को लेकर युवक से आए दिन विवाद हुआ करता था एक सप्ताह पूर्व युवक अपनी ससुराल भददुर पुर गया था बताया जाता है कि जहां आपत्तिजनक स्थिति में महिला को देखने के बाद उसका फिर विवाद हुआ था विवाद इतना बढ़ गया कि युवक ने जीवन लीला समाप्त करने का निर्णय कर लिया विवाद के बाद रविवार को युवक ससुराल से वापस अपने गांव सैबसा लौटा और सोमवार की सुबह युवक ने फांसी का फंदा बनाकर आत्महत्या कर लिया है मामले की जानकारी मिलने के बाद गांव के लोगों की भीड़ घटनास्थल पर लग गई है परिजनों में कोहराम मचा है पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

एसपी ऑफिस के बाहर सड़क पर न्याय के लिए मासूम बच्चों के साथ विलाप करती रही युवती

चौकी इंचार्ज टेवा पर गंभीर आरोप के बाद भी चौकी इंचार्ज पर नहीं हुई किसी प्रकार की कार्यवाही

कौशाम्बी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के टेवा पुलिस चौकी अंतर्गत टेवा गांव की एक युवती दबंगों के आतंक अत्याचार से इस कदर पीड़ित है कि उसे एसपी ऑफिस के बाहर सड़क पर दो छोटे-छोटे अबोध बच्चों को लेकर विलाप करना पड़ा है एसपी ऑफिस के बाहर सड़क पर विलाप कर रही महिला की पीड़ा देखकर मौके पर मजमा लग गया वाहनों के चक्के थम गए बीच सड़क पर महिला के बच्चों के साथ बिलाप करने के चलते चौकी इंचार्ज ने पुलिस की किरकिरी करा दी। महिला का आरोप है कि चौकी इंचार्ज टेवा अपराधियों से सांठगांठ कर उसका उत्पीड़न करवा रहे हैं उसके साथ लगातार अत्याचार अन्याय हो रहा है लेकिन किसी भी मामले में चौकी इंचार्ज ने मुकदमा नहीं दर्ज किया है आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं की है हालांकि इसके पहले भी कई बार चौकी इंचार्ज पार कमजोर मजलूम के साथ आतंक अत्याचार का आरोप लग चुका है लेकिन चौकी इंचार्ज की बड़ी पकड़ के चलते चौकी इंचार्ज के तमाम गुनाह माफ हो जाते हैं महिला योगी सरकार से फरियाद कर चुकी है योगी सरकार ने पुलिस अधीक्षक कार्यालय भेजा है लेकिन योगी सरकार के भेजने के बाद भी महिला को कौशांबी पुलिस से न्याय नहीं मिल सका है जिस पर युवती को दो छोटे-छोटे मासूम बच्चों के बीच सड़क पर लोट कर विलाप करना पड़ा है यह पुलिस की न्याय व्यवस्था पर करारा तमाचा है कि बीच सड़क पर लोट लोट कर बिलाप कर के अपने दो छोटे बच्चों के साथ युवती अपने साथ हुई जुल्म ज्यादती अत्याचार पर न्याय की कार्यवाही की मांग कर रही है और उसे न्याय मिलता नहीं दिख रहा है।

बकरी व रिबोर बर्मा चोरी कर भाग रहे चोर को ग्रामीणों ने पकड़ा

कोखराज कशिया क्षेत्र के कई गांव में भी घटनाओं को दे चुके अंजाम

अखंड भारत संदेश

कोखराज कौशाम्बी। कोखराज क्षेत्र के कशिया पश्चिम में डिप्टी सीएम के पेट्रोल पम्प के पास ही नौढिया की तरफ रोड पर बने इंटरलॉकिंग ईट बनाने की फर्म के सामने कुलदीप केसरवानी के नलकूप में पीछे की दीवार से चोर कूद गए और नलकूप के हाते में बंधी बकरी के साथ साथ हैण्ड पम्प रिबोर का बोर करने वाले बर्मा समेत कई समान चोरी कर भागने लगे मूलचंद उर्फ मौला घर से खाना खा कर उसी नलकूप की ओर जा रहा था तभी उनकी नजर नलकूप के पास एक खड़े वाहन पर पड़ी कुछ लोगो को बुला कर चोरी किया हुआ सामान वाहन में लादने जा रहे चोरों को ग्रामीणों ने खदेड़ा जिसमें कई चोर भाग निकले लेकिन एक चोर को ग्रामीणों ने पकड़ लिया जिसकी पहचान सोनू के रूप में हुई पकड़े गए चोर को पुलिस के हवाले कर दिया गया सरसों के खेत में चोरी का सामान भी पुलिस ने बरामद कर लिया पुलिस पूछताछ कर चोरों के गिरोह तक पहुंचने का प्रयास कर रही है जिससे क्षेत्र की और चोरियों का खुलासा हो सकता है।

बाजार करके वापस जा रहे ईट भट्ठा मजदूर को पिकअप ने रौंदा घटनास्थल पर मौत

अझुवा कौशांबी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के निहालपुर ईट भट्ठे में महोबा के रहने वाले मजदूर ईट पथाई का काम करते हैं सोमवार को ईट भट्ठा मजदूर बाजार करके वापस ईट भट्ठा जा रहे थे जैसे ही ईट भट्ठा मजदूर सैनी कोतवाली क्षेत्र के कमासिन ओवरब्रिज के पास पहुंचे तेज रफ्तार अनियंत्रित पिकअप ने ईट भट्ठा मजदूर कौ रौंद दिया है जिससे ईट भट्ठा मजदूर की घटनास्थल पर मौत हो गई है हादसे की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर आसपास के लोगों की भीड़ लग गई मामले की सूचना पुलिस को दी गई घटनास्थल पर पहुंची कोतवाली पुलिस ने मृतक मजदूर के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है मजदूर की मौत की जानकारी मिलते ही तमाम मजदूर घटनास्थल पर पहुंच गए हैं खबर लिखे जाने तक मृतक मजदूर का नाम पता की जानकारी नहीं हो सकी है।

सीएससी सिराथू में तैनात वार्ड ब्याय बना अधिकारियों का दलाल एजेंट

अखंड भारत संदेश

तैनाती स्थल छोड़कर पूरे दिन वार्ड ब्याय मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में कर रहा है दलाली

नशेड़ी हुजूर के चलते कौशांबी जिले की पूरी स्वास्थ्य व्यवस्था हो चुकी है चौपट

कौशाम्बी। एक तरफ योगी सरकार भ्रष्टाचार मुक्त शासन की दुहाई दे रही है दूसरी तरफ उसी के अधिकारी भ्रष्टाचार युक्त व्यवस्था को बढ़ाने में लगे हैं खुलेआम भ्रष्टाचार पनप रहा है लेकिन योगी के अधिकारी भ्रष्टाचार रोकने के बजाय भ्रष्टाचारियों के कारनामों को नजरअंदाज कर बेखौफ तरीके से भ्रष्टाचार और अवैध वसूली को बढ़ावा देने में लगे हैं भ्रष्टाचार का आलम यह हो गया है कि अब तो नशेड़ी अफसर भी बड़े बड़े पद पर विराजमान होकर योगी सरकार से बड़ा वेतन ले रहे हैं और नशेड़ी अफसरों पर भी कार्यवाही नहीं हो रही है ताजा मामला स्वास्थ्य विभाग का है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सिराथू में तैनात एक वार्ड ब्याय इन दिनों मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय के एक लिपिक का खासम खास है सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सिराथू में तैनाती होने के बाद यह वार्ड ब्याय तैनाती स्थल पर ड्यूटी नहीं देता है फिर भी इस वार्ड ब्याय को अभी तक प्रभारी चिकित्सा अधिकारी सिराथू और मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने निर्लंबित कर बेतन नहीं रोका है तैनाती स्थल छोड़कर वार्ड ब्याय पूरे दिन मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में उपस्थित रहकर दलाली और कमीशन खोरी कर रहा है प्रत्येक गलत कार्यों को कराने का ठेका उक्त वार्ड ब्याय ले रहा है आखिर वार्ड ब्याय की कितनी लंबी पकड़ है कि प्रत्येक कार्यों में उसके वसूली के बाद कार्य आसानी से स्वास्थ विभाग में हो जाते हैं। मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में वार्ड ब्याय के मौजूद रहने के बाद अभी तक मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने वार्ड ब्याय के कारनामे को संज्ञान लेकर उस पर निलंबन और वेतन रोकने जैसे कठोर कार्यवाही नहीं की है इतना ही नहीं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में ड्यूटी न करने वाले वार्ड ब्याय के कारनामों को अभी तक प्रभारी चिकित्सा अधिकारी ने भी संज्ञान लेकर निलंबन वेतन रोकने की कार्यवाही नहीं की है जिससे यही लगता है कि प्रभारी चिकित्सा अधिकारी भी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में मौजूद नहीं रहते हैं जिससे उन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की गतिविधियों का पता नहीं चल पाता है स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों का कहना है कि नशेड़ी हुजूर के चलते कौशांबी जिले की पूरी स्वास्थ्य व्यवस्था चौपट हो चुकी है।

धर्मा देवी इंटर कॉलेज में मेधावियों का हुआ सम्मान

मेधावी छात्राओं को सम्मानित करते स्कूल प्रबंधक

सम्मान समारोह के दौरान उपस्थित विद्यालय के छात्र छात्राएं

अखंड भारत संदेश

छात्र छात्राओं के सांस्कृतिक कार्यक्रम को आए हुए लोगो ने सराहा

कौशाम्बी। धर्मा देवी इण्टर कॉलेज केन कनवार मे विदाई एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन सोमवार को किया गया कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि उपजिलाधिकारी सिराथू राहुल देव भट्ट रहे कार्यक्रम की शुरूवात माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर की गयी कार्यक्रम के दौरान मेधावीछात्र छात्राओं को सम्मानित किया गया है माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा आयोजित विभिन्न पाठ्येत्तर क्रियाकलापों में राष्ट्र स्तर पर राइफल शूटिंग में यश जायसवाल, ज्योति मौर्य, रेशमा देवी,शेफा फातमा,खुशबू देवी तथा स्काउट गाइड में राष्ट्रीय स्तर पर अनूप कुमार गौतम व रुद्र प्रताप सहित अन्य क्रियाकलापों में राज्य स्तर , मण्डल स्तर पर विद्यालय का नाम रोशन करने वाले 31 उदीयमान छात्र छात्राओं व उनके मार्गदर्शक शिक्षकों को उपजिलाधिकारी सिराथू राहुल देव भट्ट एवं रामदत्त त्रिपाठी पूर्व बी बी सी संवाददाता उत्तर प्रदेश के कर-कमलों द्वारा सम्मानित किया गया` इस कार्यक्रम के अवसर पर विद्यालय के संस्थापक रामावतार त्रिपाठी,प्रबन्धक रामसुभग त्रिपाठी चन्द्रकान्त पाण्डेय गया प्रसाद मिश्र गुलाब सिंह शिवप्रकाश राजपूत मारुति नन्दन त्रिपाठी रामकरण त्रिपाठी रामकरण त्रिपाठी, रामलखन त्रिपाठी आदि अतिथि एवं सैकड़ों अभिभावक उपस्थित रहें विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ.रामकिरण त्रिपाठी ने आये हुये अतिथियो का आभार व्यक्त किया` कार्यक्रम का संचालन रामशंकर सिंह ने किया `छात्र छात्राओं के सांस्कृतिक कार्यक्रम को आए हुए लोगो ने सराहा।

दस साल या उससे अधिक पुराने आधार को अवश्य करायें अपडेट : सहायक प्रबन्धक

कौशाम्बी। सहायक प्रबन्धक, भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण प्रभात सिंह ने जनपदवासियों को सूचित किया है कि अगर आपका आधार बने हुए 10 वर्ष या उससे अधिक हो गए हैं तो अपने नजदीकी आधार केंद्र पर जाकर आधार अपडेट या ऑनलाइन एसएसयूपी के माध्यम से अपडेट जरुर करायें। उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन एवं भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण द्वारा सामूहिक रूप से जनपद में आधार अपडेट के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। आधार एक अति महत्वपूर्ण दस्तावेज है, इसके माध्यम से केंद्र और राज्य सरकार की सभी योजनाओं का लाभ मिलता है, इसलिए इसका अपडेटेड होना जरुरी और लाभदायक है, अगर आपका आधार अपडेटेड होता है, तो आपको केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में बहुत आसानी होती है। आधार की एक विशेषता है कि आप इसे आसानी से अपडेट करा सकतें हैं, विशेष तौर पर अपना पता और मोबाइल नंबर हमेशा अपडेट रखें। सहायक प्रबन्धक, भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण ने बताया कि अगर आपका आधार बने हुए 10 साल या उससे अधिक हो गए है तो आप दो प्रकार से आधार अपडेट करा सकतें हैं। आप पते एवं पहचान का वैध प्रमाण अपलोड कर सकतें हैं, जिसके लिए निर्धारित शुल्क 25 रु0 है तथा अपने नजदीकी आधार केंद्र पर जाकर अपने आधार में अपडेट करा सकतें हैं, जिसके लिए निर्धारित शुल्क 50 रुपए हैं। उन्होंने बताया कि जनपद कौशाम्बी में आधार नामांकन और अपडेट करने के लिए लगभग 97 आधार नामांकन और अपडेट मशीन कार्यरत हैं।

काम करे कोई मजदूरी ले जाए कोई और

अखंड भारत संदेश

एपीओ मनरेगा डीसी मनरेगा को बर्खास्त कर इनकी संपत्ति नीलाम कर मजदूरों की मजदूरी दिए जाने की है जरूरत, डीसी मनरेगा की सांठगांठ से पूरे जिले के ग्राम पंचायतों में मनरेगा मजदूरों के हक पर डाला जा रहा है डाका

कौशाम्बी। मजदूरों को रोजगार देने के लिए केंद्र सरकार द्वारा चलाई गई मनरेगा योजना इन दिनों भ्रष्टाचारियों की कमाई का साधन बन गई है मनरेगा योजना में 20% कमीशन खोरी खुलेआम हो रही है खंड विकास कार्यालय में मौजूद एपीओ मनरेगा अवैध वसूली कर दलालों की तरह अधिकारियों तक पहुचाने में लगे हैं जिससे मजदूरों के मेहनत करने के बाद भी उनकी उपस्थिति रजिस्टर में नहीं दर्ज की जाती है जिससे उन्हें मजदूरी नहीं मिलती है ग्राम प्रधान और रोजगार सेवक रिश्तेदार परिचितों के फर्जी नाम को दर्ज कर उनके बैंक खाते से मजदूरी निकालकर मजदूरों के हिस्से की रकम निकालने में लगे हैं पूरे जिले में यह खेल बीते कई वर्षों से बेखौफ तरीके से संचालित हो रहा है प्रत्येक गांव में मनरेगा में काम करने के बाद दर्जनों मजदूर अपनी मजदूरी पाने के लिए अधिकारियों का चक्कर लगा रहे हैं लेकिन इस मूक बधिर सरकार में उनकी सुनने वाला कौन है ताजा मामला विकासखंड नेवादा के ग्राम पंचायत बूंदा का है जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचे कई दर्जन ग्रामीण मजदूरों ने जिला अधिकारी को शिकायती पत्र देकर बताया कि बूंदा गांव में मनरेगा योजना में गीता देवी भैयालाल चंदा देवी कुसुम देवी श्रीराम सुमित्रा देवी प्रभु राम बहादुर राम चंदा राम लाल भंवरीदेवी बुदुल छोटकी महगू राम बहोरी लाल ज्ञान बाबू सहित तमाम लोगों ने मनरेगा में मजदूरी की है लेकिन उसके बाद भी उनकी मजदूरी उपस्थिति रजिस्टर में नहीं दर्ज की गयी है रोजगार सेवक कंधई लाल ग्राम प्रधान और अपने रिश्तेदारों और परिचितों का नाम उपस्थिति रजिस्टर में फर्जी तरीके से भरकर उनके खाते में मजदूरी की रकम निकालकर हिस्सा बांट कर रहे हैं मजदूरों ने बताया कि 24 मजदूरों का 1600 दिन की लगभग 3 लाख रुपए से अधिक की मजदूरी बूंदा ग्राम पंचायत में बकाया है जिसे मांगने के बाद उपस्थिति रजिस्टर में नाम नहीं भरा जा रहा है जिससे मजदूरों को मजदूरी नहीं मिल रही है यह तो अकेले एक गांव का मामला है यदि पूरे जिले की बात की जाए तो कई हजार मजदूरों की कई करोड़ मजदूरी ग्राम पंचायत के जिम्मेदार डकार चुके हैं डीसी मनरेगा की सांठगांठ से पूरे जिले के ग्राम पंचायतों में मनरेगा मजदूरों के हक पर डाका डाला जा रहा है शिकायत की जांच के बाद भी मजदूरों को उनका हक नहीं मिल रहा है डीसी मनरेगा मजदूरों की मजदूरी के हो रहे घोटाले के मामले में धृतराष्ट्र बन चुके हैं जिलाधिकारी से शिकायत के बाद भी मजदूरों को मजदूरी नहीं मिल रही है मजदूरों के मेहनत करने के बाद उनकी उपस्थिति दर्ज कर दूसरे की फर्जी उपस्थिति दर्ज कराएं जाने मजदूरों की मजदूरी में डाका डालने वाले एपीओ मनरेगा और डीसी मनरेगा को बर्खास्त करते हुए इन पर मुकदमा दर्ज करा कर इनकी गिरफ्तारी करा कर जेल भेजने के बाद इनकी संपत्ति को नीलाम कर के मजदूरों की मजदूरी के भुगतान कराए जाने की जरूरत है लेकिन जिला अधिकारी और आयुक्त इलाहाबाद ने अभी तक एपीओ मनरेगा और डीसी मनरेगा को निलंबित कर बर्खास्त कर इनकी गिरफ्तारी करा कर जेल भेज कर इनकी संपत्ति को नीलाम कर मजदूरों की मजदूरी नहीं दिलाई है जिससे योगी सरकार की भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था पर बड़े सवाल खड़े हो रहे हैं।

संपादकीय

दुबई में नए इस्लाम की पुकार !

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

दुबई में शनिवार को विश्व बंधुत्व-दिवस मनाया गया। इस मुस्लिम राष्ट्र में पिछले 10-15 साल से मुझे किसी न किसी समारोह में भाग लेने कई बार आना पड़ता है। सात देशों का यह महासंघ संयुक्त अरब अमारात कहलाता है। यह सिर्फ सात देशों का महासंघ ही नहीं है, यह कम से कम 100 देशों का मिलन-स्थल है। जैसे हम न्यूयार्क स्थित संयुक्तराष्ट्र संघ के भवन में दर्जनों राष्ट्रों के लोगों से एक साथ मिलते हैं, बिल्कुल वैसे ही दुबई और अबू धाबी वगैरह में सारी दुनिया के विविध लोगों के दर्शन कर सकते हैं। जैसे भारत में आप दर्जनों धर्मों-संप्रदायों, जातियों, रंगों, भाषाओं, वेशभूषाओं वाले लोगों को एक साथ रहते हुए देखते हैं, बिल्कुल वैसा ही नजारा यहां देखने को मिलता है। यानी दूसरे शब्दों में यह छोटा-मोटा भारत ही है। इस संयुक्त महासंघ की संपन्नता और भव्यता देखने लायक है। यहां जो विश्व-बंधुत्व दिवस मनाया गया, उसका संदेश क्या है? लगभग वही है, जो गांधीजी कहा करते थे यानी सर्वधर्म समभाव। हर धार्मिक व्यक्ति अपने धर्म को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ धर्म मानता है। यह धारणा न तो तर्क पर टिक पाती है और न ही तथ्य पर। सारे धर्म, मजहब और संप्रदाय अंधविश्वास की संतान हैं। पैदा होते से ही शिशुओं को उनकी घुट्टी पिला दी जाती है। यह घुट्टी उनका फायदा भी करती है और नुकसान भी। हम भारतीयों ने इसका नुकसान ज्यादा देखा है। देश के 1947 में इसी कारण दो टुकड़े हो गए। दूसरा टुकड़ा किस नरक से गुजर रहा है, इस तथ्य को हम देख रहे हैं। संयुक्त अरब अमारात इस अर्थ में छोटा-मोटा स्वर्ग है। यहां आपको ऐसे भव्य मंदिर, गुरुद्वारे और गिरजे मिल जाएंगे कि आप दांतों तले उंगली दबा लें। शेख नाह्यान से जब मैंने कुछ वर्षों पहले निवेदन किया कि हमारे गुजराती लोग अक्षरधाम जैसा मंदिर यहां बनाना चाहते हैं तो उन्होंने तुरंत लगभग 30 एकड़ जमीन दिलवा दी। विश्व बंधुत्व दिवस पर यहां कई समारोह हुए, जिनमें मुस्लिम मंत्रियों, विद्वानों के अलावा कई धर्मों के विशिष्ट व्यक्तियों ने भाग लिया। मुस्लिम वक्ताओं ने दो-टूक शब्दों में कहा कि यदि इस्लाम अपने आप का आधुनिकीकरण नहीं करेगा तो उसे बड़ा खतरा पैदा हो जाएगा।

संयुक्तराष्ट्र की पहल पर यूएई, सउदी अरब, बहरीन और मिस्र ने यह पहल की है। थाईलैंड और मलेशिया के प्रतिनिधियों ने साफ-साफ कहा कि कट्टरपंथी और पोंगापंथी लोग यदि इस्लामी व्यवहार पर खुली बहस नहीं करेंगे तो नई पीढ़ियां एकदम नास्तिक बन जाएंगी, जैसा कि कई पश्चिमी ईसाई देशों में हो रहा है। मुस्लिम राष्ट्रों में महिलाओं की दशा पर भी वक्ताओं ने खुलकर अपने विचार प्रकट किए। सभी वक्ताओं का आशय यह था कि इस्लाम की मूलभूत धारणाओं का निष्ठापूर्वक पालन तो ठीक है लेकिन डेढ़ हजार साल पुरानी परंपरा की लकीरों को पीटते रहना उचित नहीं है।

(लेखक, भारतीय विदेश परिषद नीति के अध्यक्ष हैं।)

राष्ट्रवाद का अतिरेक और साम्राज्यवाद, औपनिवेशिकवाद के मलीन मंसूबे

संजीव

राष्ट्रवाद की मूल भावना से राष्ट्र में एकता अखंडता की संभावनाएं बलवती होती हैं। हम सब एक हैं इसकी इच्छा तथा भावना दोनों पनपती हैं और इन सद्भावनाओं के पीछे इतनी शक्ति ,ऊर्जा एवं ताकत होती है कि विदेशी आक्रांताओं की गुलामी से निजात पाई जा सकती है।राष्ट्रवाद से स्वतंत्रता तथा संप्रभुता प्राप्त की जा सकती है' किंतु इतिहास तथा अतीत में कुछ संदर्भित घटनाएं ऐसी हुई है जिससे इसके दुष्परिणाम एवं दुष्प्रभाव प्रकट हुए हैं।जिसका दुष्परिणाम एक देश ,एक महाद्वीप ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में प्रकट हुआ है' दूसरी तरफ राष्ट्रवाद के अतिरेक या अंधराष्ट्रवाद के परिणाम स्वरूप उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद ने जन्म लिया है ।इसी के परिणाम स्वरूप अफ्रीका महाद्वीप में बंटवारा हुआ वहां के निवासियों के साथ पशु तुल्य व्यवहार किया गया और हमारे देश यानी भारत जैसे आत्मनिर्भर, संपन्न, खुशहाल देश को गुलाम बनाया गया और गरीबी, भूखमरी, अकाल ,कुपोषण जैसी विसंगतियों के साथ निवासियों को जीने के लिए मजबूर कर दिया गया' राष्ट्रवाद की भावना ने संपूर्ण गुलाम देशों में एक चिंगारी भर दी थी जिससे जन-जन एक योद्धा बन गया था ,और भारत अफ्रीका दक्षिण पूर्वी देश इस जिजीविषा के दम पर स्वतंत्र हो गए थे। यही राष्ट्रवाद की भावना है जिससे वहां के नागरिक कठिन से कठिन परिस्थिति में भी देश की सुरक्षा करने को अपने आप को प्रेरित करते हैं और देशभक्ति की भावना के कारण ही किसी भी देश का विकास होता है' राष्ट्रवाद मानवता से ऊपर नहीं है' राष्ट्रवाद एक विशेषता है, किंतु अंध राष्ट्रवाद घातक भी हो सकता है' मानवता और राष्ट्रवाद की तुलना करना बेमानी है यह सर्वमान्य तथ्य है कि मानवता सर्वोपरि है। उसके पश्चात ही किसी देश या व्यक्ति का राष्ट्रवाद आता है' यह अत्यंत ही रोचक बात है कि राष्ट्रवाद ने हीं साम्राज्यवाद उपनिवेशवाद को जन्म दिया है, और राष्ट्रवाद ने ही इसका सर्वनाश भी किया' यह राष्ट्रवाद का अतिरेक ही था कि नेपोलियन द्वारा फ्रांस की इस भावना के अंतर्गत यूरोपीय राजनीति को जटिल बना दिया था एवं बिस्मार्क को राष्ट्रवाद के अतिरेक ने प्रेरित कर संपूर्ण यूरोप को शतरंज की गोटियां की तरह अस्त-व्यस्त कर दिया था' यह राष्ट्रवाद का विकृत रूप ही था जब हिटलर और मुसोलिनी जैसे कट्टरपंथियों ने नाजीवाद तथा फासीवाद की आड़ में संपूर्ण विश्व को विश्व युद्ध की भयानक विभीषिका में झोंक दिया एवं लाखों लोगों मृत्यु तथा अरबों रुपए के जानमाल की हानि का कारण बने थे।

विपक्ष का चेहरा बन पाएंगे राहुल !

तारकेश्वर मिश्र

पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा पिछले दिनों श्रीनगर में खत्म हो गई। समुद्र के किनारे बसे कन्याकुमारी से कश्मीर तक की यह यात्रा विभिन्न राज्यों से गुजरी। इसमें केवल राजस्थान में ही कांग्रेस की पूर्ण सत्ता है। तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, तेलंगाना, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उ.प्र, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब से होती हुई वह अपने गंतव्य श्रीनगर पहुंची। यात्रा में उनके साथ विभिन्न राज्यों से चुने गए कांग्रेस कार्यकर्ता अंत तक शामिल रहे जो उल्लेखनीय है। यात्रा की समाप्ति सकुशल हुई ये राहत का विषय है क्योंकि पंजाब और जम्मू कश्मीर सुरक्षा की दृष्टि से बेहद संवेदनशील थे। गैर कांग्रेसी राज्यों में भी यात्रा की सुरक्षा का अच्छा ध्यान रखा गया। हालांकि इक्का दुक्का दुखद घटनाएं हुईं। कांग्रेस के एक सांसद पैदल चलते हृदयाघात से चल बसे तो पंजाब और कश्मीर में सुरक्षा प्रबंध थोड़े गड़बड़ाए भी। कांग्रेस ने इस यात्रा को आंदोलन का नाम दिया था जिसका मकसद घृणा और धार्मिक उन्माद मिटाकर लोगों को विभाजनकारी राजनीति के विरुद्ध एकजुट करना बताया गया। इसके साथ ही श्री गांधी जिस क्षेत्र से गुजरते वहां की स्थानीय समस्या पर भी लोगों से बात करते हुए अपना दृष्टिकोण रखते।

धीरे धीरे उनकी टी शर्ट और बढ़ती दाढ़ी भी चर्चा में आने लगी। उत्तर भारत की सर्दी में भी वे टी शर्ट पहने रहे। खबर है अब गुजरात से असम तक भारत जोड़ो यात्रा का दूसरा चरण निकाला जावेगा। अपने इस प्रयास में श्री गांधी की पहली सफलता तो ये कही जायेगी कि उन्होंने कांग्रेस के भीतर नेतृत्व को लेकर व्याप्त अनिश्चितता पूरी तरह खत्म करते हुए यह स्थापित कर दिया कि वे ही पार्टी के चेहरे हैं और गांधी परिवार की विरासत के एकमात्र हकदार भी। जो लोग कुछ समय से उनकी बहिन प्रियंका वाड्रा को उनसे ज्यादा सक्षम साबित कर रहे थे उनकी बोलती इस यात्रा ने बंद कर रखी है। दूसरी बात ये कि राहुल उस आरोप से बरी हो गए कि वे चांदी का चम्मच लेकर पैदा हुए राजकुमार हैं इसलिए उनका जनता से न संपर्क है और न ही संवाद। पूरी यात्रा उन्होंने पैदल की और निर्धारित दूरी प्रतिदिन तय करते हुए अपनी प्रतिबद्धता और शारीरिक क्षमता प्रदर्शित की। लेकिन भारत जोड़ो का नाम सार्थक करने में वे कितने सफल रहे इसका आकलन आने वाले कुछ दिनों तक राजनीतिक विश्लेषकों को व्यस्त रखेगा।

ये अनुमान शुरू में लगाया जा रहा था कि श्री गांधी इस यात्रा के जरिए समूचे विपक्ष को अपने साथ लाकर 2024 के लोकसभा चुनाव हेतु भाजपा के विरोध में मोर्चे को आकार दे सकेंगे किंतु कुछ फिल्मी हस्तियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के अलावा केवल शिवसेना के आदित्य ठाकरे और अंत में उमर अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती के कोई बड़ा विपक्षी चेहरा उनके साथ न चला और न ही अपना समर्थन भेजा। शरद पवार, ममता बैनर्जी, के. चंद्रशेखर राव, अरविंद केजरीवाल, सुखबीर सिंह बादल, ओमप्रकाश चैटाला, नीतीश कुमार, अखिलेश यादव, मायावती, जैसे नेताओं ने यात्रा को अनदेखा कर दिया। ऐसा लगता है बीच बीच में श्री गांधी का ये कहना उक्त नेताओं को नहीं पचा कि कांग्रेस को धुरी बनाकर ही अगले लोकसभा चुनाव में विपक्षी एकता होनी चाहिए। यात्रा के समाचार माध्यम प्रभारी जयराम रमेश ने अनेक अवसरों पर दोहराया भी कि कांग्रेस को सभी राज्यों में अपनी ताकत पर लडने की तैयारी करनी चाहिए। हालांकि पूरी यात्रा के दौरान राहुल ने भाजपा और रास्वसंघ की आलोचना में कोई कसर नहीं छोड़ी। साथ ही हिंदू धर्मस्थलों पर जाकर भाजपा को चिढ़ाने के अलावा पौराणिक प्रसंगों का उल्लेख कर अपने को अध्ययनशील प्रमाणित करने का प्रयास भी किया। फिर भी क्या पांडवों ने नोट बंदी की थी और क्या उन्होंने जीएसटी लगाया जैसे मुद्दे छेड़कर वे हंसी का पात्र भी बने। इसी तरह बात बात में ये कहना कि वे भाजपा और संघ से नफरत नहीं करते और फिर उन्हीं के विरुद्ध पूरी यात्रा को केंद्रित रखना विरोधाभासी लगा। यात्रा के जरिए श्री गांधी की पप्पू वाली छवि को बदलने का प्रयास भी सुनियोजित तरीके से किया गया किंतु पूरी सतर्कता के बावजूद वे अनेक अवसरों पर पुरानी गलतियां दोहराने से बाज नहीं आए। भले ही कांग्रेस इस यात्रा के पीछे की सोच को किसी भी रूप में पेश करे लेकिन इसका उद्देश्य श्री गांधी को प्रधानमंत्री के समकक्ष खड़ा करते हुए शेष विपक्ष को उनका नेतृत्व स्वीकार करने हेतु बाध्य करना ही था। लेकिन अब ये कहना गलत नहीं होगा कि विपक्ष के छोटे से हिस्से को छोड़ बाकी छत्रपों ने इस यात्रा को जरा भी तवज्जो नहीं दी। और तो और इसी बीच कांग्रेस के अनेक प्रादेशिक नेता पार्टी छोड़ गए। राजस्थान में अशोक गहलोत और सचिन पायलट को यात्रा के दौरान युद्धविराम हेतु राजी किया गया किंतु ज्योंही श्री गांधी ने राजस्थान छोड़ा दोनों में टकराव होने लगा।

> उसके बावजूद जब मुख्यमंत्री समर्थित विधायकों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं हुई तो अजय माकन ने महामंत्री पद छोड़ दिया। और भी ऐसी घटनाएं इस दौरान हुई जब पार्टी नेतृत्व विशेष रूप से गांधी परिवार असहाय नजर आया

दरअसल यात्रा की शुरूआत में ही अपशकुन हो गया जब श्री गहलोत द्वारा गांधी परिवार की मंशा ठुकराते हुए कांग्रेस अध्यक्ष बनने से इंकार के साथ ही राजस्थान की गद्दी श्री पायलट को सौंपने से मना करते हुए केंद्रीय पर्यवेक्षकों को बेइज्जत कर लौटा दिया।

उसके बावजूद जब मुख्यमंत्री समर्थित विधायकों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं हुई तो अजय माकन ने महामंत्री पद छोड़ दिया। और भी ऐसी घटनाएं इस दौरान हुईं जब पार्टी नेतृत्व विशेष रूप से गांधी परिवार असहाय नजर आया।

संभवतः यही देखकर गैर भाजपाई विपक्ष के नेताओं ने यात्रा से दूरी बनाकर चलने का रास्ता चुना। हालांकि राहुल राष्ट्रीय नेता के रूप में अपनी जगह बनाने में काफी हद तक सफल रहे जो उन्हें दूसरे विपक्षी नेताओं से कुछ ऊपर। रखने में सहायक होगी। दिग्विजय सिंह द्वारा सर्जिकल स्ट्राइक पर संदेह व्यक्त किए जाने पर बिना देर किए उनकी बात का विरोध कर देना इसका प्रमाण था। लेकिन ये भी उतना ही सही है कि ममता, अखिलेश, केसीआर जैसे क्षेत्रीय छत्रप उनकी रहनुमाई शायद ही स्वीकार करेंगे क्योंकि कांग्रेस उनके राज्य में अपना हिस्सा मांगे बिना नहीं रहेगी जो उन्हें स्वीकार्य नहीं होगा। बावजूद इसके इतना कहा जा सकता है कि श्री गांधी ने कांग्रेस में सक्रियता बढ़ा दी है। राजनीतिक पंडित मानते हैं कि हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस को मिली जीत ने भी कांग्रेस की जरूरत को स्पष्ट कर दिया है। यदि इस साल होने वाले मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और कर्नाटक के चुनावों में कांग्रेस बेहतर प्रदर्शन करती है तो राहुल गांधी की 2024 की दावेदारी को और ज्यादा मजबूती मिल जाएगी। जिस उत्साह से पार्टीजन उनकी यात्रा से जुड़े उसकी वजह से जी 23 नामक असंतुष्ट गुट पूरी तरह नेपथ्य में धकेल दिया गया। अध्यक्ष के चुनाव में मल्लिकार्जुन खडगे की शशि थरूर पर बड़ी जीत ने भी गांधी परिवार के वर्चस्व को साबित कर दिया किंतु यात्रा के समापन के ठीक पहले केरल के कद्दावर नेता और गांधी परिवार के करीबी ए.के.एंटोनी के बेटे का कांग्रेस छोडना भावी खतरों की तरफ इशारा भी है। बहरहाल श्रीनगर में राष्ट्रध्वज फहराकर लौटे राहुल निश्चित रूप पहले से ज्यादा आत्मविश्वास से भरे होंगे। लेकिन इसका कितना लाभ कांग्रेस को मिलेगा ये इसी वर्ष होने जा रहे विधानसभा चुनाव के नतीजों से स्पष्ट हो जाएगा। भारत में चुनाव अकसर चेहरे पर आकर ठहर जाते हैं। लोग मुद्दों से ज्यादा चेहरे को महत्त्व देते हैं। 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव इस बात के बड़े प्रमाण हैं कि देश की जनता मुद्दों से ज्यादा चेहरे को अहमियत देती है। ऐसी परिस्थिति में यदि विपक्ष मोदी के सामने कोई मजबूत चेहरा पेश करने में सफल रहता है तो उसकी राह कुछ आसान हो सकती है।

-उत्तर प्रदेश राज्य मुख्यालय पर मान्यता प्राप्त स्वतन्त्र पत्रकार।

सुरक्षित इंटरनेट आज की आवश्यकता

सुनील कुमार महला

प्रत्येक वर्ष फरवरी माह के दूसरे सप्ताह में 'सुरक्षित इंटरनेट दिवस' मनाया जाता है। इस बार आठ फरवरी को यह दिवस मनाया जाएगा। इस दिवस को मनाने के पीछे जो कारण है वह यह है कि सभी लोग,विशेषकर युवा व बच्चे इंटरनेट का सुरक्षित व संयमित उपयोग करें। इस वर्ष यानी कि वर्ष 2023 में सुरक्षित इंटरनेट दिवस की थीम' एक साथ एक बेहतर इंटरनेट के लिए' रखी गई है, जिसका उद्देश्य लोगों को इंटरनेट को उपयोग करने के लिए एक सुरक्षित स्थान बनाने की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित करना है। पहला सुरक्षित इंटरनेट दिवस 6 फरवरी 2004 को हुआ था और यह 14 देशों (13 यूरोपीय संघ के देशों और ऑस्ट्रेलिया) में मनाया गया था। जानकारी देना चाहूंगा कि भारत में इंटरनेट की शुरूआत 1986 में हुई थी और यह केवल शैक्षिक और अनुसंधान समुदाय के लिए उपलब्ध था। इंटरनेट तक आम जनता की पहुंच 15 अगस्त 1995 को शुरू हुई, और 2020 तक 718.74 मिलियन सक्रिय इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं जिनमें 54.29% आबादी शामिल है। अद्यतन आंकड़ों के अनुसार जून 2022 तक, भारत में ग्रामीण इंटरनेट ग्राहकों की संख्या 339 मिलियन से अधिक थी तथा जुलाई 2022 तक 833 मिलियन सक्रिय इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं, जिनमें 59.28% आबादी शामिल है । चीन में सबसे ज्यादा इंटरनेट यूजर्स हैं। भारत इंटरनेट उपयोगकताओं की संख्या में दूसरे स्थान पर है, हालाँकि इसकी आबादी का केवल 20 प्रतिशत ही इंटरनेट का उपयोग करता है। यूके और यूएस जैसे देशों की प्रवेश दर 90 प्रतिशत से अधिक है। इंटरनेट के मामले में चीन,भारत,अमेरिका,इंडोनेशिया और रसिया का स्थान प्रमुख है। वर्ल्ड मोबाइल डेटा प्राइसिंग 2021 की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया में इजरायल सबसे सस्ता इंटरनेट प्लान दे रहा है। वहां एक जीबी डेटा की कीमत 3.75 रुपए है। इसके बाद सस्ते डेटा के मामले में किर्गिस्तान, फिजी, इटली, सूडान और रूस का नंबर आता है। दुनिया का सबसे महंगे इंटरनेट में क्रमशः इथोपिया, यूनाइटेड अरब अमीरात, कतर,ओमान व सऊदी अरेबिया आते हैं। वैसे युगांडा में भी दुनिया का महंगा इंटरनेट उपलब्ध है।अमेरिका का रोड नेटवर्क दुनिया का सबसे लंबा और सबसे बड़ा रोड नेटवर्क है। भारत की बात की जाए तो भारत सबमरीन केबल के माध्यम से सिंगापुर में प्रमुख इंटरनेट डेटा सेंटर हब से जुड़ा है ।वैसे, इंटरनेट का पुराना नाम 'अर्पानेट है जिसका मतलब होता है– एडवांस्ड रिसर्च प्रोजेक्ट्स एजेंसी नेटवर्क, जिसे 1969 में यू.एस. डिफेंस द्वारा तैयार किया गया था। इससे जो नेटवर्क विकसित हुआ उसे हम इंटरनेट के नाम से जानते हैं। यहाँ यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि विंटन ग्रे सेर्फ (जन्म 23 जून, 1943) एक अमेरिकी इंटरनेट अग्रणी है और उन्हें "इंटरनेट के पिता" में से एक के रूप में पहचाना जाता है। सुरक्षित इंटरनेट दिवस सुरक्षित इंटरनेट केंद्रों के एक यूरोपीय नेटवर्क, इंसेफ द्वारा चलाया जाता है। हालांकि यूरोप के बाहर भी इस दिवस को आजकल हरेक देश में मनाया जाता है। इसके तहत बेहतर इंटरनेट हेतु जागरूकता और शैक्षिक अभियान चलाये जाते हैं, हेल्पलाइन चलाई जाती हैं और युवाओं के साथ मिलकर काम किया जाता हैं। आज इंटरनेट के माध्यम से हमें रोजाना विभिन्न फ्रॉड देखने को मिलते हैं, इसी दिशा में यह दिवस एक महत्वपूर्ण कदम है। सच तो यह है कि सुरक्षित इंटरनेट दिवस दुनिया भर के बच्चों और युवाओं द्वारा ऑनलाइन तकनीक के सुरक्षित और अधिक जिम्मेदार उपयोग को बढ़ावा देता है। आज दुनिया में अधिकतर लोग सोशल नेटवर्किंग साइट्स यथा व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम के साथ विभिन्न कार्यों के लिए इंटरनेट का बहुतायत उपयोग करते हैं। आज साइबर अपराध हमारे लिए एक बड़ी चुनौती है। साइबर सुरक्षा के लिए हमें अपने मोबाइल, लैपटॉप को सुरक्षित रखना चाहिए और केवल विश्वसनीय स्रोतों से ही विभिन्न एप्लीकेशंस को डाऊनलोड करना चाहिए। हमें यह चाहिए कि हम अपने आपरेटिंग सिस्टम को अप टू डेट रखें। हमें एंटी-वायरस सॉफ्टवेयर इंस्टॉल करना और सुरक्षित लॉक स्क्रीन का भी उपयोग करना सुनिश्चित करना चाहिए। इसके अलावा कंप्यूटर में सुरक्षित सॉफ्टवेयर का उपयोग करके, मजबूत पासवर्ड सेट करके, सोशल नेटवर्किंग साइटों को निजी मोड में रखकर और हर निजी जानकारी को ऑनलाइन साझा न करके हम साइबर अपराधों पर अंकुश लगाने की शुरूआत कर सकते हैं। इसके अलावा,साइबर अपराध की स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए कानून प्रवर्तन एजेंसियों, सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग, सूचना सुरक्षा संगठनों, इंटरनेट कंपनियों और वित्तीय संस्थानों के बीच बहु-आयामी सार्वजनिक-निजी सहयोग स्थापित करने की आवश्यकता है।साइबर क्राइम के अंतर्गत के आज विभिन प्रकार के साइबर अपराध आते है जिनमे हैकिंग, ऑनलाइन ठगी, फिशिंग, स्पैम ईमेल, रैनसमवेयर, पोर्नग्राफी, ऑनलाइन ब्लैकमेल एवं अन्य अपराध शामिल है। आज हैकिंग के अलावा साइबर इंटरनेट का इस्तेमाल भी लगातार बढ़ता जा रहा है। धोखाधड़ी, फजीर्वाड़ा, मनोरंजन, समाचार, संवाद और सोशल मीडिया के ब्लैकमेल आदि अपराध भी लगातार बढ़ते चले रहे हैं। कम्प्यूटर का विकास मनुष्य के जीवन में आमूल चूल परिवर्तन लाया,काम तेजी से सटीकता और बिना गलतियों के आसानी से होते हैं, लेकिन अब इसी कम्प्यूटर का प्रयोग लोग गलत कामों को अंजाम देने में करने लगे हैं। वास्तव में, कंप्यूटर के माध्यम से किसी गैर कानूनी काम को अंजाम देना ही साइबर क्राइम के अंतर्गत आता है। यह ठीक है कि तकनीक से हमें बहुत सी सुविधाएं मुहैया करवाई हैं लेकिन साइबर अपराध पर नियंत्रण जरूरी है। आज डिजिटल तकनीक के तेज विस्तार के साथ भारत में एक अरब से अधिक लोग एंड्रॉयड या अन्य फोन इस्तेमाल करने लगे हैं। कम्प्यूटर और लैपटॉप का उपयोग तो हो ही रहा है। आज व्यक्तियों के विरुद्ध अपराध में क्रमशः साइबर स्टॉकिंग, अश्लील सामग्री का प्रसार, मानहानि, हैकिंग, क्रैकिंग, ई मेल और एस एम एस स्पूफिंग, कॉर्डिंग,धोखाधड़ी, चाइल्ड पोर्नोग्राफी,ई-मेल, वीडियो या फोन के उपयोग के माध्यम से किसी व्यक्ति को धमकी देना शामिल हैं। इतना ही नहीं संपत्ति के खिलाफ भी अपराध हो रहे हैं। इनमें बौद्धिक संपदा अपराध, साइबर स्कवैटिंग, कम्प्यूटर हैक करना, इंटरनेट टाइम थेफ्ट शामिल हैं। साइबर वारफेयर, पाइरेटेड सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल, अनाधिकृत सूचनाओं पर कब्जा साइबर अपराध के अंतर्गत ही आते हैं। आज सूचना तकनीक से, इंटरनेट युग से डिजिटल लेन-देन, स्वास्थ्य सेवाओं और मौसम व कारोबार संबंधी जानकारियां जैसी सेवाओं का फायदा उठाया जा रहा है। ऐसे में डाटा सुरक्षा की चिंता भी लगातार बढ़ती जा रही है। हालांकि भारत में करीबन दो दशक पहले से ही साइबर कानूनों को बनाने और लागू करने का सिलसिला चल रहा है, लेकिन ये प्रयास आंशिक रूप से ही कामयाब हो सके हैं। ऐसे में कठोर कानूनी प्रावधानों की जरूरत तो है, साथ ही पुलिस और अन्य एजेंसियों को तकनीकी रूप से दक्ष बनाने और प्रशिक्षित करने की आवश्यकता भी है। सरकार बैंकों तथा पुलिस-प्रशासन की ओर से लोगों को अक्सर जागरूक करने के लिए सुझाव एवं निर्देश दिये जाते हैं, बावजूद इसके लापरवाही में या सही जानकारी नहीं होने के कारण लोग अपने डाटा की सुरक्षा नहीं कर पाते। आज एप के जरिये कर्ज के जाल में फंसाने के आपराधिक नेटवर्क कुकरमुत्ते की तरह फैले हैं और साइबर अपराध की अनेक घटनाओं की खबर आये दिन हमें अखबारों में, मीडिया की सुर्खियों में देखने, पढ़ने को मिलती रहती हैं।मजबूत पासवर्ड सेट करके, सोशल नेटवर्किंग साइटों को निजी मोड में रखकर और हर निजी जानकारी को ऑनलाइन साझा न करके हम साइबर अपराधों पर अंकुश लगाने की शुरूआत कर सकते हैं। इसके अलावा,साइबर अपराध की स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए कानून प्रवर्तन एजेंसियों, सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग, सूचना सुरक्षा संगठनों, इंटरनेट कंपनियों और वित्तीय संस्थानों के बीच बहु-आयामी सार्वजनिक-निजी सहयोग स्थापित करने की आवश्यकता है। साइबर अपराध से बचने के लिए हमें अपने मोबाइल, लैपटॉप को सुरक्षित रखना चाहिए और केवल विश्वसनीय स्रोतों से ही विभिन्न एप्लीकेशंस को डाऊनलोड करना चाहिए।

रामचरित मानस पर विवाद, राजनीतिक फसाद

डॉ सत्यवान सौरभ

जब रामायण में प्रभु श्री राम के बारे में पढ़ते हैं और जो वर्तमान समाज में राम को जातीय, राजनीति के आधार पर बांटते है तो दोनों में जमीन आसमान का फर्क है। राम जैसा कोई नहीं वह सबका हित चाहते थे। भरत के लिए आदर्श भाई, हनुमान के लिए स्वामी, प्रजा के लिए नीति-कुशल व न्यायप्रिय राजा, सुग्रीव व केवट के परम मित्र और सेना को साथ लेकर चलने वाले व्यक्तित्व के रूप में भगवान राम को पहचाना जाता है। उनके इन्हीं गुणों के कारण उन्हें मयार्दा पुरुषोत्तम राम के नाम से पूजा जाता है। आज यदि हम अपने अंदर झांक कर देखे कि क्या हमारे अंदर उनके जैसा एक गुण भी मौजूद है? नहीं, तो फिर हम उन्हें सिर्फ राजनीतिक मनसा को पूरा करने के लिए उनके नाम पर राजनीति क्यों करें? राम त्याग के प्रतिमूर्ति है क्या कोई अपना सर्व निछावर कर के दूसरो के हित चाहेगा? दुनिया मे ऐसा कोई इंसान नही जो उनकी जगह ले सके। राम तो राम है और राम से बड़ा उनका नाम है। इसलिये घिनौनी मनसा लेकर राजनीति करना बंद करें।। राम किसी विशेष जाति के लिए नहीं बने जो उन्हें निर्मल मन से भजता है, राम को वही प्रिय है। रामचरितमानस पर चल रहे विवाद के संदर्भ में सोचे तो क्या सैंकड़ों साल पहले लिखे गए इस महाकाव्य में क्या किसी ब्राह्मणवादी या किसी पुरुषवादी ने छेड़छाड़ नहीं की होगी? जो महाकवि अपने काव्य में कई उदात्त चरित्रों को गढ़ता है उसके मन में क्षुद्र विचार कैसे आ सकते हैं? जो अपने नायक को भीलों को गले लगाना,शबरी के जूठे बेर खाना ही नहीं तिरस्कृत स्त्री अहिल्या को सम्मान दिलाने जैसे प्रसंग लिखता है, वह शूद्रों और स्त्री के विरोधी शब्दों को कैसे लिख सकता है? जिसने खुद तत्कालीन ब्राह्मण समाज का बहिष्कार किया और भाषाई स्तर पर विद्रोह किया। वह ब्राह्मणों का ऐसा समर्थक कैसे हो सकता है कि ' पूजिए विप्र ज्ञान गुण हीना ' लिख दे? हो सकता है कि ढोल, गंवार, शूद्र पशु, नारी की जगह तुलसीदास जी ने ढोल, गंवार, क्षुब्ध पशु, रारी लिखा हो? और किसी कुढ़मगज ने उसे अपने चिंतन के अनुरूप कर लिया हो? हमें रामचरितमानस का फिर से गहन संपादन करना होगा और इस तरह कि कवि की प्रवृत्ति के विपरीत दोहे और चौपाइयों को समझकर और सुधार के प्रस्तुत करना होगा। यह इसलिए भी बहुत जरूरी है क्योंकि रामचरितमानस केवल एक महाकाव्य ही नहीं भारतीय समाज के द्वारा सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला ग्रंथ भी है और आप किसी अनपढ़ व्यक्ति के मुंह से भी मानस की चौपाइयां सुन सकते हैं।कहने का तात्पर्य यह कि भारतीय जनमानस से रामचरितमानस को निकाला नहीं जा सकता। हां, इसका संशोधित संस्करण जरूर प्रचलित किया जा सकता है। घर में उनकी उपस्थिति मात्र से शुभ संयोग बने रहते हैं। हर आस्तिक और नास्तिक सनातनी के घर में रामचरितमानस और श्रीमद् भागवत गीता होनी चाहिए। आस्था के लिए पढ़ें या ज्ञान ग्रहण करने के लिए। अपने अपने उपयोग हो सकते हैं। व्यवहार कुशलता, प्रबंधन, रणनीति, आपत्तिकाल में सूझबूझ से काम लेना, सामाजिक आचरण, धन प्रबंधन आदि बहुत कुछ सीखा जा सकता है। रही बात इन पवित्र ग्रंथों को लेकर मुख से मल विसर्जन करने वालों की तो उन्हें बिल्कुल महत्व मत दीजिए। ये अपने माता पिता की पूजनीयता पर भी प्रश्न उठा सकते हैं।ऐसे लोग कुतर्क कर सकते हैं कि माता पिता ने तो अपने वैवाहिक संबंध का निर्वाह किया,उन्हें पूजना क्यों और चरण स्पर्श क्यों? जिस कालखंड में ग्रंथ रचे गए तब कैसे शब्द, भाषा शैली, जाति व्यवस्था प्रचलित थी इसका ज्ञान है क्या किसी को? हम तो वो लोग हैं जो रावण से भी ज्ञान ग्रहण करने में हिचकते नहीं। रामचरितमानस भारत की परंपराओं का निचोड़ है। मानस स्वयं मे भारत है। और केवल मानस ही भारत है। केवल मानस ही सनातन है। भारत में जो कुछ भी वंदनीय है, अनुकरणीय है। बचाने योग्य है। वह सब केवल मानस में है। यह देश, आज मानस को नहीं समझ पा रहा है। शबरी, भील, केवट, अहिल्या, को नहीं समझ पा रहा है। नहीं समझ पा रहा है,कि जिन्हें हम वानरों और रीछों की सेना कहते हैं, वो इस देश की आदिवासी परंपरा रही है। जिन्हें हम वंचित मान बैठे हैं, वो ही तो राम जी की लड़ाई के असली योद्धा, असली नायक रहे हैं। मानस स्वयं में सार है। हर दोहा, और छंद, और चौपाई, इस राष्ट्र की अनुपम, अतुल्य, सर्व समाहित जीवंत परंपरा का द्योतक है। मानस का अपमान स्वयं मे भारत का अपमान है। इससे बड़ा राष्ट्रद्रोह हो ही नहीं सकता है। सकल हिन्दू समाज, सरकार, जन-जन को उठना होगा। अपनी कापुरुषा, अपनी नपुंसकता छोड़, छुद्र राजनीतिक स्वार्थ, नफा नुकसान त्याग, आग की तरह धधकना होगा। मानस की लाज न रख पाने वाला समाज, धर्म, सरकार और हम,कल अपनी मां, अपनी बहन, अपनी बेटी, अपनी आत्मा का भी सम्मान खो देंगे।

ढोल का पोल

डॉ. सुरेश कुमार

एक बार एक हिडिंबा नामक चुगली लगाने वाली कंपनी ने जनता और गिरानी के बीच चुगली लगा दि कि गिरानी के पेट में कुछ नहीं केवल उसमें हवा भरी हुई है। सुई मारने पर हवा का हवा और हौव्वा का हौव्वा पता लग जाएगा। जनता को गिरानी की नियत पर पहले से ही शक था। जनता के यहाँ जहाँ दाने के लाले पड़ गए हैं, ऐसे में गिरानी इतना उठ कैसे सकता है। हिडिंबा की चुगली से उनका शक यकीन में बदलने लगा। गिरानी हिडिंबा की चुगली से परेशान हो गया था। वह हिडिंबा का कबाड़ा करना चाहता था। लेकिन चुगली चोर ऐसी जगह पर बैठा ता जहाँ सोशल मीडिया के सारे माई-बाप बैठते हैं। जनता को दिखाने के लिए नकली हुड़की तो दे दी लेकिन असलियत में भीतर ही भीतर थर-थर काँप रहा था। समझिए कि पैंट गीली हो चुकी थी। हिडिंबा अपनी चुगलिस्तानी के बाद गिरानी की रिपोर्ट का एक ढोल पीछे छोड़ गई। यह ढोल मीडिया के हाथों लग गया। वे उसे बजा-बजाकर आए दिन हाथी गुजरे से बाजार कुत्ते भौंके हजार की तर्ज पर अपनी मनगढ़ंत कलाकारियाँ प्रस्तुत करने लगे। कुछ तो चीख-चीखकर तो कुछ मेज पीट-पीटकर अपना दावा पेश कर रहे थे कि उन्हीं की खबर सही है बाकी की बेकार। कुछ दिन ऐसे ही गुजरे। इन सब पर परदा डालने के लिए राजाजी ने अपनी दत्तकपुत्र गिरानी को बचाने के लिए अपने प्रचार की आँधी चलाई। आँधी के जोर में वह रिपोर्ट का ढोल लुढ़कते-पुढ़कते एक मरियल से विपक्षी दल सरीखे सूखे पेड़ के पास जाकर टिक गया।

अडानी समूह कम्पनियों की जांच की मांग को लेकर कांग्रेसियों ने किया प्रदर्शन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। प्रदेश कांग्रेस के निर्देश पर कांग्रेस जिलाध्यक्ष कुशल सिंह पटेल की अगुवाई में अडानी समूह कम्पनियों की जांच की मांग को लेकर एलआईसी के सामने धरना देकर विरोध प्रदर्शन हुआ। कांग्रेसियों ने कांग्रेस कार्यालय से जुलूस निकालते हुए ट्राफिक चैराहा होते हुए एलआईसी पहुंचकर धरना प्रदर्शन किया।

सोमवार को कांग्रेसियों ने जिलाध्यक्ष कुशल सिंह पटेल की अगुवाई में नारेबाजी करते हुए कांग्रेस जिला कार्यालय से जुलूस निकालते हुए एलआईसी पहुंचे। यहां कांग्रेसियों का जुलूस धरना प्रदर्शन में बदल गया। धरना में जिलाध्यक्ष ने कहा कि जिस तरह से आम जनता का पैसा

एलआईसी व एसबीआई में जमा था, उस धनराशि को अडानी की कम्पनियों में लगाने से जिस तरह से लगातार उनके शेयर बाजार में गिर रहे हैं, उससे आम जनता का पैसा डूबता दिख रहा है। संयुक्त विपक्ष ने संसद में नोटिस देकर इस मामले पर चर्चा कराने की लगातार मांग कर रही है, लेकिन सत्ता पक्ष चर्चा कराने को तैयार नहीं है, क्योंकि अडानी प्रधानमंत्री का नजदीकी है। इसे लेकर कांग्रेस सदन से लेकर सडक तक संघर्ष करेगी। आम जनता के पैसों के साथ खिलवाड नहीं होने देगी।

कांग्रेस पूर्व प्रत्याशी रंजना बरातीलाल पाण्डेय ने धरने में कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी पहले ही बता चुके हैं कि विपक्ष जेपी सिंह की जांच की मांग कर रहा है। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश की अगुवाई में कमेटी गठित कर पूरे मामले की जांच कराई जाये। अब सीबीआई व ईडी दिखाई नहीं दे रही। चेताया कि कांग्रेस इस मामले में संघर्ष करेगी। पूंजीपति दोस्तों के लिए सरकार के इशारे पर बैंकों से बिना रुकावट के धनराशि दी जा रही है। पूंजीपति दोस्त बैंकों से पैसा लेकर विदेशों में भाग गये। कांग्रेस ने इस मामले की जल्द जांच कराकर दोषियों के खिलाफ कडी कार्यवाही की मांग की है। धरना प्रदर्शन में कुलदीप मिश्रा, भगवानदीन समदरिया, जगजाहिर पटेल, कामता द्विवेदी, कालीचरन राजपूत, यमुना शुक्ला, कुलदीप द्विवेदी, विजयमणि त्रिपाठी, निरंजन कुशवाहा, गुरुदीन दुबे, सविता पाल, सुमन विश्वकर्मा, वीर कुमार, रमेशचन्द्र मौर्या, स्वतंत्रदेव विश्वकर्मा, मयंक वाजपेयी, शिवगुलाम वर्मा, ओमप्रकाश, बैजनाथ कुशवाहा, हैदर अली व सुरेश यादव आदि मौजूद रहे।

फटाफट खबरें

तेज रफ्तार का कहर ट्रैक्टर ने मारी बाइक में टक्कर एक व्यक्ति की मृत्यु, एक घायल

जलेसर। तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने बाइक सवारों में टक्कर मार दी। जिससे एक बाइक सवार की मृत्यु दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर पहुंची कोतवाली पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए जिला मुख्यालय भेजा सिकंदराराऊ रोड स्थित ग्राम बनवारीपुर मे शोरा फैक्ट्री से मजदूरी का कार्य करके ग्राम शंकरगढ़ निवासी भगवान सिंह उम्र 32 वर्ष पुत्र गिरवर सिंह व ग्राम रसीदपुर निवासी राकेश कुमार अपने गांव आ रहे थे। शाम लगभग 7:00 बजे जब वह ग्राम पटना पक्षी विहार नई पेट्रोल पंप के पास पहुंचे। तो सामने से आ रहे ट्रैक्टर को उसका ड्राइवर तेजी व लापरवाही से चलाते हुए लाकर बाइक में टक्कर मार दी। जिससे बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गए। ट्रैक्टर में अवैध खनन की मिट्टी लदी हुई थी।

टक्कर मारकर ट्रैक्टर का ड्राइवर तेजी से भगाते हुए ले गया। जब राहगीरों ने ट्रैक्टर की टक्कर से बाइक सवारों को घायल अवस्था में सड़क पर पड़े देखा तो उन्होंने ग्राम शंकरगढ़ भगवान सिंह के गांव सूचना भेजी। सूचना पर भगवान सिंह के परिवारीजन घटनास्थल पर पहुंच गए। उसके बाद बाइक चालक भगवान सिंह की गंभीर हालत को देखते हुए इलाज के लिए आगरा ले जा रहे थे कि बीच रास्ते में भगवान सिंह की मृत्यु हो गई। दूसरा घायल राकेश अपना इलाज कराने गांव चला गया। घटना की सूचना कोतवाली पुलिस को दी गई।

सूचना पर कोतवाली पुलिस के उपनिरीक्षक राहुल बालियान मय पुलिस बल के घटनास्थल पर पहुंचे। और शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए जिला मुख्यालय भेजा। कोतवाली में मृतक की पत्नी कमलेश ने ट्रैक्टर ने बाइक सवार में टक्कर मारकर भगवान सिंह की मृत्यु कर देने व दूसरे राकेश कुमार को घायल करने की रिपोर्ट दर्ज कराई है।

श्रवण गंगा समिति ने 21 बसों से 1100 श्रद्धालुओं को कराया गंगा स्नान

जलेसर। अवागढ़ ब्लॉक के गाँव लालपुर से श्रवण गंगा सेवा समिति द्वारा संचालित प्रति माह पूर्णिमा की भांति गंगा स्नान यात्रा को 21 बसों से श्रद्धालुओं को भेजा गया जिसमे लगभग 1100 श्रद्धालुओं को गंगा स्नान के लिए कछला घाट के लिए रवाना किया गया व समिति के सचिव सूर्य प्रताप सिंह सूरज भईया द्वारा बताया गया कि पौराणिक ग्रंथों शास्त्रों के अनुसार माघ पूर्णिमा तिथि पर श्री हरि विष्णु गंगाजल में वास करते हैं। इसलिए इस दिन गंगा में स्नान करने का विशेष महत्व बताया गया है।

मान्यता है कि इस दिन गंगाजल का स्पर्श करने मात्र से भी मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है । सूर्य प्रताप सिंह द्वारा किए जा रहे कार्यों की एटा जिले के साथ साथ प्रदेश के व्यक्तियों द्वारा भी प्रशंसा की जा रही है। इस पवित्र मौके पर श्रवण गंगा समिति के संस्थापक सूर्य प्रताप सिंह सूरज भैया के साथ भारतीय किसान यूनियन भानू के प्रदेश अध्यक्ष ठाकुर योगेश प्रताप सिंह, कार्यालय प्रभारी गपेन्द्र जादौन(गप्पू ठाकुर जिनावली) अनुज शर्मा ,छोटू, अमित राठौर, वीरेश अश्वनी पाठक, राजा,मोनू आदि शिव भक्त मौजूद रहे।

एसओजी द्वारा पुलिस मुठभेड़ में 3 बदमाश गिरफ्तार

उरई(जालौन)। एसओजी टीम जालौन एवं थाना माधौगढं पुलिस की गौकशी हेतु ले जा रहे ट्रक सवार अभियुक्तगण के साथ हुई मुठभेड़ में एक अभियुक्त के गोली लगने से घायल/गिरफ्तार तथा गिरफ्तार अभियुक्त से एक अदद ट्रक में 32 गौवंश तथा अभियुक्तो के कब्जे से अवैध शस्त्र एवं कारतुस बरामद बरामद किए गए। एसओजी टीम जालौन एवं थाना माधौगढ पुलिस द्वारा अपराध एवं अपराधियों की रोक थाम हेतु थाना माधौगढ क्षेत्र में चेकिंग की जा रही थी तभी बंगरा से भिंड जाने वाले रोड पर ग्राम मिझौना के पास एक ट्रक को चेकिंग हेतु रोका गया जिसमें सवार अभियुक्तगण द्वारा भागने की कोशिश की गयी तभी ट्रक अनियंत्रित होकर ग्राम गोपालपुरा के पास रोड के किनारे पलट गया उसी दौरान ट्रक सवार गौ तस्करो एवं जालौन पुलिस में मुठभेड़ हो गयी। मुठभेड़ में अभियुक्त परवेज अख्तर पुत्र अलीम अख्तर निबासी चांदापुर थाना भोगनीपुर कानपुर देहात के पैर में गोली लगने से घायल हुआ है तथा इसके दो अन्य साथी सईद पुत्र शरीफ निवासी ग्राम चांदपुर थाना भोगनीपुर जनपद कानपुर देहात व रईस पुत्र अनीस निवासी जलालाबाद थाना भवन जिला शामली को गिरफ्तार किया गया तथा मुठभेंड़ में एक आरक्षी भी घायल हुआ है अभियुक्त के अन्य आपराधिक इतिहास की जानकारी की जा रही ।

जिले भर में श्रद्धापूर्वक मनाई गई रविदास जयंती

बिजनौर। जिले भर में रविदास जयंती पर्व श्रद्धापूर्वक और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर जगह-जगह भव्य शोभायात्रा निकाली गई। अनुयाइयों ने अखाड़ों में हैरअंगेज करतब दिखाए। इसके साथ ही बैंड बाजों की धार्मिक धुनों पर श्रद्धालुओं ने नृत्य करते हुए संत रविदास की महिमा का गुणगान किया।

प्रत्येक वर्ष माघ मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा पर रविदास जयंती के रूप में मनाया जाता है। रविवार को जिले में संत रविदास जयंती धूमधाम से मनाई गई। नगर के मोहल्ला रविदास नगर स्थित रविदास मंदिर से भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जो परंपरागत मार्ग से होते हुए पुनः मंदिर पहुंचकर समाप्त हुई। रविदास मंदिर एवं धर्मशाला समिति प्रबंध समिति के बैनर तले निकली शोभायात्रा में संत रविदास की प्रतिमा के साथ गंगा, महात्मा बुद्ध, मीराबाई, डॉ. आंबेडकर की झांकी भी निकाली गई, जो नगर के मुख्य मार्गों से होते हुए वापस मंदिर पर जाकर समाप्त हुई।

कई स्थानों पर श्रद्धालुओं ने शोभायात्रा को रोक कर रविदास जी की पूजा-अर्चना की। शहरों से लेकर देहात क्षेत्रों तक में संत रविदास पर मनमोहक झांकी प्रस्तुत की गई।

वही बहुजन समाज पार्टी के पदाधिकारी और कार्यकताओं ने शोभायात्रा में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। बहुजन समाज पार्टी के कार्यकर्ता जॉन इंचार्ज मुरादाबाद मंडल जितेंद्र सागर और नगर पालिका परिषद बिजनौर से अध्यक्ष पद के भावी उम्मीदवार सलीम अख्तर उर्फ शल्लू भाई के नेतृत्व में शोभायात्रा में शामिल हुए। शोभायात्रा में शामिल होने वालों में जॉन इंचार्ज मुरादाबाद मंडल जितेंद्र सागर, सलीम अख्तर उर्फ शल्लू भाई, नगर अध्यक्ष सद्दाम राणा, सिकंदर आदि मौजूद रहे।

राष्ट्रीय रामायण मेला स्वर्ण जयंती पर होंगे भव्य कार्यक्रमः डीएम

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द की अध्यक्षता में राष्ट्रीय रामायण मेला की 50वीं स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाने को लेकर हुई बैठक में संबंधित अधिकारियों व मेला समिति के आयोजकों से चर्चा की गई।

सोमवार को रामायण मेला परिसर सीतापुर में हुई बैठक में जिलाधिकारी ने संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिये कि योजनाओं की प्रदर्शनी लगाकर लोगों को जानकारी दें। नगर पालिका परिषद के अधिकारियों को निर्देश दिये कि साफ-सफाई, स्वागत द्वार एवं लाइट की व्यवस्था मेला से पहले करा लें।

लोनिवि से कहा कि मोरम आदि डलवा दें। सीएमओ से कहा कि स्वास्थ्य विभाग का शिविर 24 घंटे लगा रहे। एएसपी से कहा कि कानून व्यवस्था को पर्याप्त

पुलिस बल की व्यवस्था करायें। उन्होंने रामायण मेला के आयोजकों से कहा कि समारोह की रुपरेखा बना लें। गीता व रामचरितमानस ग्रन्थों के स्टाल भी लगाये जायें। अपर एसपी से कहा कि सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अग्नि सुरक्षा टीम भी लगाई जाये। जल संस्थान व विद्युत विभाग से कहा कि व्यवस्था सही ढंग से कर लें, ताकि कोई समस्या पैदा न हो। प्रदर्शनी के स्टालों में विभागीय लोग मौजूद रहे। जिलाधिकारी ने रामायण मेला परिसर का भ्रमण कर मेला की तैयारियों का जायजा लिया।

बैठक में सीडीओ अमृतपाल कौर, एडीएम कुंवर बहादुर सिंह, एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी, एसडीएम राजबहादुर, सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी, सीओ सिटी हर्ष पाण्डेय, पीडी ऋषिमुनि उपाध्याय, लोनिवि एक्सईएन प्रान्तीय खण्ड सत्येन्द्रनाथ, मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डॉ सुभाषचन्द्र, बीएसए लवप्रकाश यादव, ईओ लालजी यादव, क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी अनुपम श्रीवास्तव, उपनिदेशक कृषि राजकुमार व मेला के कार्यकारी अध्यक्ष राजेश करवरिया तथा करुणाशंकर द्विवेदी मौजूद रहे।

सख्ती से होंगी उप्र बोर्ड परीक्षायें: डीआईओएस

कक्ष निरीक्षकों को मोबाइल फोन ले जाने की मनाही

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला विद्यालय निरीक्षक देवेन्द्र स्वरुप ने उप्र माध्यमिक शिक्षा परिषद से संचालित बोर्ड परीक्षा 2023 को सही ढंग से संचालित करने को चित्रकूट इंटर कालेज कर्वी में जिले के केन्द्र व्यवस्थापक व अतिरिक्त केन्द्र व्यवस्थापकों को कार्यशाला में शासन व विभाग से जारी दिशा-निदेर्शों से अवगत कराया।

सोमवार को चित्रकूट इंटर कालेज कर्वी में हुई बैठक में जिला विद्यालय निरीक्षक देवेन्द्र स्वरुप ने निर्देश दिये कि शासन की मंशानुसार बोर्ड परीक्षा को निष्पक्ष, नकल विहीन और शान्तिपूर्ण माहौल में सम्पन्न कराना सभी लोगों की जिम्मेदारी है। प्रमुख सचिव शासन ने भेजे निदेर्शों में बताया कि प्रश्नपत्रों को परीक्षा केन्द्र में डबल लॉक लोहे की अलमारी में रखा जायेगा। डबल लॉक की एक चाभी केन्द्र व्यवस्थापक व दूसरे लॉक की चाभी बाहरी केन्द्र व्यवस्थापक के पास रहेगी। डबल लॉक को

स्टेटिक मजिस्टेज्ट की मौजूदगी में खोला जायेगा। दो कक्ष निरीक्षकों के भी हस्ताक्षर होंगे। वहां कोई अधिकारी मोबाइल लेकर नहीं जायेगा। ताला लॉक करने के बाद हस्ताक्षरित पेपर से सील किया जायेगा।

जिला विद्यालय निरीक्षक देवेन्द्र स्वरुप ने बताया कि दोनों अधिकारियों के नाम व पदनाम लिखना अनिवार्य होगा। पेपर के रख-रखाव व खोलने में पूरी सावधानी बरती जाये। इसमें गलती क्षम्य नहीं होगी। कोई गलती होने पर स्टेटिक मजिस्टेज्ट समेत दोनों केन्द्र व्यवस्थापक जिम्मेदार होंगे। इसलिए विधिवत मिलानकर तीन बिन्दुओं पर ध्यान देना है- विषय, तिथि व पाली प्रश्नपत्र का कोड मिलाने के बाद ही पेपर खोला जाये। उन्होंने केन्द्र व्यवस्थापक डॉ रणवीर सिंह चैहान से कहा कि जब वे कक्ष में निरीक्षण करने जायें तो मोबाइल फोन लेकर नहीं जायेंगे। कक्ष निरीक्षकों को तो मोबाइल लाना ही नहीं है। कोई धोखे से ले आये तो उसे केन्द्र व्यवस्थापक के पास स्वीच आफ करके जमा करा दें। बोर्ड परीक्षाओं को पूरी ईमानदारी से सम्पन्न कराना है। महानिदेशक ने कडे निर्देश दिये हैं कि निदेर्शों का सभी लोग अध्ययन कर लें। कोई हीलाहवाली नहीं होनी चाहिए। परीक्षा केन्द्रों में सीसीटीवी कैमरे चलते रहना चाहिए। छात्र-छात्राओं के लिए शौचालय व बैठने की उचित व्यवस्था की जाये। कार्यशाला में जिले के वरिष्ठ प्रधानाचार्य डॉ रणवीर सिंह चैहान, डॉ राजीव पाठक, श्रीमती पुष्पा वर्मा, विजय सोनी, शिववरन त्रिपाठी, राकेश प्रताप सिंह, राजेश सिंह, परीक्षा प्रभारी फूलचन्द्र सिंह व सूर्यभान सिंह तथा रामकृष्ण मिश्रा मौजूद रहे।

लोनिवि कर्मियों ने समस्या निदान की मांग को लेकर की हड़ताल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। खंडीय सहायकों में व्याप्त समस्याओं का निराकरण न होने व विभाग के उच्चाधिकारियों की हठधर्मिता से उप्र लोनिवि मिनिस्टीरियल एसोसिएशन को पुनः हडताल व धरना प्रदर्शन करना पडा।

सोमवार को उप्र लोनिवि मिनिस्टीरियल एसोसिएशन के क्षेत्रीय अध्यक्ष सूर्यकान्त सोनी की अगुवाई में तीसरे दिन कमलबन्द हडताल की गई। उन्होंने कहा कि तीन-चार फरवरी को काली पट्टी बांधकर व छह-सात फरवरी को कमलबन्द हडताल तथा आठ-नौ-दस फरवरी को क्षेत्रीय मुख्य अभियंता

कार्यालय में धरना प्रदर्शन, 13 फरवरी को लखनऊ स्थित प्रमुख अभियंता कार्यालय में प्रदेश स्तरीय हडताल धरना प्रदर्शन की तिथि प्रान्तीय कार्यकारिणी ने घोषित की है। खंडीय सहायकों की समस्या के निराकरण को हडताल जारी है। खंडीय सहायकों की समय से पदोन्नति न होना, सहायकों का स्थायीकरण न होना, 2019 में आये नये सहायकों का नाम ज्येष्ठता सूची में न जोडना, नई ज्येष्ठता सूची जारी न करना और पुरानी पेंशन बहाली आदि की समस्याओं को लेकर लोनिवि परिसर में तीसरे दिन कर्मचारियों ने बढ-चढकर हडताल में हिस्सा लिया। हडताल में हिस्सा लेने वाले कर्मचारी उप्र लोनिवि मिनिस्टीरियल एसोसिएशन के क्षेत्रीय अध्यक्ष सूर्यकान्त सोनी, जिलाध्यक्ष अनिल कुमार, कार्यकारी अध्यक्ष छेदीलाल यादव, उमाशंकर शर्मा, वाहिद अली, राजकरन, धर्मेन्द्र कुमार सोनी महामंत्री, अमित द्विवेदी, अनिल कुमार मौर्या, रवीन्द्र कुमार, कौशल कुमार, संदीप सिंह, महेश कुमार, जितेन्द्र कुमार, रघुवर पटेल, संतोष कुमार, धर्मेन्द्र कुमार मिश्रा, सुनील कुमार आदि मौजूद रहे। सभी कर्मचारियों ने जोर-शोर से नारे लगाते हुए अपनी समस्याओं के जल्द निराकरण की मांग उठाई। चेताया कि जब तक समस्याओं का निस्तारण न हो जायेगा, तब तक प्रान्तीय कार्यकारिणी के निर्देश पर हडताल जारी रहेगी।

न्यूज झरोखा

नहीं मिले गौवंश के कंकाल: एसडीएम

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। जिले के मानिकपुर ब्लाक के अगरहुण्डा गांव की गौशाला से तकरीबन तीन सौ मीटर दूरी पर गौवंश के अस्थि पंजर मिलने की मामले की एसडीएम प्रमेश कुमार श्रीवास्तव ने जांच कराई। गौवंश के अवशेष न मिलने पर पत्रकारों को बताया कि एक किमी दूर छह इंच के दो टुकडे मिले हैं, जो गौवंश के प्रतीत नहीं हो रहे।

ज्ञात है कि गौवंश के कंकाल मिलने की सूचना पर मानिकपुर एसडीएम प्रमेश कुमार श्रीवास्तव ने सोमवार को खंड विकास कार्यालय में पत्रकारों को बताया कि खुद मौके पर खंड विकास अधिकारी धनंजय सिंह व पशु डॉ बृजेन्द्र सिंह, डॉ गौरव, सचिव वन्दना सिंह, प्रधान प्रदीप सिंह के साथ गौशाला के आसपास जांच की है। गौवंश के अवशेषों की खोज की गई। एक किमी दूर छह इंच के दो टुकडे मिले हैं, जो गौवंश के कंकाल प्रतीत नहीं हो रहे।

उन्होंने बताया कि सोशल मीडिया में प्रसारित खबर पूरी तरह से गलत पाई गई है। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया की खबर को लेकर वह मौके पर जांच में गये थे।

दो के कब्जे से पुलिस ने पकडा तीस लीटर महुआ शराब

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान के क्रम में पुलिस ने दो लोगों को दबोचकर तीस लीटर महुआ शराब व बीस क्वार्टर देशी शराब के बरामद किये हैं।

सोमवार को चैकी प्रभारी सीतापुर प्रवीण कुमार सिंह की टीम में राजाबाबू पुत्र रामनिरंजन निवासी कपसेठी के कब्जे से तीस लीटर महुआ शराब बरामद कर गिरफ्तार किया है। 60 आबकारी अधिनियम के तहत उसका चालान किया है। टीम में चैकी प्रभारी के साथ सिपाही कुलदीप द्विवेदी व अभिषेक यादव मौजूद रहे।

इसी क्रम में सरधुआ थाने के दरोगा अनिल कुमार गुप्ता की टीम ने रामसूरत यादव पुत्र केदार निवासी मिजापुर मजरा सरधुआ के कब्जे से बीस क्वार्टर देशी शराब के बरामद कर दबोचा है। उसके खिलाफ भी 60 आबकारी अधिनियम दर्जकर चालान किया है। टीम में दरोगा के साथ सिपाही नरेन्द्र कुमार शामिल रहे।

एआरटीओ पर हमले के आरोपियों पर लगायें रासुका

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जांच दौरान एआरटीओ प्रवर्तन विवेक शुक्ला पर जानलेवा हमले के चार आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेजा है। लोगों ने पुलिस अधीक्षक से मांग किया कि आरोपियों के खिलाफ रासुका व गैंगेस्टर एक्ट के तहत कार्यवाही कर घरों में बुलडोजर चलवाया जाये, ताकि भविष्य में कोई भी किसी अधिकारी पर हमले का साहस न कर सकें।

सोमवार को भरतकूप थाना पुलिस ने नामजद आरोपी नन्दकिशोर, राजकुमार, राजकरन निवासी गोंडा व शिवशंकर त्रिपाठी निवासी सिकरिया मजरा नांदी थाना पहाडी को गिरफ्तार कर रविवार को न्यायालय में पेशकर जिला कारागार रगौली भेजा है। दो नामजद आरोपी फरार हैं। पुलिस फरार आरोपियों की तलाश के साथ अज्ञात में दर्ज लोगों को चिन्हित करने में जुटी है।

उल्लेखनीय है कि शनिवार को अपरान्ह दो बजे एआरटीओ प्रवर्तन विवेक शुक्ला शासन के निर्देश पर ओवरलोड वाहनों की जांच कर रहे थे। इसी बीच बिना नम्बर प्लेट के दो ओवरलोड डम्फर गुजरे, उन्होंने डम्फरों को पकडने का प्रयास किया तो चालक डम्फर छोडकर भाग गये। इसके बाद एआरटीओ को तकरीबन डेढ दर्जन लोगों ने घेरकर जानलेवा हमला किया था। पुलिस ने सक्रियता दिखाते हुए चार लोगों को तत्काल गिरफ्तार कर जेल भेजा है।

इस मामले में लोगों ने पुलिस अधीक्षक वृन्दा शुक्ला से मांग किया कि आरोपियों के खिलाफ रासुका व गैंगेस्टर एक्ट के तहत कार्यवाही अमल में लाई जाये। आरोपियों के घरों पर बुलडोजर भी चलवाया जाये, ताकि भविष्य में कोई किसी अधिकारी पर हमला करने का साहस न कर सके।

पुतिन ने वादा किया कि वह जेलेंस्की को नहीं मारेंगे : बेनेट

मास्को। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध शुरू होने के शुरुआती दिनों में दोनों देशों के बीच थोड़े समय के लिए मध्यस्थ की भूमिका निभाने वाले इजराइल के पूर्व प्रधानमंत्री नफ्ताली बेनेट ने दावा किया है कि उन्होंने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से वादा लिया था कि वह अपने यूक्रेनी समकक्ष वोलोदिमीर जेलेंस्की को नहीं मारेंगे। पूर्व प्रधानमंत्री बेनेट युद्ध के शुरुआती हफ्तों में अप्रत्याशित रूप से मध्यस्थ बन गए थे और उन कुछ गिने-चुने पश्चिमी नेताओं में से थे जिन्होंने युद्ध के दौरान पिछले साल मार्च में पुतिन से मुलाकात की थी।हालांकि, बेनेट की कोशिश बहुत सफल नहीं रही और इसका नतीजा है कि अब भी युद्ध जारी है। बेनेट ने यह टिप्पणी शनिवार को ऑनलाइन पोस्ट किए गए अपने साक्षात्कार में की जिसमें युद्ध के शुरुआती दिनों में संघर्ष को रोकने के लिए पिछले दरवाजे से हुई कूटनीति की झलक मिलती है। बेनेट ने पांच घंटे के साक्षात्कार में विभिन्न पहलुओं पर बात की। पूर्व प्रधानमंत्री ने बताया कि उन्होंने पुतिन से

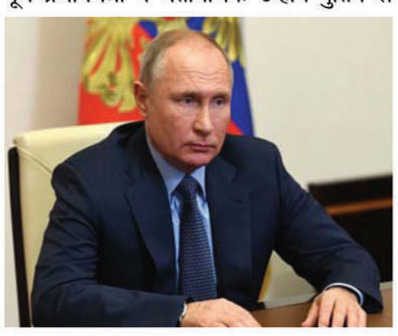

पूछा कि क्या उनकी मंशा जेलेंस्की की हत्या करने की है।

उन्होंने कहा, ''मैंने पूछा इस बारे में क्या कहना है? क्या आपकी योजना जेलेंस्की को मारने की है? उन्होंने (पुतिन) कहा कि वह जेलेंस्की को नहीं मारेंगे। तब मैंने कहा कि जहां तक मैं समझ रहा हूं कि आप वादा कर रहे हैं कि आप जेलेंस्की को नहीं मारेंगे, तो उन्होंने कहा कि मैं जेलेंस्की को मारने नहीं जा रहा।'' इजराइली प्रधानमंत्री ने कहा कि इसके बाद मैंने जेलेंस्की को पुतिन के वादे के बात बताई।

बेनेट ने जेलेंस्की से हुई बात को उद्धृत करते हुए कहा, ''मैंने कहा, सुनो मैं बैठक से बाहर आया हूं वह तुम्हें मारने नहीं जा रहे हैं। इस पर जेलेंस्की ने पूछा कि क्या वह इस पर निश्चित हैं तो मैंने कहा कि शत प्रतिशत वह आपको नहीं मारेंगे।'' उन्होंने कहा कि उनकी मध्यस्थता के दौरान पुतिन ने अपने संकल्प के बारे में बताया कि वह यूक्रेन का निरस्त्रीकरण और जेलेंस्की का नाटो में शामिल न होने का वादा चाहते हैं।

हरकतों से बाज नहीं आ रहा चीनः अमेरिका के बाद अब कोलंबिया में भी दिखा जासूसी गुब्बारा, जांच में जुटी वायु सेना

कोलंबिया। चीन अपनी हरकतों से बाज आने का नाम नहीं ले रहा है। अभी अमेरिका के हवाई क्षेत्र में चीनी जासूसी गुब्बारे का शोर थमा नहीं था कि अब कोलंबिया के हवाई क्षेत्र में भी एक गुब्बारा देखा गया है। कोलंबिया की वायु सेना ने दावा किया है कि यह गुब्बारा भी ठीक वैसा ही था, जैसा अमेरिका के हवाईक्षेत्र में देखा गया था। कोलंबिया ने कहा, वायु सेना ने उस गुब्बारे की तब तक निगरानी की, जब तक उसने हवाई क्षेत्र को छोड़ नहीं दिया। इस दौरान यह देखा गया कि इस गुब्बारे से उसके हवाई रक्षा क्षेत्र या विमानन सेवा को कोई खतरा तो नहीं है। बता दें, अमेरिका में भी ऐसा ही एक चीनी गुब्बारा देखा गया था, जिसे अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के आदेश पर मार गिराया गया था।

इसके बाद से अमेरिका और चीन के बीच रिश्ते और भी ज्यादा तनावपूर्ण हो गए हैं।

55 हजार फीट की ऊंचाई पर दिखा गुब्बारा

कोलंबिया वायु सेना ने कहा है कि उन्हें 55 हजार फीट की ऊंचाई पर एक ऑब्जेक्ट दिखाई दिया। यह 25 समुद्री मील की औसत गति से आगे बढ़ रहा था। वायु सेना ने कहा कि वह ऑब्जेक्ट की जांच के लिए अन्य देशों और संस्थानों के साथ समन्वय में जांच कर रही है। बता दें कोलंबिया दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के उत्तर-पश्चिम में स्थित एक देश है।

ट्रंप के समय भी तीन गुब्बारों ने किया था रक्षा क्षेत्र का उल्लंघन

अमेरिकी रक्षा सचिव लॉयड ऑस्टिन ने कहा है कि अमेरिकी वायु सेना चीनी गुब्बारे का अध्ययन करके बहुमूल्य खुफिया जानकारी एकत्र करने में सक्षम थी। इस दौरान उन्होंने आरोप लगाया कि डोनाल्ट ट्रंप के प्रशासन में भी तीन चीनी गुब्बारे अमेरिका के हवाई रक्षा क्षेत्र के ऊपर से गुजरे थे। हालांकि, पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप ने इस लॉयड ऑस्टिन के इस दावे को खारिज किया।

आईएमएफ के सामने शहबाज सरकार की सिट्टी पिट्टी गुम, 900 अरब रुपये के राजकोषीय घाटे पर फंस गया मामला

इस्लामाबाद। देश के 900 अरब रुपये के राजकोषीय घाटे को लेकर पाकिस्तान लगातार फंसता ही जा रहा है। इस मसले पर अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के साथ उसकी बात नहीं बन पा रही है जिससे गतिरोध लगातार बना हुआ है। इस मसले पर पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की भी सिट्टी पिट्टी गुम हो गई है। कंगाली के दौर में शहबाज शरीफ कोई रिस्क लेना नहीं चाह रहे हैं। कुछ भी कहने से बचते नजर आ रहे हैं। दरअसल, आईएमएफ ने पाकिस्तान के लिए सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 1 प्रतिशत के बराबर करीब 900 अरब रुपये का बड़ा राजकोषीय घाटा तय किया है। जिसपर पाक अधिकारियों ने आपत्ति जताई है। अब मामला सुलझने के बजाय उलझता ही जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक आईएमएफ जीएसटी दर को 17 से 18 प्रतिशत तक बढ़ाने या पेट्रोलियम, तेल और स्नेहक (पीओएल) उत्पादों पर 17 प्रतिशत जीएसटी लगाने के लिए कह रहा है। लेकिन पाकिस्तान सरकार यहां भी न नुकुर कर रही है। अब देखने वाली बात होगी क्या पाकिस्तान आखिरकार ढ्रख्न के सामने झुकने का फैसला लेता है या दिवालिया होना स्वीकार करता है।इसके साथ ही पाकिस्तान ने प्राथमिक घाटे को प्राप्त करने के लिए विशाल राजकोषीय अंतर का विरोध किया है। पाकिस्तानी अधिकारियों ने आईएमएफ से संशोधित परिपत्र ऋण प्रबंधन योजना (सीडीएमपी) के तहत कटौती के प्रवाह को शामिल करने के लिए कहा है और 687 अरब रुपये के पहले के लक्ष्य के मुकाबले 605 अरब रुपये की आवश्यक अतिरिक्त सब्सिडी की राशि कम करने के लिए कहा है।

इसके अलावा, शीर्ष अधिकारियों ने फंड कार्यक्रम को पुनर्जीवित करने के लिए पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष इमरान खान पर हस्ताक्षर करने के बारे में आईएमएफ की स्थिति की किसी भी संभावना को पूरी तरह से खारिज कर दिया है और कहा है कि आईएमएफ समीक्षा मिशन के साथ ऐसी कोई चर्चा नहीं हुई है, जियो ने बताया। समाचार। तकनीकी स्तर की वार्ता के दौरान पाकिस्तान और आने वाले आईएमएफ समीक्षा मिशन के बीच सटीक वित्तीय अंतर का पता लगाने पर मतभेद अभी भी बने हुए हैं। एक बार जब यह आईएमएफ के साथ अंतिम रूप ले लिया जाता है, तो अतिरिक्त कराधान उपायों को मजबूत किया जाएगा, जिसका खुलासा आगामी मिनी के माध्यम से किया जाएगा। राजकोषीय अंतर के आंकड़े पर सामंजस्य की कमी को देखते हुए, तकनीकी स्तर की वार्ता सोमवार को जारी रहेगी और फिर नीति स्तर की वार्ता मंगलवार से शुरू होने की उम्मीद है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और पाकिस्तानी अधिकारियों के बीच अगले हफ्ते नीति निर्धारण को लेकर बातचीत होनी है। यदि पाकिस्तान और आईएमएफ 9 फरवरी तक सहमति पर पहुंचते हैं तो कर्मचारी स्तर के समझौते पर हस्ताक्षर किए जाएंगे। पाकिस्तान के अधिकारियों ने बड़े पैमाने पर व्यापक आर्थिक ढांचे को संशोधित किया है और इसे आईएमएफ के साथ साझा किया है, जिसके तहत वास्तविक जीडीपी ग्रोथ 5 प्रतिशत से घटकर 1.5 से 2 प्रतिशत तक रहने और चालू वित्त वर्ष में महंगाई 12.5 प्रतिशत से बढ़कर 29 प्रतिशत होने का अनुमान है।

नेपाली संसद के उच्च सदन के उपाध्यक्ष पद पर नेपाली कांग्रेस नहीं उतारेगी उम्मीदवार

काठमांडू। नेपाल की संसद के उच्च सदन राष्ट्रीय सभा के उपाध्यक्ष पद पर सत्तारूढ़ गठबंधन की उम्मीदवार उर्मिला अर्याल का निर्विरोध निर्वाचन तय माना जा रहा है। उपाध्यक्ष पद के चुनाव के नामांकन के अंतिम दिन एक नाटकीय घटनाक्रम में मुख्य विपक्षी पार्टी नेपाली कांग्रेस ने अपना उम्मीदवार नहीं उतारने की घोषणा की। नेपाली कांग्रेस ने कहा है कि वह सत्तारूढ़ गठबंधन के उम्मीदवार का ही समर्थन करेगी। उपाध्यक्ष पद के चुनाव पर विचार के लिए नेपाली कांग्रेस के संसदीय दल की सुबह हुई बैठक में यह फैसला लिया गया। बैठक के बाद नेपाली कांग्रेस संसदीय दल के प्रमुख सचेतक रमेश लेखक ने पत्रकारों को बताया कि राष्ट्रपति चुनाव के मद्देनजर पार्टी ने इस समय अपनी उम्मीदवारी से पीछे हटने का फैसला किया है। नेपाली कांग्रेस इस चुनाव में सत्तारूढ़ गठबंधन के उम्मीदवार का समर्थन करेगी। संसद के निचले सदन प्रतिनिधि सभा के स्पीकर और डिप्टी स्पीकर के चुनाव में अपना उम्मीदवार उतारने वाली नेपाली कांग्रेस के राष्ट्रीय सभा के उपाध्यक्ष पद पर सत्तारूढ़ गठबंधन के उम्मीदवार का समर्थन करने के कारण गठबंधन के घटक दलों में एक बार फिर अविश्वास का माहौल बन गया है।

तुर्की और सीरिया में भूकंप से तबाही, भवन गिरे, 15 के मरने की आशंका

-तुर्की में आपातकाल, शापिंग मॉल जमींदोज, दोनों देश के लोग दहशत में, मलबे में लोग फंसे

अंकारा (तुर्की)/दश्मिक (सीरिया)। तुर्की और सीरिया में सोमवार सुबह भूकंप के शक्तिशाली झटके महसूस किए गए। इससे दोनों जगह भारी तबाही हुई है। दर्जनों इमारतें जमींदोज हो गई हैं। तुर्की में एक शापिंग मॉल ताश के पत्तों के महल की तरह भरभराकर जमींदोज हो गया। तुर्की में 15 लोगों के मरने की आशंका जताई गई है। दोनों देशों के लोग विनाश की आशंका से दहशत में हैं।

तुर्की सरकार ने इस प्राकृतिक विपदा की भयावहता को भांपते हुए देश में आपातकाल लगाने की घोषणा की है। बीबीसी तुर्की सेवा

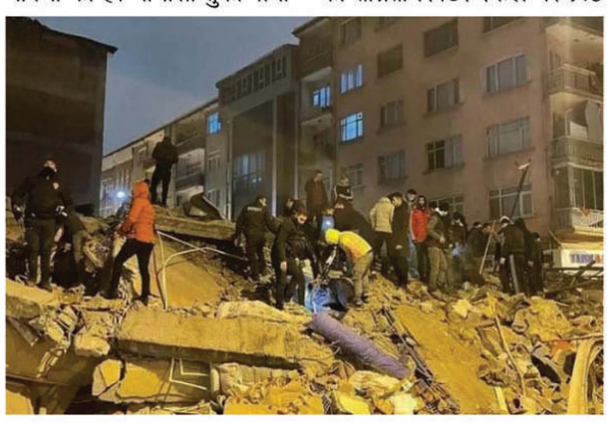

के मुताबिक भूकंप प्रभावित क्षेत्र में आधारभूत संरचना को भारी नुकसान पहुंचा है। अमेरिकी भूगर्भीय सर्वे के मुताबिक भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 7.8 मापी गई है। इस शक्तिशाली तीव्रता का पहला झटका तुर्की-सीरिया सीमा के पास गाजिएनटेप में कहमानमारश के करीब महसूस किया गया। यहां बड़े पैमाने पर जानमाल की क्षति होने की आशंका है। तुर्की सरकार ने भूकंप प्रभावित क्षेत्रों से मिली प्रशासनिक सूचना के आधार पर कहा है कि भूकंप का पहला झटका स्थानीय समयानुसार तड़के 4 बजकर 17 मिनट महसूस किया गया। इसके 15 मिनट बाद भूकंप का दूसरा झटका केंद्रीय तुर्की में महसूस किया गया। सीरियन सिविल डिफेंस ने कहा है कि विद्रोहियों के कब्जे वाले उत्तर पश्चिम सीरिया क्षेत्र में भूकंप से विनाश हुआ है। कई इमारतें पूरी तरह ढह गई हैं। लोग मलबे में दब गए हैं। चौतरफा चीख पुकार मची हुई है।

नेपाल में आरएसपी के तीनों मंत्रियों का प्रचंड सरकार से इस्तीफा

काठमांडू। नेपाल में सत्तारूढ़ गठबंधन की प्रमुख घटक राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (आरएसपी) सरकार से अलग हो गई। पुष्प कमल दहल प्रचंड सरकार में शामिल राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के तीनों मंत्रियों ने रात करीब 9 बजे अपना इस्तीफा प्रधानमंत्री को सौंप दिया। पार्टी के प्रचंड सरकार से अलग होने के फैसले के बाद तीनों मंत्रियों ने प्रधानमंत्री के सरकारी आवास पर पहुंच कर प्रधानमंत्री पुष्पकमल दहल प्रचंडको अपना इस्तीफा सौंपा। इस्तीफा देने वालों में श्रम, रोजगार तथा सामाजिक सुरक्षा मंत्री डोल प्रसाद अर्याल, शिक्षा, विज्ञान तथा प्रविधि मंत्री शिशिर खनाल और स्वास्थ्य एवं जनसंख्या राज्यमन्त्री तोसिमा कार्की शामिल हैं।

Iran के विपक्षी नेता ने प्रदर्शनों के बीच जनमत संग्रह की मांग की

ईरान। लंबे समय से हिरासत में रखे गए ईरान के विपक्षी नेता मीर हुसैन मोसावी ने इस्लामिक गणराज्य का नया संविधान लिखने के लिए राष्ट्रव्यापी जनमत संग्रह कराने की मांग की है। उन्होंने यह मांग ऐसे समय की है जो पूरा देश विरोध प्रदर्शनों से हिला हुआ है। मोसावी ने शनिवार को विपक्षी कलीमी वेबसाइट पर पोस्ट संदेश में कहा कि वह मौजूदा व्यवस्था में विश्वास नहीं करते और अब अंतिम निर्णय का अधिकार सर्वोच्च नेता को देने की व्यवस्था नहीं चलेगी।उल्लेखनीय है कि पिछले साल सितंबर में देश की नैतिक पुलिस द्वारा हिरासत में ली गई कुर्दिश-ईरानी महिला मशा अमीनी की मौत के बाद से प्रदर्शन हो रहे हैं और प्रदर्शनकारियों के खिलाफ सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामनेई के नेतृत्व में कार्रवाई की जा रही है। मोसावी ने नया संविधान लिखने के लिए ''वास्तविक प्रतिनिधित्व'' के साथ संविधान सभा गठित करने की मांग की।

हालांकि, यह तय है कि 80 वर्षीय नेता की मांग पर ईरान की धर्म आधारित सरकार शायद ही गौर करेगी। गौरतलब है कि वर्ष 2009 में विवादित राष्ट्रपति चुनाव हारने के बाद गत कई वर्षों से मोसावी और उनकी पत्नी को नजरबंद रखा गया है। वर्ष 2009 के चुनाव के बाद बड़े पैमाने पर आंदोलन शुरू हुआ था जिसे सुरक्षाबलों ने दबा दिया था। हालांकि, मोसावी ने स्वयं दशकों तक ईरान के धर्म अधारित शासन का समर्थन किया और उसे अपनी सेवाएं दीं।

हांगकांग में लोकतंत्र समर्थक 47 नेताओं पर चलेगा मुकदमा

हांगकांग। हांगकांग में लोकतंत्र का समर्थन करना मुसीबत साबित हो रहा है। हांगकांग प्रशासन ने लोकतंत्र समर्थक 47 नेताओं पर मुकदमा चलाने का फैसला किया है। इन नेताओं को आजावीन कारावास तक की सजा हो सकती है।

सरकार के खिलाफ आवाज बुलंद करने वाले इन नेताओं पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत मुकदमा चलेगा। मुकदमे की प्रक्रिया चार महीने से अधिक समय तक चलने की उम्मीद है। दोषी पाए जाने पर इन नेताओं को आजीवन कारावास तक की सजा हो सकती है। जिन लोगों पर मुकदमा चलाने का फैसला हुआ है, उनमें कानूनी विशेषज्ञ बेनी ताई, पूर्व सांसदों क्लाउडिया मो, एयू नोक-हिन और लेउंग क्वोक-हंग, और लोकतंत्र कार्यकर्ता जोशुआ वोंग और लेस्टर शुम आदि शामिल हैं। इन सभी नेताओं

पर एक अनौपचारिक प्राथमिक चुनाव आयोजित करने का आरोप लगाया गया है। आरोप है कि ये नेता हांगकांग की सरकार गिराने की कोशिश कर रहे थे। जिन नेताओं पर मुकदमा चलना है, उनका कहा है कि विपक्ष की राजनाति करने के कारण उनके खिलाफ मुकदमा चलाया जा रहा है। विपक्षी नेताओं ने इस मुकदमे को पूर्ण स्वांग करार दिया है। लोकतंत्र स्थापित करने की मांग करने वालों के खिलाफ मुकदमा चलाने को अत्याचार बताया जा रहा है।

नेपाल में भारत से आयातित सब्जियां काफी सस्तीं, किसानों ने जताया विरोध

चितवन (नेपाल)। नेपाल में भारत से आयात की गई सस्ती सब्जी को सड़क पर फेंक कर स्थानीय किसानों ने विरोध जताया है। भारत से आयातित सब्जी काफी सस्ती होने के कारण स्थानीय किसानों के द्वारा उत्पादित सब्जी को बाजार में खरीदार नहीं मिलने से नाराजगी जताई है।

चितवन जिले में स्थानीय किसानों ने टमाटर, गोभी, खीरा जैसी सब्जियां सड़क पर फेंक कर अपना विरोध जताया है। प्रदर्शनकारी किसानों ने भारत से सब्जी आयात पर प्रतिबंध लगाने की मांग की है। इन किसानों के मांग के समर्थन में चितवन जिले के भरतपुर नगरपालिका की मेयर रेणु दहल ने भी सरकार से भारत से सब्जी आयात पर तत्काल प्रतिबंध लगाने की मांग की है। नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्पकमल दहल 'प्रचंड' की बेटी रेणु दहल ने कहा कि भारत से आयात होने वाली सब्जी के कारण नेपाली सब्जी को न अच्छा भाव मिल रहा है ना ही बाजार। इसलिए सरकार को तत्काल इस विषय पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

कृषक संघ के अध्यक्ष नवराज बस्नेत ने कहा कि भारत में किसानों को सस्ते दामों पर बीज, खाद सिंचाई सबकुछ उपलब्ध हो जाता है जिस कारण उनकी उत्पादन की लागत बहुत कम होती है, जबकि नेपाल में सरकार की तरफ से इस तरह की कोई

सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाती है। इस कारण यहां सब्जियों का उत्पादन महंगा है। मामले की गंभीरता को देखते हुए प्रधानमंत्री पुष्पकमल दहल ने कृषि मंत्री ज्वाला साह को भारत से आयातित सब्जियों को रोड पर फेंकने की घटना पर तत्काल रिपोर्ट देने को कहा है। कृषि मंत्री ज्वाला साह ने चितवन पहुंच कर किसानों से मुलाकात की और उन्हें ऐसा नहीं करने का आग्रह करते हुए इस बारे में जल्द ही निर्णय लिए जाने का आश्वासन दिया है।

शुरूआती कारोबार में शेयर बाजार पर बिकवाली का दबाव

नई दिल्ली। कमजोर ग्लोबल संकेतों का असर आज सप्ताह के पहले कारोबारी दिन भारतीय शेयर बाजार पर भी नजर आ रहा है। घरेलू शेयर बाजार उतार-चढ़ाव का सामना करते हुए कारोबार की शुरूआत से ही लगातार दबाव में बना हुआ है। बाजार में बिकवाली का दबाव अधिक होने की वजह से शुरूआती 1 घंटे का कारोबार होने के बाद सेंसेक्स 0.34 प्रतिशत की कमजोरी के साथ और निफ्टी 0.46 प्रतिशत की कमजोरी के साथ कारोबार कर रहे थे। पहले 1 घंटे के कारोबार के दौरान स्टॉक मार्केट के दिग्गज शेयरों में से इंडसइंड बैंक, अडाणी पोर्ट्स, आईटीसी, हीरो मोटोकॉर्प और एक्सिस बैंक के शेयर 2.39 प्रतिशत से लेकर 1.07 प्रतिशत तक की मजबूती के साथ कारोबार कर रहे थे।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
Title UPHIN 29506
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

नेपाल सरकार को प्रचंड बहुमत मिलने के 42 दिन में ही गठबंधन टूटने के कगार पर

काठमांडू। नेपाल में जिस नाटकीय तरीके से सत्तारूढ़ गठबंधन बना था, अब उसी नाटकीय तरीके से यह गठबंधन टूटने के कगार पर पहुंच गया है। सरकार को समर्थन कर रही राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी ने अपने मंत्रियों को वापस बुलाने का फैसला लिया है। राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के संसदीय दल और केन्द्रीय सदस्यों की संयुक्त बैठक में सरकार में सहभागी अपने मंत्रियों को वापस बुलाने का फैसला लिया है। लगातार दो दिनों की बैठक में विचार-मंथन के बाद यह फैसला लिया गया है। पार्टी की बैठक के बाद पत्रकारों को संबोधित करते हुए रवि लामिछाने ने कहा कि बैठक में सरकार छोड़ने, लेकिन सरकार को समर्थन जारी रखने का फैसला

किया गया है। नागरिकता विवाद में फंसे पार्टी के अध्यक्ष रवि लामिछाने को सर्वोच्च अदालत से सांसद पद, संसदीय दल के नेता पद, उपप्रधानमंत्री पद और पार्टी अध्यक्ष के पद से बर्खास्त कर दिया था। हालांकि, इस फैसले के 24 घंटे बाद ही रवि लामिछाने ने दूसरी नागरिकता का प्रमाण पत्र हासिल कर लिया था। नया नागरिकता प्रमाण पत्र लेने के बाद से ही रवि लामिछाने फिर से गृहमंत्री बनने के लिए आतुर दिखाई दे रहे थे। उन्होंने कई बार प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल प्रचंड और सत्ता घटक के प्रमुख पार्टी के नेता केपी शर्मा ओली से मिल कर दोबारा मंत्री पद के लिए दबाव भी बनाया। वह बिना सांसद भी 6 महीने तक मंत्री बन पाने की संवैधानिक व्यवस्था के तहत खुद को मंत्री बनाने के लिए दबाव डाल रहे थे, लेकिन प्रधानमंत्री दहल ने अदालत के फैसले का पूर्ण पाठ नहीं आने तक मंत्री बनाने से साफ इनकार कर दिया था। रवि लामिछाने पर पासपोर्ट दुरुपयोग करने, सरकारी कागजात का गलत इस्तेमाल करने का भी मामला बनता है। रवि लामिछाने मंत्री नहीं बनाने पर सरकार छोड़ने की धमकी लगातार दे रहे थे। आज संसदीय दल तथा केन्द्रीय कमेटी की संयुक्त बैठक में सरकार छोड़ने का फैसला लिया गया है। संसद में स्वतंत्र पार्टी के 19 सांसद हैं। हालांकि, सरकार से समर्थन वापस लिए जाने पर भी सरकार के पास बहुमत के लिए पर्याप्त संख्या मौजूद है। माओवादी अध्यक्ष प्रचंड की सरकार को विश्वास मत के दौरान संसद में उपस्थित 270 में से 268 सांसदों का समर्थन मिला था।

ऑस्ट्रिया और इटली में हिमस्खलन में नौ लोगों की मौत

यफ्रैंकफर्ट। ऑस्ट्रिया और इटली में सप्ताहांत में हुए हिमस्खलन में करीब नौ लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने यह जानकारी दी। हादसा ऐसे समय हुआ है, जब भारी बर्फबारी और स्कूल की छुट्टियों के कारण बड़ी संख्या में लोग 'स्की' करने आल्प्स पहुंचे हैं। ऑस्ट्रिया के पूर्वी टिरोल में बर्फ हटाने वाले वाहन का चालक मृत पाया गया।ऑस्ट्रिया के टिरोल क्षेत्र में एक दर्जन से अधिक हिमस्खलन की सूचना मिली है। अधिकारियों ने चेतावनी स्तर पांच की बजाए चार कर दिया है और लोगों से सावधानी बरतने का आग्रह किया। अधिकारियों ने अभी तक ऑस्ट्रिया और इटली में नौ लोगों की मौत की जानकारी दी है।